BAOU
Education for All

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

NAAC ACCREDITED A++ GRADE 3.55/4

बी.ए. (ऑनर्स)

स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (SEC)

HNDSEC-201

पटकथा लेखन

कथा-विचार और कथानक | दृश्य संरचना और दृश्य लेखन | संवाद, समय और स्थान | प्रारुप एवं लघु पटकथा लेखन

स्वाध्याय का उजास

भारत के संविधान के निर्माता भारतरत्न बाबासाहेब आंबेडकर जी की पुण्य स्मृति में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग और डिस्टेंस एजुकेशन काउन्सिल की मान्यता के साथ गुजरात सरकार ने सन् 1994 ई. में अहमदाबाद में गुजरात के एकमात्र मुक्त विश्वविद्यालय डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की स्थापना की. स्थापना के क्रम में यह देश की सातवीं ओपन यूनिवर्सिटी है. गुजरात राज्य के शैक्षिक गतिविधियों को तीव्रता प्रदान करते हुए यूनिवर्सिटी आज सन् 2026 ई. में मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा (ODL) माध्यम से सर्टिफिकेट, डिप्लोमा, स्नातक तथा स्नातकोत्तर स्तर के 83, यू.जी.सी. मानदंडों के तहत पीएच.डी. स्तर के 16, ऑनलाइन माध्यम से 10 और स्वयं (SWAYAM) माध्यम से 07 पाठ्यक्रमों के लिए प्रवेश आमंत्रित कर रही है.

बाबासाहेब आंबेडकर जी की जन्म शताब्दी के अवसर पर गुजरात सरकार ने यूनिवर्सिटी को एक सुगम शांत स्थान उपलब्ध कराया और आधुनिक सुविधाओं से लैस इमारतों के साथ यूनिवर्सिटी का अपना परिसर – 'ज्योतिर्मय परिसर' विकसित करने में सहायता दी. यूनिवर्सिटी प्रबंध मंडल के प्रत्येक सदस्य ने संपूर्ण समर्पण और लगन के साथ इस यूनिवर्सिटी को उस मुकाम पर पहुँचाने में अपना पूरा योगदान दिया है और आगे भी देते रहेंगे.

कहते हैं, शिक्षा वह निवेश है, जो बिना व्यवधान के निरंतर लाभ प्रदान करता है और लोगों के जीवन में गुणवत्ता का आधान करता है, बढ़ाता है. मै स्वामी विवेकानंद जी के शिक्षा दर्शन का मूल यहाँ उल्लेखित करना चाहूँगी:

"हम ऐसी शिक्षा चाहते हैं, जो चरित्र का निर्माण करे, बौद्धिक शक्ति का वर्धन करे, मेधा का विस्तार करे और जिसके माध्यम से प्राप्तकर्ता अपने पैरों पर खड़ा हो सके."

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी अपने विद्यार्थियों को उनके द्वार पर ऐसी ही गुणवत्तापूर्ण कौशल और वास्तविक जीवन संकेंद्रित शिक्षा देने के प्रति कटिबद्ध है. गुजरात राज्य के बृहत्तर जन समुदाय को उच्च शिक्षा उपलब्ध कराने की दिशा में यूनिवर्सिटी सतत कार्यलीन है, जिससे वे आने वाली नित नयी चुनौतियों का सफलतापूर्वक सामना कर सके और अपनी पूरी क्षमता के साथ समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए सन्नद्ध हो सके.

अपने मुख्य आदर्श वाक्य **"स्वाध्यायः परमं तपः"** का अनुसरण करते हुए यूनिवर्सिटी विद्यार्थियों को समृद्ध पाठ्यचर्या उपलब्ध कराने में विश्वास रखती है. इसी आवश्यकता की पूर्ति के क्रम में यूनिवर्सिटी यह नवीन, अधिक सुस्पष्ट पाठ्यसामग्री लेकर उपस्थित हुई है, जिससे विद्यार्थियों की उनके विषय में बेहतर समझ बन सके. इसके माध्यम से यूनिवर्सिटी ने उन विद्यार्थियों के लिए संभावनाओं का विस्तार किया है, जिनके लिए नियमित पारंपरिक शिक्षा पद्धति के द्वार बंद हो चुके हैं. सभी विषयों में विद्यार्थियों की आवश्यकता के अनुरूप स्वाध्याय सामग्री निर्माण के लिए पाठ्यक्रम सलाहकार समिति के सदस्यों से आरंभ करते हुए, स्वाध्याय सामग्री लेखकों, विषय और भाषा परामर्शकों का एक समर्पित दल गठित किया गया है.

आज की डिजिटल दुनिया की गति से एकरूपता रखते हुए यूनिवर्सिटी ने स्वयं का एक डिजिटल मंच – ओमकार-ई (OMKAR-E) विकसित किया है, जो ICT (इनफार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी) के माध्यम से शिक्षा प्रदान करता है. जल्द ही योग, प्राकृतिक चिकित्सा और भारतीय शास्त्रीय नृत्य जैसे विषयों पर ऑनलाइन सर्टिफिकेट और डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी यूनिवर्सिटी के माध्यम से उपलब्ध होंगे, जो वैकल्पिक विषय के रूप में चयनित किये जा सकेंगे.

अपने सभी प्रयासों के साथ डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी ज्ञान और शिक्षा का प्रमुख केंद्र बनने की प्रक्रिया में है और हम आपको इस पवित्र यज्ञ में सम्मिलित होकर डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी के समरस समाज निर्माण के स्वप्न को साकार करने के लिए आमंत्रित करते हैं.

प्रो. (डॉ.) अमी उपाध्याय
कुलपति
डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

बी.ए. (ऑनर्स)
HNDSEC-201 : पटकथा लेखन

प्रधान संपादक :

प्रो. (डॉ.) योगेंद्र पारेख — निदेशक, स्कूल ऑफ़ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

संपादक :

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

सह संपादक :

डॉ. आशीष कुमार सिंह — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

विषय समिति :

प्रो. आलोककुमार गुप्त — (सेवानिवृत) प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.

डॉ. ओमप्रकाश शुक्ल — एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी, गुजरात कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, अहमदाबाद.

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

इकाई लेखक :

डॉ. अर्चना मिश्रा — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. आशीष कुमार सिंह — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. महारुद्रप्रतापसिंह चौहान — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. रश्मि सुरेश सिंह राजपूत — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

डॉ. कृति कुमारी पांडिया — असिस्टेंट प्रोफ़ेसर हिंदी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

परामर्शक :

प्रो. अलोककुमार गुप्त — (सेवानिवृत) प्रोफ़ेसर, हिंदी भाषा एवं साहित्य अध्ययन केंद्र, भाषा, साहित्य एवं सांस्कृतिक अध्ययन संकाय, गुजरात केंद्रीय विश्वविद्यालय, गाँधीनगर.

डॉ. ओमप्रकाश शुक्ल — एसोसिएट प्रोफ़ेसर हिंदी, गुजरात कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, अहमदाबाद.

आवरण सज्जा :

डॉ. गयासुद्दीन अहमद खान — स्टूडियो मैनेजर, चैतन्य स्टूडियो, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

प्रकाशक : कुलसचिव, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद.

मुद्रक : साहित्य मुद्रणालय, अहमदाबाद

ISBN : 978-93-5598-486-9

© मई, 2026 डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी, अहमदाबाद

सर्वाधिकार सुरक्षित : यह स्वाध्याय सामग्री डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी द्वारा मुक्त दूरस्थ शिक्षा के उद्देश्यों को केंद्र में रखते हुए विद्यार्थियों के स्वाध्याय के लिए तैयार की गयी है, जिसका सर्वाधिकार यूनिवर्सिटी के पास सुरक्षित है. इस स्वाध्याय सामग्री का पूर्ण या आंशिक रुप से किसी भी प्रकार डिजिटली या इलेक्ट्रॉनिकली पुनरुत्पादन डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी की लिखित अनुमति के बिना अवैध माना जायेगा.

BAOU
Education
for all

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी

(गुजरात सरकार द्वारा स्थापित)

बी.ए. (ऑनर्स)

कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम

स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (SEC)

HNDSEC-201

पटकथा लेखन

इकाई-1	पटकथा लेखन का परिचय	05-12
इकाई-2	कथा विचार और कथानक	13-28
इकाई-3	चरित्र-निर्माण	29-48
इकाई-4	दृश्य संरचना	49-70
इकाई-5	संवाद लेखन	71-83
इकाई-6	माध्यम और पटकथा	84-91
इकाई-7	व्यावहारिक अभ्यास और प्रस्तुति	92-102

पाठ्यक्रम परिचय

(पाठ्यक्रम आरंभ करने से पहले विद्यार्थी कृपया इसे अवश्य पूरा पढ़ें)

डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर ओपन यूनिवर्सिटी के स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़ में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा निर्देशित चार वर्षीय बी.ए. (ऑनर्स) अध्ययन कार्यक्रम के अंतर्गत यह स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (SEC) प्रस्तुत किया जा रहा है.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (NEP-2020) का उद्देश्य विद्यार्थियों को बहु-विषयक, कौशल-आधारित, रोजगारोन्मुख तथा सृजनात्मक शिक्षा प्रदान करना है, जिससे वे विषयगत ज्ञान के साथ-साथ व्यावहारिक दक्षताओं का भी विकास कर सकें. इसी दृष्टि से स्नातक स्तर पर स्किल एन्हांसमेंट कोर्स (SEC) को पाठ्यक्रम संरचना में विशेष स्थान प्रदान किया गया है.

प्रस्तुत पाठ्यक्रम **'पटकथा लेखन'** विद्यार्थियों को दृश्य-श्रव्य माध्यमों की रचनात्मक एवं तकनिकी प्रक्रियाओं से परिचित कराने के उद्देश्य से तैयार किया गया है. वर्तमान समय में फिल्म, टेलीविज़न, वेब-सीरीज़, वृत्तचित्र तथा अन्य डिजिटल माध्यमों का तीव्र विस्तार हुआ है. इन सभी माध्यमों की सफलता का आधार एक सशक्त और प्रभावशाली पटकथा होती है. यही कारण है कि पटकथा लेखन आज केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम नहीं, बल्कि रचनात्मकता, तकनिकी दक्षता और व्यावसायिक संभावनाओं से जुड़ा एक महत्वपूर्ण कौशल बन चुका है.

इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थी पटकथा की अवधारणा, स्वरूप, तत्त्वों तथा कहानी और पटकथा के अंतर को समझेंगे. वे कथा-विचार और कथानक के विकास, दृश्य संरचना, दृश्य लेखन, समय और स्थान के प्रयोग, दृश्य निरंतरता तथा पटकथा के प्रारूप संबंधी आवश्यक ज्ञान प्राप्त करेंगे. साथ ही, पाठ्यक्रम में लघु पटकथा लेखन तथा मौखिक एवं लिखित प्रस्तुतीकरण जैसे व्यावहारिक अभ्यासों को सम्मिलित किया गया है, जिससे विद्यार्थी स्वयं पटकथा लेखन की प्रक्रिया का अनुभव प्राप्त कर सकें.

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की भावना के अनुरूप यह पाठ्यक्रम :–

- विद्यार्थीयों की रचनात्मक एवं विश्लेषणात्मक क्षमता का विकास करता है.
- दृश्य-श्रव्य माध्यमों की भाषा और संरचना को समझने में सहायता प्रदान करता है.
- मीडिया, फिल्म, टेलीविज़न, वेब-कंटेंट निर्माण तथा संचार उद्योग में रोजगार की संभावनाओं को सुदृढ़ करता है.
- अभिव्यक्ति, प्रस्तुतीकरण और सृजनात्मक लेखन कौशल को विकसित करता है, तथा
- विद्यार्थीयों को समकालीन डिजिटल एवं रचनात्मक उद्योगों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार करता है.

इस प्रकार, 'पटकथा लेखन' पाठ्यक्रम विद्यार्थीयों को केवल पटकथा की सैद्धांतिक समझ ही प्रदान नहीं करता, बल्कि उन्हें विचारों को दृश्य रूप में अभिव्यक्त करने की व्यावहारिक दक्षता भी प्रदान करता है. यह पाठ्यक्रम रचनात्मकता, तकनिकी समझ और व्यावसायिक कौशल का ऐसा समन्वय प्रस्तुत कता है, जो विद्यार्थियों को मीडिया और मनोरंजन जगत की नई संभावनाओं से जोड़ने में सहायक सिद्ध होगा.

इस पाठ्यक्रम में कुल 7 इकाईयाँ हैं. प्रत्येक इकाई का लेखन विशेषज्ञ प्राध्यापकों द्वारा तैयार किया गया है. ये इकाईयाँ वैसी ही हैं, जैसे पारंपरिक विश्वविद्यालयों में होने वाले व्याख्यान. कुछ इकाईयाँ आपको पहली बार पढ़ने में ही सरल और सहज प्रतीत होंगी. जबकि कुछ विषयों को समझने के लिए बार-बार अध्ययन की आवश्यकता हो सकती है. यदि अध्ययन के दौरान आपके मन में कोई प्रश्न उत्पन्न हों, तो उनके उत्तर खोजने का प्रयास अवश्य कीजिए. यही खोज आपकी वास्तविक अध्ययन-यात्रा को सार्थक बनाएगी. जिन प्रश्नों के उत्तर आप स्वयं खोजेंगे, वे आपके ज्ञान को अधिक स्थायी और समृद्ध बनाएँगे.

आपकी इस अध्ययन-यात्रा में विश्वविद्यालय सदैव आपके साथ है. अध्ययन संबंधी किसी भी जिज्ञासा अथवा प्रश्न के लिए आप नीचे दिए गए ईमेल पते पर संपर्क कर सकते हैं.

हिंदी अध्ययन के लिए संपर्क ईमेल आई.डी. : hindi@baou.edu.in

आपके सफल एवं आनंददायक अध्ययन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ!

इकाई 1 पटकथा लेखन का परिचय

रूपरेखा

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 पटकथा का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

1.3.1 पटकथा का अर्थ एवं परिभाषा

1.3.2 पटकथा का स्वरूप

1.4 कहानी और पटकथा में अंतर

1.5 दृश्य माध्यम और पटकथा का महत्त्व

1.6 सारबिंदु

1.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

1.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! आप बी. ए. (ऑनर्स) हिंदी पाठ्यक्रम के द्वितीय सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र की पहली इकाई 'पटकथा लेखन का परिचय' का अध्ययन करने जा रहे हैं. इस इकाई के अध्ययन के अंतर्गत इस विधा की मूलभूत समझ, तकनीकी ज्ञान और रचनात्मक दृष्टि को विकसित करने का प्रयास किया गया है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- पटकथा की मूल अवधारणा से परिचित हो सकेंगे.
- कहानी से पटकथा में रूपांतरण की समझ को विकसित कर सकेंगे.
- दृश्य माध्यमों के लिए लेखन की विशेष समझ विकसित कर सकेंगे.
- तकनीकी ज्ञान जैसे दृश्य, संवाद, कैमरा निर्देश, ध्वनि आदि के उपयोग को समझ सकेंगे.

पटकथा लेखन के व्यावसायिक संभावनाओं से परिचिय हो सकेंगे.

1.2 प्रस्तावना

पटकथा लेखन एक श्रमसाध्य कार्य है. यह आधुनिक दृश्य-श्रव्य माध्यमों- जैसे फिल्म, टेलीविज़न, नाटक और वेब सीरीज आदि का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और आधारभूत अंग है. किसी भी दृश्य प्रस्तुति की सफलत काफी एक तक उसकी पटकथा पर निर्भर करती है, क्योंकि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा तक साधारण विचार या कहानी को व्यवस्थित, प्रभावशाली और जीवंत रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है. पटकथा लेखन केवल साहित्यिक सृजन नहीं है, बल्कि यह एक रचनात्मक और तकनीकी प्रक्रिया का समन्वय है. इसमें लेखक को न केवल कहानी की कल्पना करनी होती है, बल्कि उसे इस प्रकार ढालना होत है कि वह पर्दे पर स्पष्ट रूप से दिखाई और सुनाई दे सके. इसके अंतर्गत दृश्य-विन्यास, पात्र-निर्माण, संवाद लेखन, ध्वनि, संगीत और कैमरा निर्देश जैसे अनेक तत्वों का समावेश होता है.

प्रवर्तमान समय में, जब डिजिटल मीडिया और मनोरंजन उद्योग का तीव्र विकास हो

रहा है, पटकथा लेखन का महत्त्व और भी बढ़ गया है. यह न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि समाज के विचारों, समस्याओं और संवेदनाओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त करने का माध्यम भी है. अतः पटकथा लेखन का अध्ययन हमें न केवल इस विधा की तकनीकी समझ प्रदान करता है, बल्कि हमारी रचनात्मकता, विश्लेषण क्षमता और अभिव्यक्ति कौशल को भी विकसित करता है. यही कारण है कि आज के युग में पटकथा लेखन का ज्ञान अत्यंत आवश्यक और उपयोगी माना जाता है.

1.3 पटकथा का अर्थ, परिभाषा और स्वरूप

1.3.1 पटकथा का अर्थ एवं परिभाषा

पटकथा क्या है? इस पर विचार करने से पूर्व इसके शाब्दिक अर्थ को समझ लेना आवश्यक है. पटकथा अंग्रेजी शब्द 'स्क्रीन प्ले' का अनुवाद है. वहीं पटकथा के शाब्दिक अर्थ की बात करें तो यह दो शब्दों के मेल से बना है 'पट' और 'कथा'. कथा का मतलब आप सभी जानते हैं कहानी और पट का अर्थ होता है पर्दा. अर्थात तेसी कथा जो पर्दे पर दिखाई जाए चाहे वह पर्दा बड़ा हो या छोटा यानी कि सिनेमा और टेलीविजन दोनों ही माध्यमों के लिए बनने वाली फिल्म व धारावाहिक आदि का मूल आधार पटकथा ही होती है. फिल्म या टेलीविजन के पर्दे पर कथात्मक कार्यक्रम बनाए जाने के लिए एक व्यापक रुपरेखा तैयार की जाती है. इस रुपरेखा से अनुमान लगाया जा सकते है कि छायांकन और संपादन के बाद - चलचित्र पर्दे पर कैसे दिखाई देंगे तथा उनके माध्यम से कहानी कैसे सामने आयेगी. पटकथा, कथा का स्वरुप है जिसके आधार पर निर्देशक बनाए जाने वाली फिल्म के भावी स्वरुप का अनुमान लगा सकता है. निर्देशक फिल्म की गति, उतर- चढ़ाव, द्वंद्व और अंतर्द्वद्व की योजना को समझ सकता है. वह चरित्र चित्रण के सभी पक्षों की जानकारी संयोजित कर सकता है. पटकथा के माध्यम से दृश्य तथा संवादों की जानकारी मिलती है. वह स्थान निर्धारित होते हैं जहाँ शूटिंग होना है. संपादन के मुख्य बिंदु भी पटकथा निर्धारित करती है. पटकथा के माध्यम से अभिनेत फिल्म में अपनी भूमिका समझते हैं तथा उन्हें विभिन्न दृश्यों की जानकारी मिलती है. पटकथा से ही उन्हें संवादों की पूरी जानकारी प्राप्त होती है. पटकथा के आधार पर कैमरामैन, साउंड रिकॉर्डिस्ट तथा तकनीकी टीम को अपनी भूमिका और जिम्मेदारियां समझने का अवसर मिलता है. पटकथा के आधार पर शूटिंग शेड्यूल बनाया जाता है. पटकथा का आधार कहानी है. कहानी से ही पटकथा बनाने का काम शुरु होता है.

पटकथा की मूल इकाई होती है - दृश्य. एक स्थान पर एक ही समय में लगातार चल रहे कार्य व्यापार के आधार पर एक दृश्य निर्मित होते है. इन तीनों में से किसी भी एक के बदलने से दृश्य भी बदल जाता है. सबसे बुनियादी बात यह है की पटकथा अनिश्चित वर्तमान काल में लिखी जाती है. कहने का अर्थ यह है कि पटकथा लिखते समय आपको अपने मन की आंखों से सारी घटना अनिश्चित वर्तमान काल में घटती हुई देखनी होगी और उसी रुप में उसे कागज पर उतरते जाना होगा. पटकथा भी किसी नाटक की तरह कथानक को दृश्य में तोड़कर पेश करती है. जहाँ घटनास्थल बदलते ही दृश्य भी बदल जाते हैं. कई बार पटकथा में एक ही घटनास्थल पर कई कई दृश्य हो सकते हैं.

इस प्रकार आप पहले अपने मन के पर्दे पर घटनाओं को होते हुए देखिए और पात्रों को बोलते हुए सुनिए फिर कागज पर उतरते जाइए कि क्या घटना घट रही है और कौन पात्र क्या बोल रहा है. घटना की नाटकीयता को उभारते जाइत या मानकर चलित की जैसे नानी से कहानी सुनता हुआ बच्चा हर दिलचस्प मोड़ के बाद यह पूछता है कि फिर क्या

हुआ? इस तरह बहुत से जिज्ञासु दर्शक बैठे हैं, जो आपसे जानना चाहते हैं कि फिर क्या होता है? इस प्रश्न का जवाब देते रहने से नए-नए सीक्वेंस शुरू होंगे और यह सीक्वेंस आपका 'स्क्रीन प्ले' यानी आपकी पटकथा तैयार कर देंगे. मुख्य रूप से पटकथा और कुछ नहीं वह कथा है जो पर्दे पर दिखाई जाने के लिए लिखी गई है. यहाँ हम पटकथा के लिए दिये गये कुछ महत्त्वपूर्ण साहित्यकारों के विचार को पारिभाषिक रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं :-

- प्रसिद्ध साहित्यकार, पटकथा लेखक एवं पत्रकार मनोहर श्याम जोशी लिखते हैं – पटकथा कुछ और नहीं कैमरे से फिल्म के परदे पर दिखाए जाने के लिए लिखी हुई कथा है.
- असग़र वजाहत के अनुसार – फिल्म और टीवी कार्यक्रम के आधार लेखन को पटकथा कहते हैं.
- अमेरिकी लेखक और पटकथा विशेषज्ञ जिन्हें हॉलीवुड में 'स्क्रीनराइटिंग गुरु' के रूप में जाना जाता है, उनके अनुसार - पटकथा एक ऐसी कहानी है जो चित्रों, संवादों और विवरणों के माध्यम से संरचित रूप में प्रस्तुत की जाती है, और जिसे फिल्म के लिए विशेष रूप से लिखा जाता है.
- दुनिया के सबसे प्रसिद्ध पटकथा लेखक, शिक्षक और कहानी सलाहकार रॉबर्ट मैकी, जिनकी पुस्तक "Story: Substance, Structure, Style, and the Principles of Screenwriting" को पटकथा लेखन के लिए 'बाइबिल' माना जाता है, पटकथा के संदर्भ में लिखते हैं – पटकथा वह माध्यम है जिसमें कहानी को दृश्य, घटनाओं और पात्रों की क्रियाओं के जरिए व्यक्त किया जाता है, तकि वह दर्शकों पर प्रभाव डाले.

1.3.2 पटकथा का स्वरूप

पटकथा के अर्थ को समझने के बाद अब आवश्यक है कि इसके स्वरूप को ठीक से समझा जाये अर्थात् पटकथा की संरचना या ढ़ाँचा किस तरह का हो? पटकथा का स्वरूप एक संगठित, तकनीकी और क्रमबद्ध लेखन शैली होता है, जिसके माध्यम से किसी कहानी को दृश्य और श्रव्य रूप में प्रस्तुत करने योग्य बनाया जाता है. फिल्म या टी.वी. की पटकथा की संरचना नाटक की संरचना से बहुत मिलती है. अंग्रेजी में तो इसे कहते ही 'स्क्रीन प्ले' है. नाटक की तरह ही यहाँ भी पात्र - चरित्र होते हैं, नायक-प्रतिनायक होते हैं, अलग-अलग घटनास्थल होते हैं, दृश्य होते हैं, कहानी का क्रमिक विकास होता है, द्वंद्व, टकराहट और फिर समाधान. यह सब कुछ पटकथा के भी आवश्यक तत्त्व हैं. इसका मुख्य उद्देश्य यह सुनिश्चित करना होता है कि जो कुछ लिखा गया है, वह पर्दे पर स्पष्ट रूप से दिखाई और सुनाई दे. पटकथा का स्वरूप सामान्यतः निम्न प्रमुख तत्वों से मिलकर बनता है :-

- **दृश्य शीर्षक –** दृश्य शीर्षक पटकथा का वह महत्त्वपूर्ण भाग है जो हर नए दृश्य की शुरुआत में लिखा जाता है. यह संक्षेप में बताते है कि दृश्य कहाँ और कब घटित हो रहा है. इससे निर्देशक, अभिनेता और पूरी टीम को तुरंत स्थिति समझ में आ जाती है. इसके अंतर्गत मुख्यतः तीन घटक शामिल हैं -

(क) **INT. / EXT. (Interior / Exterior) –** घटना खुले में घट रही है या किसी बाहर जगह में अर्थात् अंदर या बाहर. आमतौर पर यह सूचनाएँ अंग्रेजी में लिखी जाती है और अंदर या बाहर के लिए अंग्रेजी शब्दों- इंटीरियर या एक्सटीरियर के तीन शुरुआती अक्षरों का इस्तेमाल किया जाता है, मतलब INT. या EXT.

INT. = अंदर का दृश्य (कमरा, घर, ऑफिस)

EXT. = बाहर का दृश्य (सड़क, पार्क, मैदान)

(ख) **घटनास्थल** - दृश्य का सटीक स्थान

(ग) **घटना का समय** - दिन, रात, सुबह, शाम

- **दृश्य-वर्णन** - इसमें दृश्य में हो रही गतिविधियों, वातावरण और पात्रों की क्रियाओं का संक्षिप्त और स्पष्ट वर्णन होता है. इसमें केवल वही बातें लिखी जाती हैं जो दर्शक देख या सुन सकते हैं.
- **पात्र** - पटकथा में आने वाले सभी पात्रों का उल्लेख किया जाता है. पहली बार प्रवेश के समय उनका संक्षिप्त परिचय भी दिया जाता है, जिससे उनकी भूमिका स्पष्ट हो सके.
- **संवाद** - पात्रों के बीच होने वाली बात चीत को संवाद कहते हैं. ये कहानी को आगे बढ़ाने और भावनाओं को व्यक्त करने का मुख्य माध्यम होते हैं.
- **कैमरा निर्देश** - इसमें बताया जाता है कि कैमरा किस प्रकार काम करेगा, जैसे क्लोज़-अप, लॉन्ग शॉट, पैन, ़जूम आदि. यह तकनीकी टीम के लिए मार्गदर्शन प्रदान करता है.
- **ध्वनि और संगीत** - पटकथा में ध्वनि प्रभाव और पृष्ठभूमि संगीत का भी उल्लेम किया जात है, जिससे दृश्य का प्रभाव बढ़त है.
- **दृश्य परिवर्तन** - एक दृश्य से दूसरे दृश्य में जाने के तरीके को दृश्य परिवर्तन अथवा ट्रांज़िशन कहते हैं, जैसे- दृश्य परिवर्तन (कट टू), धीरे-धीरे दृश्य प्रकट होता है (फेड इन), धीरे-धीरे दृश्य लुप्त होता है (फेड आउट) आदि.

1.4 कहानी और पटकथा में अंतर

कथा या कहानी किसी पटकथा का आरंभिक तत्त्व है. किसी भी फिल्म यूनिट या धारावाहिक बनाने वाली कंपनी को पटकथा तैयार करने के लिए सबसे पहले जो चीज चाहित होती है, वह है- कथा. जब कथा ही नहीं होगी तब पटकथा कैसे बनेगी. परंतु इस सृजन प्रक्रिया में कथा की परिणति साहित्यकार की अपनी आंतरिक अभिप्रेरणा का फल होती है. हालाँकि सृजन कार्य स्वयं के सुख के साथ समाजहित के उद्देश्य को पूरा करता है, परंतु इन्हीं कहानियों का जब फिल्मी रूपांतर होता है तब उसका मूल रूप बदल जाता है. तक कहानी की पटकथा लिखना और फिर संवाद स्वरूप में उसे ढालना व्यावसायिक नजरित को ध्यान में रखते हुत की गई तक कृत्रिम प्रक्रिया है. इसे कृत्रिम प्रक्रिया इसलिए कहा जा रहा है क्योंकि जैसे साहित्यकार कोई रचना अंत:प्रेरणा से लिखता है, वैसी प्रक्रिया पटकथा लेखन में नहीं होती है, उसे जानबूझकर कथा को लक्ष्य तक लेकर जाना पड़ता है.

पटकथा लेखक के सामने कई बार ऐसी चुनौती भी आती है कि निर्माताओं द्वारा बनाई जा रही फिल्में चाहे वह किसी छोटी कहानी पर बनी हो या किसी बड़े उपन्यास पर, उसे चुनिंदा प्रसंगों के साथ एक समान आकार में बनाना होता है, तकि वह दो या ढाई घंटे की पूरी फिल्म बन सके. अर्थात् यह कार्य पटकथा लेखक का कौशल, मेहनत और कलाकारी भरा होत है, जिसके आधार पर वह पटकथा में पूरा उपन्यास समेट सकता है और किसी छोटी कहानी में कोई भी अतिरिक्त प्रसंग जोड़े बिना उसको पूरी फिल्म में रूपांतरित सकता है. उदाहरण के तौर पर हम फणीश्वरनाथ 'रेणु' की ढाई पन्ने की कहानी मारे गए

गुलफाम पर बनी फिल्म 'तीसरी कसम' (1966) और रणजीत देसाई के उपन्यास राजा रविवर्मा पर बनी फिल्म 'रंगरसिया' (2014) को देख सकते हैं. दोनों का रूपांतरण पटकथा के रूप में हुआ है. अर्थात् एक पटकथा का आकार कहानी से बना है और दूसरी पटकथा का आकार व्यापक उपन्यास के धरातल पर है. यह एक कुशल पटकथा लेखक की कला है. मूल रूप से कहानी और पटकथा दोनों ही रचनात्मक लेखन के रूप हैं, लेकिन उनका उद्देश्य, स्वरूप और प्रस्तुति अलग-अलग होते हैं.

कहानी एक साहित्यिक विधा है, जो केवल लिखित रूप में होती है जबकि पटकथा दृश्य-श्रव्य माध्यम के लिए लिखी जाती है. वहीं कहानी पढ़ने-सुनने और कल्पना के उद्देश्य से लिखी जाती है जबकि पटकथा फिल्म, नाटक या टी.वी. कार्यक्रम बनाने के लिए लिखी जाती है. भाषा के अंतर की बात करें ते कहानी की भाषा वर्णनात्मक, भावनात्मक और विस्तारपूर्ण होती है जबकि पटकथा की भाषा संक्षिप्त, स्पष्ट और तकनीकी होती है. कहानी में लेखक भावनाओं, विचारों और वातवरण का विस्तार से वर्णन करता है जबकि पटकथा में केवल वही लिखा जाता है जो पर्दे पर दिखाया या सुना जा सके. संवाद योजना की दृष्टि से कहानी के संवाद सीमित होते हैं वहीं पटकथा में संवाद मुख्य होता है और कथा को आगे बढ़ाते है. तकनीकी दृष्टि से भी कहानी और संवाद के तत्वों में काफी अंतर है. कहानी में कैमरा, ध्वनि या प्रकाश का उल्लेख नहीं होता. जबकि पटकथा में कैमरा निर्देश, ध्वनि, संगीत, ट्रांज़िशन आदि शामिल होते हैं. कहानी में पाठक अपनी-अपनी कल्पना से दृश्य बनाता है जबकि पटकथा में दर्शक सीधे दृश्य को देखा और सुना सकता है.

1.5 दृश्य माध्यम और पटकथा का महत्त्व

दृश्य माध्यम वे साधन हैं जिनके द्वारा हम देखकर और सुनकर सूचना, ज्ञान और मनोरंजन का लाभ उठा सकते हैं. जैसे-फिल्म, टेलीविज़न, नाटक, वेब सीरीज आदि. इन माध्यमों का बहुत गहरा प्रभाव होता है क्योंकि ये सीधे दर्शकों की भावनाओं और अनुभवों को छू जाते हैं. ऐसे माध्यमों में पटकथा का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि वही पूरी प्रस्तुति की आधारशिला होती है. पटकथा के माध्यम से यह तय होता है कि कहानी किस प्रकार दृश्य और ध्वनि के साथ प्रस्तुत की जाएगी. यह निर्देशक, अभिनेता और तकनीकी टीम को स्पष्ट दिशा प्रदान करती है, जिससे कार्य में समन्वय बना रहता है. इसके साथ ही, पटकथा कैमरा, ध्वनि, प्रकाश और दृश्य परिवर्तन जैसे तकनीकी पहलुओं का मार्गदर्शन करती है, जिससे प्रस्तुति प्रभावशाली बनती है. एक सुव्यवस्थित पटकथा समय और लागत को नियंत्रित करने में भी सहायक होती है. सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह है कि अच्छी पटकथा ही किसी फिल्म या कार्यक्रम को रोचक और प्रभावशाली बनाती है, इसलित दृश्य माध्यमों में पटकथा का महत्त्व अत्यंत आवश्यक माना जाता है.

1.6 सारबिंदु

पटकथा लेखन दृश्य-श्रव्य माध्यमों का मूल आधार है, जिसके माध्यम से किसी भी कहानी, विचार या घटना को जीवंत और प्रभावशाली रूप में प्रस्तुत किया जाता है. यह केवल साहित्यिक लेखन नहीं, बल्कि एक सुव्यवस्थित तकनीकी प्रक्रिया है, जिसमें दृश्य, पात्र, संवाद, क्रियाएँ, ध्वनि और कैमरा निर्देश जैसे तत्त्वों का समन्वय होता है. जहाँ कहानी पाठक की कल्पना पर आधारित होती है, वहीं पटकथा उसी कहानी को वास्तविक और दृश्य रूप देकर दर्शकों के सामने प्रस्तुत करती है.

आज के युग में फिल्म, टेलीविज़न, नाटक और वेब सीरीज़ जैसे दृश्य माध्यम संचार और मनोरंजन के अत्यंत सशक्त साधन बन चुके हैं — और इनकी सफलत का मुख्य आधार

एक सुदृढ़ पटकथा होती है. पटकथा न केवल संपूर्ण निर्माण प्रक्रिया का मार्गदर्शन करती है, बल्कि निर्देशक, अभिनेता और तकनीकी टीम के बीच समन्वय स्थापित कर प्रस्तुति को सुसंगठित और प्रभावशाली बनाती है. इसके साथ ही, यह समय और संसाधनों के उचित उपयोग में भी सहायक होती है. अतः कहा जा सकता है कि पटकथा लेखन रचनात्मकता और तकनीकी कौशल का सुंदर संगम है, जो न केवल कहानी को जीवंत बनाता है, बल्कि दर्शकों पर गहरा और स्थायी प्रभाव छोड़ता है.

1.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

(क) निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए.

1. पटकथा लेखन क्या है? इसके स्वरूप तथा आधुनिक दृश्य-श्रव्य माध्यमों में इसके महत्त्व का विस्तार से वर्णन कीजिए.
2. पटकथा की परिभाषा विभिन्न साहित्यकारों के मतों के आधार पर स्पष्ट कीजिए तथा इसके प्रमुख तत्त्वों का विवेचन कीजिए.
3. कहानी और पटकथा में अंतर स्पष्ट करते हुए उदाहरण सहित बताइए कि किस प्रकार एक कहानी को पटकथा में रूपांतरित किया जाता है.
4. दृश्य माध्यमों में पटकथा की भूमिका और महत्त्व का विस्तार से वर्णन कीजिए. साथ ही बताइए कि यह निर्माण प्रक्रिया को किस प्रकार प्रभावित करती है.

(ख) टिप्पणी लिखिए.

1. पटकथा का शाब्दिक अर्थ स्पष्ट कीजिए.
2. पटकथा की मूल इकाई दृश्य हैइस कथन पर टिप्पणी कीजिए.
3. दृश्य शीर्षक क्या होता है? इसके घटकों का संक्षिप्त वर्णन कीजिए.
4. पटकथा में संवाद की भूमिका पर टिप्पणी कीजिए.
5. कैमरा निर्देश और ध्वनि-संगीत का पटकथा में क्या महत्त्व है?
6. पटकथा रचनात्मक और तकनीकी प्रक्रिया का समन्वय है - स्पष्ट कीजिए.

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

1. पटकथा शब्द किस अंग्रेजी शब्द का अनुवाद है?

   (A) कहानी   (B) स्क्रीनप्ले

   (C) स्क्रिप्ट   (D) संवाद

   उत्तर : (B) स्क्रीनप्ले

2. पटकथा की मूल इकाई क्या होती है?

   (A) पात्र   (B) संवाद

   (C) दृश्य   (D) कथानक

   उत्तर : (C) दृश्य

3. INT. का अर्थ क्या होत है?

   (A) बाहर का दृश्य   (B) अंदर का दृश्य

   (C) समय   (D) कैमरा तंगल

उत्तर : (B) **अंदर का दृश्य**

4. EXT. का प्रयोग किसके लिए किया जाता है?

(A) अंदर का दृश्य (B) संवाद

(C) बाहर का दृश्य (D) ध्वनि

उत्तर : **(C) बाहर का दृश्य**

5. पटकथा किस काल में लिखी जाती है?

(A) भूतकाल (B) भविष्यकाल

(C) अनिश्चित वर्तमान काल (D) पूर्ण वर्तमान काल

उत्तर : **(C) अनिश्चित वर्तमान काल**

6. निम्न में से कौन पटकथा का तत्त्व नहीं है?

(A) कैमरा निर्देश (B) ध्वनि

(C) छंद (D) संवाद

उत्तर : **(C) छंद**

7. पटकथा का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(A) केवल पढ़ने के लिखए (B) केवल मनोरंजन के लित

(C) दृश्य-श्रव्य रूप में प्रस्तुति (D) कवित लेखन

उत्तर : **(C) दृश्य-श्रव्य रूप में प्रस्तुति**

8. 'तीसरी कसम' किस कहानी पर आधारित है?

(A) गोदान (B) मारे गए गुलफाम

(C) गबन (D) कफन

उत्तर : (B) **मारे गत गुलफाम**

9. पटकथा में कट टू का संबंध किससे है?

(A) संवाद (B) दृश्य परिवर्तन

(C) पात्र (D) संगीत

उत्तर : **(B) दृश्य परिवर्तन**

10. पटकथा किसके लिए लिखी जाती है?

(A) केवल पाठकों के लिए (B) केवल लेखकों के लिए

(C) फिल्म/टीवी/नाटक निर्माण के लिए (D) केवल शिक्षा के लिए

उत्तर : **(C) फिल्म/टीवी/नाटक निर्माण के लिए**

1.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- पटकथा लेखन तक परिचय : लेखक - मनोहर श्याम जोशी; प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली

- आइडिया से पर्दे तक : कैसे सोचता है फिल्म का लेखक?; लेखक - राजकुमारसिंह, सत्यांशुसिंह; प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- व्यावहारिक निर्देशिका : पटकथा लेखन; लेखक - असग़र वजाहत; प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- https://en.wikipedia.org/wiki/Screenplay(book)
- https://henrybondstoryanalyst.wordpress.com/2013/09/28/book-review-story-by-robert-mckee/

इकाई 2 पटकथा लेखन : कथा विचार और कथानक

रूपरेखा

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 पटकथा लेखन : अर्थ एवं अभिप्राय

2.3.1 पटकथा लेखन के सिद्धांत

2.3.2 पटकथा लेखन का महत्व

2.3.3 पटकथा लेखन की विशेषताएँ

2.3.4 पटकथा लेखन के तत्त्व

2.4 कथा विचार का विस्तार और उसके तत्त्व

2.5 कथा विचार के स्रोत

2.6 कथानक का महत्व

2.7 कथा विचार और कथानक में अंतर

2.8 पटकथा लेखन की प्रक्रिया

2.9 पटकथा लेखन की शैलियाँ

2.10 गोदान धारावाहिक का पटकथा का अंश

2.11 सारबिंदु

2.12 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

2.13 उपयोगी पाठ्यसामग्री

2.1 उद्देश्य

प्रस्तुत इकाई-2 'पटकथा लेखन : कथा विचार और कथानक फिल्म, टेलीविजन धारावाहिक या दृश्य माध्यमों के लिए एक कहानी अथवाविचार को दर्शाने के लिए लिखा जाता है. पटकथा लेखन एक मार्गदर्शक के समान किसी कथा या विचार को निर्देशक के निर्देशन तथा अभिनेता के अभिनय द्वारा जीवंत बनाता है. पटकथा लेखन में अभिनेता के संवादों द्वारा ऐसी जीवंतता उत्पन्न की जाती है कि वह कहानी या विस्तार दर्शकों के सम्मुख अपने मूर्त रुप में जागृत हो उठती है. पटकथा लेखन किसी कहानी या विचार का दृश्यमान होना है, जो दर्शकों को भिन्न-भिन्न सामाजिक-राजनैतिक या सांस्कृतिक आदि पक्षों से संबंधित स्रोतना प्रदान करता है. पटकथा लेखन पात्रों व कथानक के विकास, दर्शकों में प्रभावोत्पादकता, संवादों के कुशल प्रयोग तथा निर्देशक व अभिनय आदि की दृष्टि से कहानी या विचार का प्रमुख कारक तत्त्व है, इसके माध्यम से तकनीक, ब्लूप्रिंट (Blue Print), सिनेमैटोग्राफर तथा लाइट-कैमरा आदि का भी यथावसर प्रयोग निहित होता है.

प्रस्तुत इकाई द्वारा पटकथा लेखन के अर्थ व अभिप्राय, उसकी आवश्यकता-महत्व, कथा विचार व कथानक के अंतर्संबंध, भेद, पटकथा लेखन में इनकी भूमिका पटकथा लेखन की प्रक्रिया तथा भाषा व शब्दावलियों का परिचय दिया गया है. जिसके अध्ययन उपरांत छात्र पटकथा लेखन से अवगत हो पायेंगे. प्रस्तुत इकाई के अध्ययन उपरांत छात्र निम्नलिखित तथ्यों से लाभान्वित हो पायेंगे-

- पटकथा लेखन के ज्ञान से छात्र सिनेमा-धारावाहिक आदि दृश्य विद्युत् संचार माध्यमों में रोज़गार के अवसर तलाश पाएँगे.
- पटकथा या स्क्रिप्ट लेखन से अवगत हो पाएँगे. इससे छात्र विस्तार या कल्पना को सिनेमा जगत में किस प्रकार साकार रुप प्रदान करते हैं, इसे ज्ञात कर पाएँगे.
- छात्रों में रचनात्मक कौशल को लेकर वृद्धि होगी.
- पटकथा लेखन द्वारा छात्र सिनेमा जगत में तकनीक तथा व्यवसायिक व्यवहार्यता से अवगत हो पाएँगे.
- भाषा एवं शब्दावली के चयन तथा संवादों की भूमिका व इनकी आवश्यकता से छात्र अवगत हो पाएँगे.
- निर्देशन, अभिनय, कैमरामैन, संवाद योजना-लेखन तथा सन्देश-चेतना के पटकथा लेखन में प्राकट्य को सरलता से समझ पाएँगे.
- फिल्म तथा धारावाहिकों में पटकथा लेखन की आवश्यकता तथा उसके महत्व को बता पाएँगें.
- पटकथा लेखन के आधारभूत सिद्धांतों को बता पाएँगे.
- पटकथा लेखन की रचना प्रक्रिया व उसकी विशेषताओं से अवगत हो पाएँगे.
- पटकथा लेखन में कथा विचार व कथानक की आवश्यकता व भूमिका का उल्लेख कर पाएँगे.

2.2 प्रस्तावना

पटकथा लेखन दृश्य माध्यम हेतु महत्वपूर्ण आधार तत्त्व है. एक अच्छी फिल्म या धारावाहिक बनाने के लिए एक अच्छी व सुदृढ़ पटकथा की आवश्यकता होती है.कोई भी फिल्म या धारावहिक कितनी ही बेहतरीन कहानी या विस्तार पर क्यों ना बनाई गई हो किन्तु एक कमज़ोर और आधारहीन पटकथा के कारण वह दर्शकों को आकर्षित नहीं कर सकती है.

एक फिल्म, धारावाहिक या नाटक कई सामूहिक तकनीक व कौशल के सफल प्रयोग के कारण कामयाब बनती है. फलतः तकनीकी उपकरणों, निर्देशन, अभिनय, संवाद, छायांकन तथा संगीत आदि सभी का समावेश एक पटकथा में आवश्यक है. यह पटकथा ही उस फिल्म या धारावाहिक की आत्मा मानी जा सकती है जो लेखक के अमूर्त विस्तार से पटकथा के मूर्त रूप में दर्शकों के समक्ष साकार होता है. अतः पटकथा लेखन का गंभीर ज्ञान फिल्म या धारावाहिक बनाने के लिए अति आवश्यक है. तभी एक अच्छी कहानी तथा लेखक का विचार अपने अमूर्त आयाम से निकलकर कथानक के द्वारा फिल्म या धारावाहिकों के विचार, चरमोत्कर्ष तथा निष्कर्ष को दर्शा पाएगी तथा इसी आधार पर एक सफल पटकथा लेखन अस्तित्व में आ पायेगा.

विभिन्न सफल उत्कृष्ट धारावाहिक-फ़िल्मों 'पाथेर पांचाली', 'तमस', 'तीसरी कसम' या टेलीविजन धारावाहिक बुनियाद, हम लोग, चन्द्रकान्ता आदि ने एक अच्छे पटकथा लेखन के कारण ही दर्शकों को आकृष्ट कर पायें हैं तथा अपने उद्देश्य को सरल-सहज रूप में दृश्य माध्यम द्वारा आम जनमानस तक पहुँच पायें हैं.

प्रस्तुत इकाई में पटकथा लेखन को सोदाहरण समझने के लिए प्रेमचंद कृत 'गोदान' उपन्यास की पटकथा का अंश उद्धृत किया गया है। जिससे छात्र सरलता से पटकथा लेखन के तत्त्वों, विशेषताओं, महत्व, सिद्धांतों तथा कथा विस्तार के स्रोतों व कथानक से इनके भेद को समझकर पटकथा लेखन हेतु प्रेरित हो पाएँगे.

2.3 पटकथा लेखन : अर्थ एवं अभिप्राय

पटकथा का शाब्दिक अर्थ पर्दे पर कहानी दर्शाना है. जिसका अंग्रेजी में अर्थ सिनेरियो (scenario) तथा स्क्रीनप्ले (screen play) बताया जाता है. सिनेमा जगत में सिनेरियो का शाब्दिक अर्थ दृश्य विस्तार तथा स्क्रीन प्ले का अर्थ पर्दे पर दृश्य चलाना है. शाब्दिक अर्थ परिप्रेक्ष्य में अंग्रेजी के ये दोनों ही शब्द प्रासंगिक हैं यद्यपि स्क्रीन प्ले को वर्तमान सिनेरियो की तुलना अधिक चलायमान अवस्था में प्रचलित शब्द अनुभव किया जाता है अतः पटकथा का अर्थ पर्दे पर किसी कहानी का दृश्यांकन या फिल्माना है. पटकथा लेखक के मन में किसी घटना-प्रसंग को लेकर उठे एक विचार को मूर्त अवस्था तक ले जाने का दृश्य माध्यम है. जिसके लिए पटकथा लेखन में पात्रों के संवादों द्वारा कथा विस्तार किया जाता है तथा दृश्यों में कहानी के कथानक को विस्तृत रूप में वर्गीकृत किया जाता है. पटकथा लेखन लेखक के विचार से कहानी के पूर्ण हो जाने के बाद की प्रक्रिया है. जिसमें लेखक उस कहानी को दृश्य रूप में प्रकट करने हेतु पटकथा लेखन का कार्य करता है.

प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक तपन सिन्हा के कथनानुसार 'पटकथा चलचित्र की बुनियाद है.' जिस प्रकार कथानक से कहानी और उपन्यास का विकास होता है, उसी प्रकार पटकथा के माध्यम से चलचित्र का विकास होता है. इसी प्रकार डॉ. महेंद्र मित्तल पटकथा लेखन का आशय व्यक्त करते हुए कहते हैं, दृश्य-बिंबों के माध्यम से रचित कथा, पटकथा कहलाती है और पटकथा लेखन को ही चित्र लेखन कहा जाता है. अतः पटकथा लेखन किसी घटना-प्रसंग या विषयादि के वैचारिक प्रस्फुटन से एक सुदृढ़ कहानी के अस्तित्व में आने के पश्चात् उसके चलचित्र पर फिल्माए जाने से पहले शॉट या दृश्यों में बंधे पात्रों के संवादों की विस्तृत श्रृंखला है. जिसमें विभिन्न दृश्यों के कथानक या प्लाट परस्पर सिक्वेंस यानी अनुक्रम में कथा विस्तार करते हैं. यहाँ पटकथा लेखन में सूत्र रूप में अभिप्राय शॉट्स (लघ दृश्य) +सीन (दृश्य)+सिक्वेंस (अनुक्रम) = पटकथा है.

किसी भी फिल्म या धारावाहिक की पटकथा निर्देशक, छायाकार, ध्वनि-संयोजन, प्रकाश प्रबंधक, संवाद तथा पात्रों के अभिनय के समक्ष पूर्व में उनके कार्य अनुरूप योजनाएँ प्रस्तुत करता है. उदाहरण के लिए एक कलाकार को किसी दृश्य में कौन-सा संवाद कहना है, निर्देशक को कहाँ दृश्य को कट कहना है, कैमरामैन को किस दृश्य को किस प्रकार बाँधना है तथा किस दृश्य में ध्वनि व प्रकाश की स्थिति कैसी रखनी है, इन सभी का उल्लेख पटकथा लेखन में होता है. पटकथा लेखन विस्तृत पृष्ठों का दस्तावेज होता है. जिसमें बायीं ओर दृश्य तथा दाहिनी ओर संवाद, संगीत तथा उसके आव-भाव का वर्णन होता है. पटकथा लेखन एक जटिल तथा दायित्वपूर्ण कार्य होता है. जिस पर फिल्म या धारावाहिक के पात्रों के अभिनय की उत्कृष्टता तथा फिल्म के उद्देश्य की दर्शकों तक पहुँच व उसकी प्रभावोत्पादकता निर्भर करती है. फिल्म अथवा धारावाहिक की अवधि तथा उसके दृश्यों की प्रासंगिकता आदि सभी कुछ पटकथा लेखन पर निर्भर होता है. फलतः चलचित्र के पर्दे पर फिल्मांकन हेतु पटकथा लेखन एक आवश्यक तथा महत्वपूर्ण कार्य है.

2.3.1 पटकथा लेखन के सिद्धांत

पटकथा लेखन के लिए आधारभूत सिद्धांत, विकास-विस्तार की दृष्टि से इस प्रकार निम्नलिखित हैं :-

1. आधारगत संरचना

पटकथा लेखन के प्रथमतः सिद्धांत में दर्शकों को आकर्षित करने के लिए एक थीम तथा दृश्य माध्यम की प्रवृत्ति को ध्यान में रखा जाता है. वहीं पटकथा का आधार भी इसी

पर निर्भर करता है कि वह दर्शकों को किस प्रकार आनंद या चेतना प्रदान करेगी. अतः राजनीति, समाज संस्कृति, इतिहास तथा कला की पृष्ठभूमि पर आधारित पटकथा का स्वरुप उसी प्रकार गढ़ा जाएगा. जिस प्रकार की पटकथा लेखन की संरचना की अपेक्षा दर्शक उससे चाहते हैं। तथा इसी आधारगत संरचना पर आरूढ़ पटकथा लेखन चलचित्र के निर्माण में सहायक सिद्ध होती है.

2. यथार्थ एवं प्रासंगिकता

पटकथा लेखन में प्रत्येक दृश्य, संवाद, पात्र-चित्रण, स्थान-परिवेश, भाषा-शब्दावली तथा उद्देश्य में प्रासंगिकता का सन्निवेश होता है. दृश्यों के सिलसिलेवार कथानक से चलचित्र में बिखराव या अप्रासंगिकता नहीं आती है. वहीं पटकथा लेखन में यथार्थपूर्ण तथ्यों, सूचनाओं तथा जानकारियों का समावेश भी होता है. जिससे किसी भ्रामक, दिशा भ्रष्ट या अपवादग्रस्त चलचित्र के बनने की संभावना नहीं रहती है.

3. शैली एवं विस्तारधारा

पटकथा में यह ध्यान रखा जाता है कि चलचित्र का उद्देश्य दर्शकों के लिए क्या है वह धार्मिक, समाज-सुधार, राजनैतिक चेतना, शिक्षा, स्वास्थ्य या रोज़गार की समस्या आदि किस मुद्दे को लेकर लिखा जाना है. फलतः जिस प्रकार का विषय क्षेत्र सम्बन्ध लेकर पटकथा लेखन किया जाएगा उसी प्रकार की विस्तारधारा व शैली का दर्शन फिल्म-धारावाहिक की पटकथा में दिखाई पड़ेगा. उदाहरण के लिए 'नया दौर' फिल्म को लें तो वहाँ मशीनों द्वारा मजदूर के रोज़गार की समस्या दिखाई पड़ती है. जिसके लिए पटकथाकार मालिक और मजदूर तथा अमीर-गरीब के अंतर पर विस्तार कर उसी के अनुरुप अपने राजनैतिक-सामाजिक तथा आर्थिक दृष्टिकोण से पटकथा लेखन को पर्दे पर फिल्माता दिखाई पड़ता है.

3. सुव्यवस्थित नाटकीयता

पटकथा लेखन का अत्यंत महत्वपूर्ण सिद्धांत उसकी सुव्यवस्थित नाटकीयता है जिसके अभाव में पटकथा लेखन महत्वहीन तथा विफल हो जाएगा. पटकथा लेखन में दृश्य -प्रधानता, संवाद, निर्देशन, पात्रों तथा मंच सज्जा आदि नाटकीयता की प्रभावकता तथा सुव्यवस्था को बनाए रखने में सहायक होते हैं. इनके अभाव में पटकथा लेखन नीरस, आधारहीन तथा अपने उद्देश्य से भटकता अनुभव होता है. फलतः पटकथा लेखन में सुव्यवस्थित नाटकीयता अनिवार्य सिद्धांत है. जिसके द्वारा पटकथा लेखन, चलचित्रों को आकर्षक तथा दर्शकों को आकृष्ट करने का सामर्थ्य उत्पन्न करता है.

2.3.2 पटकथा लेखन का महत्व

पटकथा लेखन दृश्य माध्यमों जैसे-टेलीविजन धारावाहिक, फिल्म तथा नाटक आदि के प्रदर्शन के लिए लिखे जाते हैं. यही वे दृश्य माध्यम हैं जिनके द्वारा दर्शक आकृष्ट होकर किसी मुद्दे या चेतना से जुड़कर निष्कर्ष प्राप्त करते हैं. इस परिप्रेक्ष्य में पर्दे पर धारावाहिक, फिल्म या नाटक आदि को दर्शाने के लिए पटकथा लेखन आधारभूमि रुप में कार्य करता है. जिसके निहित अंक (episode) के दृश्य (scene), ध्वनि-प्रकाश व्यवस्था, पात्रों का अभिनय, स्थान-परिवेश की अनुकूलता, संवाद योजना तथा तकनीक आदि का उल्लेख समावेशित होता है. यह निहित कारक-तत्त्व पटकथा लेखन में कथा विस्तार तथा विस्तार को यथार्थ में लाने का कार्य करते हैं. चूँकि पटकथा लेखन पर्दे पर कथा को दर्शाने के लिए आवश्यक है, फलतः पटकथा लेखन में दृश्य, संवाद तथा पात्रों के अभिनय भाव-भंगिमाओं द्वारा परिस्थिति का अनुकूलन तथा कथा के विस्तार के लिए इनका समायोजन दर्शनीय है. जिससे दर्शक भली-भाँति फिल्म-धारावाहिक के मर्म को समझ सकें तथा अच्छे संवादों व अभिनय के द्वारा आकृष्ट हो पायें.

अतः इन सभी कारणों से एक फिल्म या धारावाहिक के लिए सफलता की कुँजी एक अच्छी पटकथा है. यही पटकथा लेखन एक निर्देशक के कुशल निर्देशन में तकनीक व कलाकारों के समूह द्वारा एक दृश्य माध्यम को इतना प्रभावी बनाता है जिससे दर्शक अभिभूत होकर हँसते, रोते, डरते या क्रोधित होते हैं. दरअसल पटकथा लेखन ही किसी घटना-प्रसंग से प्रेरणा प्राप्त कर एक विचार रूप में प्रस्फुटित होता है. यह विचार इतिहास, समाज, राजनीति, कला या मनोरंजन आदि में किसी से प्रभावित हो सकता है. जिसकी संकल्पना कथा रूप में निष्पत्त होती है, किन्तु इस कथा का पठन हो सकता है. इसका दृश्यांकन करने के लिए इसे फिल्म, धारावाहिक, वेबसीरीज या नाटक रूप में इसका रूपांतरण करना आवश्यक है जिसके लिए एक पटकथा लेखन की आवश्यकता है. अतः पटकथा लेखन दृश्य माध्यम के दृश्यांकन से पूर्व का कार्य है. जो एक टीम वर्क होता है. तथा फिल्म, धारावाहिक या नाटक आदि की सफलता के लिए पटकथा लेखन का सुव्यवस्थित तथा सुदृढ़ होना आवश्यक है. यदि पटकथा लेखन को दृश्य माध्यमों की आत्मा माना जाए तो यह अतिश्योक्ति नहीं होगी.

2.3.3 पटकथा लेखन की विशेषताएँ

पटकथा लेखन की विशेषताएँ निम्नलिखित हैं-

1. दृश्यात्मकता

पटकथा लेखन दर्शकों को दृश्य माध्यम टेलीविजन धारावाहिक फिल्म तथा वीडियो दिखाने के उद्देश्य से लिखी जाती है. यह पठनीयता की दृष्टि से नहीं बल्कि दर्शनीयता की दृष्टि से लिखी जाती है. फलतः पटकथा लेखन का उद्देश्य दृश्यात्मकता में निहित होता है.

2. कहानी की संरचाना-

पटकथा में कथा विस्तार को तीन अंकों में विभाजित किया जाता है, प्रारम्भ, मध्य तथा अंत. अतः कहानी या विचार की संरचना यहाँ वैसी नहीं होती जिससे उसे केवल पढ़ा जाए. बल्कि पर्दे पर कहानी को फिल्माने के लिए कहानी को छोटे-छोटे दृश्यों में बाँटा जाता है तथा उसे पात्रों के संवाद द्वारा आवश्यकतानुरूप संरचनागत ढंग से इस प्रकार ढाला जाता है कि वह अपने चरम पर पहुँचा कर एक सफल और प्रभावी अंत करे. अतः पटकथा लेखन कहानी की संरचना को प्रारम्भ मध्य और अंत में वर्गीकृत कर इसकी सफल योजना पूर्ण करता है.

3. प्रारुपगत व्यवस्था-

पटकथा लेखन एक विशिष्ट प्रारूप (format) होता है. जिसमें दृश्य, स्थान-परिवेश, अवधि, पात्रानुरूप संवाद, प्रकाश-ध्वनि तथा तकनीकों आदि यथावत् उपयोग सम्मिलित होता है. इन सभी का योजनाबद्ध प्रयोग पटकथा लेखन में अवश्यंभावी रूप से लेखक द्वारा वर्णित किया जाता है.

4. संवाद एवं अभिनय-

पटकथा लेखन में संवाद तथा अभिनय पारस्परिक विशेषताएँ हैं जो पात्रों के स्वभाव, व्यवहार तथा चरित्र पर उल्लिखित होते हैं. संवादों के अनुरूप ही पात्रों का अभिनय होता है तथा पात्रों के परिवेश तथा उसके कहानी में चरित्र के अनुरूप ही हाव-भाव, उसके संवाद पटकथा में लिखे जाते हैं.

5. अवधि और स्थानांकन-

पटकथा लेखन में अवधि का निर्धारण होता है. कहानी के रूपांतरण के द्वारा पटकथा लेखन विस्तृत होता है और इस रूपांतरण द्वारा ही पटकथा लेखन कितना लघु या वृहत्

होगा यह स्पष्ट होता है. वहीं प्रत्येक नवीन दृश्य से पूर्व पटकथा में स्थान तथा समय (दिन-रात) का वर्णन होता है. पटकथा लेखन में कहानी का नाटकीय रुप में रुपांतरण पर्दे पर प्रकट होता है. फलतः इसके लिए पटकथा में कहानी को दृश्यों में सूत्रबद्ध किया जाता है. जिसके आधार पर काल-परिवेश व समय का परिवर्तन या परिस्थिति अनुरूप संवाद पात्रों द्वारा कहा जाता है. कथा विस्तार के आधार पर पटकथा लेखन में धारावाहिक या फिल्म की अवधि घट या बढ़ सकती है.

6. संघर्ष एवं चरमोत्कर्ष-

पटकथा लेखन में कहानी के उद्देश्य को दृश्यात्मक रुप में दर्शकों को प्रभावित या आकर्षित करने के लिए लेखक पात्रों के मध्य परिस्थिति संघर्ष उत्पन्न करता है. फिर धारावाहिक या फिल्म किसी मुद्दे या समस्या को लेकर एपिसोड या दृश्य के द्वारा अपने चरमोत्कर्ष (Climates) तक पहुंचकर अंत की घोषणा करता है. अतः संघर्ष व चरमोत्कर्ष पटकथा लेखन में दृश्यांकन हेतु अनुयायी तत्त्व दृष्टिगोचर है.

2.3.4 पटकथा लेखन के तत्त्व

पटकथा लेखन के तत्त्व निम्नलिखित दृष्टिगोचर हैं-

1. कथानक –

पटकथा लेखन का आधार कथानक होता है. उसी के अनुरुप चलचित्र की संरचना तथा कथा का विस्तार होता है. फलतः घटना-प्रसंगों की क्रमबद्धता, तार्किकता व प्रासंगिकता तथा उनकी अनुक्रमिक संरचना कथानक में समावेशित होते हैं. जिससे पटकथा लेखन में दृश्यों की निरंतरता तथा कथा विस्तार होता है. इसी के आधार पर चलचित्रों का निर्माण स्वरुप फिल्मांकन हेतु हो पाता है. पटकथा लेखन में कथानक को कथा का सारांश समझा जा सकता है. जिससे फिल्म या धारावाहिक की प्रवृत्ति क्या होगी इसका अनुमान पूर्व में लगाया जा सकता है.

2. पात्र एवं अभिनय –

पटकथा लेखन में पात्र व अभिनय परस्पर महत्वपूर्ण तत्त्व दृष्टिगोचर हैं. पात्रों का चरित्र-चित्रण पटकथा में स्पष्ट होना चाहिए और इनका अभिनय भी पात्र के चरित्र के अनुरुप होना चाहिए. उदाहरण के लिए नायक पात्र वीर, सौम्य स्वभाव का तथा सुन्दर होना चाहिए और यही गुण उसके अभिनय में भी झलकना चाहिए.

3. संवाद योजना –

पटकथा लेखन में संवाद योजना एक महत्वपूर्ण तत्त्व है जो छोटे होने चाहिए. संवाद अधिक लम्बे होने से समय व्यर्थ नष्ट होने तथा नीरस व अप्रासंगिक तथ्यों के समावेश का संकट आ सकता है, वहीं कथा की मूल चेतना से भी पात्र भटक सकता है. जबकि पटकथा लेखन में संवाद ही वह तत्त्व है जो एक सामान्य कथा में प्राण फूँक सकता है. यह संवाद पात्रानुकूल भी होने चाहिए. जैसे एक पुलिस वाले के संवाद में ओज स्वर तथा कानूनी शब्दों का सन्निवेश दिखाई पड़ता है वहीं चोर पात्र के संवाद में भय तथा आपराधिक शब्द स्पष्ट दिखते हैं. इन दोनों पात्रों के संवाद एक समान नहीं हो सकते हैं.

4. दृश्य (scene) –

पटकथा लेखन में दृश्य का विशेष महत्व है. यह तत्त्व ही कथा के स्थान-परिवेश, पात्र की स्थिति तथा प्रसंग का उल्लेख करता है. उदाहरणतः पात्र किससे संवाद कर रहा है, ग्राम या नगर किस स्थान पर है, दिन या रात किस समय, वहाँ क्रोध-हर्ष किस भाव-

परिस्थिति में अपना अभिनय-भूमिका निर्वहन कर रहा है. यह पटकथा लेखन में दृश्यों के माध्यम से उल्लिखित होता है.

5. संघर्ष –

पटकथा लेखन में निरंतर दृश्यों में पात्रों का विभिन्न प्रसंगों-परिस्थितियों में संघर्ष दिखना आवश्यक है. इससे पात्रों के अभिनय में विविधता का दर्शन मिलता है और फिल्म या धारावाहिक में रोचकता व जिज्ञासा बनी रहती है कि अब आगे क्या होगा? अगले दृश्य में क्या होने वाला है.

6. चरमोत्कर्ष –

चरमोत्कर्ष पटकथा लेखन का वह तत्त्व है जिसमें कहानी के अंत होने की पूर्व सूचना दर्शकों को मिल जाती है. जब किसी फिल्म में नायक, खलनायक को मारकर अपनी प्रेमिका से मिलता है, तब इस दृश्य द्वारा दर्शक समझ जाते हैं कि यह फिल्म का चरमोत्कर्ष है और फिल्म समाप्त होने वाली है.

7. समापन (The End) –

पटकथा लेखन का अंतिम तत्त्व कहानी का समापन होता है. जो प्रायः सुखान्त होता है. यद्यपि कभी-कभी कहानी का समापन त्रासदीपूर्ण भी होता है. जैसे-किसी फिल्म में नायक, खलनायक पर जीत प्राप्त करता है और दर्शकों को लगता है कि अब नायक-नायिका खुशहाल जीवन व्यतीत करेंगे किन्तु तभी खलनायक चेतना में आकर नायक को मार देता है. जो फिल्म का त्रासदीपूर्ण समापन होता है वहीं नायक-नायिका के मिलन से फिल्म के समापन को सुखान्त कहा जाता है.

1. कथा विचार का विस्तार और उसके तत्त्व

कथा विचार और उसका विस्तार एक सृजनात्मक प्रक्रिया है. यह प्रक्रिया लेखक के अपने मनोभावों के सामर्थ्य, उसकी अनुभूतियों तथा जीवन में पेश आई घटनाओं के अनुभवों से जनित होती है. कथा विचार का विस्तार एक रचनात्मक कौशल का अनुभाग होता है, जिसमें एक घटना या पात्र के आधार पर एक कथा का निर्माण होता है. कथा विचार को कथा या कहानी का आधार अर्थात् बुनियाद माना जा सकता है. जो कथा के विस्तार को विकास प्रदान करता है. यह कथा विचार कथा की प्रस्तावना के समान होता है. जिसमें क्या-क्या समावेशित है इसका ब्यौरा तो होता है किन्तु वह पूर्ण रूप से दर्शनीय नहीं होता है. अतः कथा विचार के विस्तार से अगोचर दृश्यों का उल्लेख होता है. जिसके लिए आवश्यक तत्त्वों को जानना जरूरी है वे तत्त्व इस प्रकार दर्शनीय हैं-

1. मूल विचार –

कथा विचार का विस्तार, कथा का मूल या आधार होता है यह किसी प्रश्न, घटना-प्रसंग या अतीत की अनुभूति से प्रस्फुटित होता है.

2. पात्रों का निर्माण –

पात्र, कथा विस्तार के विस्तार में सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व होता है. कथा के विचार में अनेक घटना-प्रसंग आते हैं जो कथा को विस्तार देते हैं. कथा के ये घटना-प्रसंग ही पात्रों का निर्माण परिस्थिति व परिवेश के अनुरूप करते हैं. जैसे-किसी नगर की आपराधिक समस्या के लिए संघर्ष को दिखाने के लिए एक नायक पात्र का निर्माण करना. यह पात्र निर्माण की प्रक्रिया ही कथा विचार को विस्तार देती है.

2. रूपरेखा या प्रारूप –

कथा विचार के उपरांत कथा को स्पष्ट स्वरुप प्रदान करने के लिए जो विस्तार प्रक्रिया

प्रारंभ होती है वह चरणबद्ध रूप से घटित होती है. इस प्रकार लेखक एक रूपरेखा या प्रारूप का अनुसरण कर अपने मन के कथा विचार को कथानक, पात्र व चरित्र-चित्रण, संवाद, संघर्ष, भाषा शैली आदि द्वारा विस्तार देता है.

3. संघर्ष एवं तनाव –

कोई कथा बिना घटना-प्रसंगों के द्वंद्व या पात्रों के संघर्ष के बिना विस्तार प्राप्त नहीं कर सकती. पात्रों के तनाव उनका समस्याओं से संघर्ष ही कथा विचार को नवीन दृश्य प्रदान करते हैं. अतः कथा विचार के विस्तार में संघर्ष महत्वपूर्ण तत्त्व हैं.

4. परिवेश एवं शैली –

कथा विचार का विस्तार स्थान व समय यानी देशकाल-वातावरण के द्वारा कहानी में घटित प्रसंगों के आधार पर होता है. यह परिवेश ही कथा विचार के विस्तार में सहायक होता है. जो लेखक द्वारा लिखने के ढंग यानी शैली द्वारा पात्रों की भाषा-संवाद की विशिष्टता के द्वारा पाठक को कथा विस्तार के प्रति विचार प्रदान करता है.

2.5. कथा विचार के स्रोत

कथा विचार के स्रोत बहुआयामी हैं. चूँकि कहानी का ताना-बाना लेखक आस-पास के परिवेश से जुड़ा होता है, फलतः उसमें यथार्थ का समावेश होता है. वहीं कुछ कही-सुनी जनश्रुतियों तथा मानसिक कल्पनाओं व उहा-पोह के कारण उनमें कल्पना का मिश्रण भी होता है. इस प्रकार कथा विस्तार के स्रोत के अनेक पक्ष जिम्मेदार दृष्टिगोचर हैं. जिनका निम्नलिखित रूप में उल्लेख इस प्रकार है :-

1. घटना या प्रसंग –

अपने आस-पास के परिवेश-समाज या जीवन में किसी स्थान विशेष पर घटित किसी घटना या प्रसंग से प्रभावित होकर लेखक के मन में उस घटना-प्रसंग से संदर्भित अनेक विस्तार जन्म लेते हैं और कालांतर में उसी विस्तार को विस्तृत पठनीय रूप देकर एक कथा का निर्माण लेखक करता है.

2. व्यक्तिगत अनुभव या अनुभूति –

लेखक के व्यक्तिगत जीवन में और उसके सामाजिक परिवेश में जो भी उसके निजी अनुभव या सामाजिक-परिवेश में घटित घटनाएँ रही हों वे प्रेमानुभूति, विछोह या जीवन की कोई ऐसी स्मृति जिसे लेखक भूल नहीं पाया आदि कुछ भी हो सकता है यह संभव है. फलतः उससे प्रेरणा प्राप्त कर लेखक किसी कथा का विचार कर सकता है. किन्तु यह विचार केवल उसके जीवन व निजी अनुभूतियों पर केन्द्रित होता है.

3. रचनात्मक एवं पूर्वानुमान –

लेखक में सृजनात्मक शक्ति का प्रवाह होता है. उसमें मानसिक सोच-विचार की शक्ति व सामर्थ्य होता है. वह कल्पना के बल पर अनुभव विचार कर सकता है कि क्या होगा यदि इस प्रकार विचार किया जाए कि मनुष्य उड़ रहा है. जैसे- अलादीन का जादुई कालीन। अन्य अनेक प्रकार के पूर्वानुमान लगाकर लेखक अपने रचनात्मक कौशल का विस्तार कथा के लिए कर सकता है.

4. कल्पना व मनोरंजन –

जब लेखक का कथा के पीछे विचार केवल मिथकीय प्रयोगों, जादू-टोनों, अंधविश्वासों, हास्य-परिहासों तथा राग-रंग आदि तक सीमित रहता है, तब वहाँ लेखक की कल्पना शक्ति का

दर्शन मिलता है. वहाँ यथार्थ का वह विचार असंभव होता है. वहाँ कथा विस्तार का उद्देश्य केवल मनोरंजन होता है.

5. लोक कथाएँ व जनश्रुतियाँ –

कथा विचार के प्राचीनतम् स्रोतों में लोक कथाएँ, जनश्रुतियाँ, किस्से तथा दंतकथाएँ आदि समावेशित हैं. जिनके पठन व श्रवण के दौरान लेखक के मन में अनेक विचार करवटें लेते हैं वह कल्पना कर इन किस्सों-जनश्रुतियों में गोते लगाता है तथा इनकी गहराई में जाकर भूत-प्रेत, अंधविश्वास, जादू-टोने, तिलिस्म, तोते-मैना व राजा-रानी आदि की काल्पनिक कथाओं से भय, उत्साह, वीरता तथा प्रेम आदि भावों से प्रभावित होता है. इन्हीं कथा विचारों पर कथा निर्माण के पश्चात् फिल्मों से दर्शक भिन्न-भिन्न भावों का आनंद प्राप्त करते हैं.

6. इतिहास –

लेखक कभी-कभी इतिहास की प्रसिद्ध घटनाओं तथा ऐतिहासिक पात्रों से प्रभावित होकर उनपर विस्तार करने लगता है कि वह समय कैसा होगा. उस राजा ने किस प्रकार शासन किया होगा या युद्ध लड़े होंगे. इस प्रकार इतिहास संबंधित राजाओं व घटनाओं का उदाहरण लें तो पृथ्वीराज चौहान, सम्राट अशोक तथा महाराणा प्रताप तथा इनसे जुड़ी घटनाओं का उल्लेख फिल्मों व धारावाहिकों में मिलता है. जिनकी कथा का विस्तार पटकथा लेखक ऐतिहासिक दृष्टिकोण से करता है.

2.6 कथानक का महत्व

कथानक, कहानी की रीढ़ माना जाता है. जो कहानी का सार प्रस्तुत करने में सक्षम होता है. कहानी में घटनाओं को योजनाबद्ध तरीके से तर्कपूर्ण रूप में एकसूत्र में बाँधने का कार्य कथानक का होता है. जिससे कहानी में रोचकता तथा जिज्ञासा उत्पन्न होती है. पात्रों के क्रिया-कलापों, उनके संवादों तथा संघर्षों को एक के बाद एक प्रसंग का प्रकटीकरण कथानक के द्वारा ही कहानी में होता है. सरलतम् रूप में कथानक, कहानी का एक सुव्यवस्थित, संरचनात्मक ढांचा है. जिसका स्वरुप परिधि, परिचय तथा प्रारम्भ और अंत सभी कुछ कथानक संक्षेप में बताता है. कथानक कहानी में घटना-प्रसंगों के क्रम को योजनाबद्ध रूप में कारण तथा उसके परिणाम के अंतर्संबंध को प्रकट करता है. एक सुदृढ़ कथानक पाठक को निश्चित ही आकर्षित करता है. कथानक में भावनात्मक घुमाव, घटना का केन्द्रीकरण तथा पात्रों की स्थिति आदि सभी कुछ जिस नाटकीयता से कहानी में समावेशित होता है, वह कथानक की कहानी में महत्ता को प्रकट करता है. कथानक, कहानी में सेतु के समान एक घटना को दूसरी घटना से व्यवस्थित क्रम में जोड़ने का कार्य करता है. यही कथानक अपने सामर्थ्य की शक्ति से पाठक को बाँधने में सफल होता है. वहीं पटकथा लेखन में कथानक ही वह मूल संरचना होती है, जो पटकथाकार को फिल्म-धारावाहिक के लिए दृश्य योजना करने व कथा को पर्दे पर दर्शाने में सहायता प्रदान करती है.

2.7 कथा विचार और कथानक में अंतर

प्रायः लेखकों के द्वारा यह सुना जाता है कि उन्हें किसी बहुत बढ़ियाँ कहानी का विचस्तार आया है. जिसके आधार पर वे एक बढ़ियाँ कहानी लिखना चाहते हैं, किन्तु इस कथा विचार और कथा या कहानी लेखन के बीच कथानक (plot) जिसे कथावस्तु भी कहा जाता है, की महत्वपूर्ण भूमिका है. अतः कथानक, कथा विचार के पश्चात् की प्रक्रिया है. उदाहरण के लिए जब किसी लेखक के मन में किसी घटना-प्रसंग जैसे मिल मालिक द्वारा मजदूर का शोषण आदि का विचार आता है, तब वह मात्र एक कथा विचार होता है किन्तु जैसे-जैसे वह कथा विस्तार पाती है. तब उसमें किसी काल-परिवेश, स्थान, पात्र, संवाद तथा

उद्देश्य का समावेश होता है. उस आधार पर वह विस्तार एक कथा का का रूप लेती है. यद्यपि कथा की इस व्यापक निर्माण प्रक्रिया में जिस तत्त्व की सर्वाधिक महत्ता है वह कथानक है. इसी के द्वारा कथा में व्यवस्थित क्रमबद्धता, घटना का सही क्रम, रुपरेखा, पात्रों का आवागमन, चरमोत्कर्ष तथा अंत निहित होता है. कथानाक को कथा की संरचना या ढाँचागत विकास, स्वरुप अथवा सारांश कहा जा सकता है.

प्रायः लोग कथा के विचार और कथानक को एक मान लेते हैं. किन्तु दोनों ही में उतना ही अंतर है जितना कि एक पौधे के बीजारोपण के विचार में और उस पौधे के वृक्ष बनने की प्रक्रिया में है. यहाँ यह पौधे का बीज ही कथा विचार है और कथानक वह पौधा है और इस पौधे के वृक्ष रूप को कथा मान लेना चाहिए. फलतः कथा विचार और कथानक में पर्याप्त अंतर है. किन्तु इससे यह दोनों भिन्न नहीं हो जाते हैं बल्कि यह परस्पर एक के बाद दूसरे की अवस्था में आने की प्रक्रिया है. कथा का विस्तार आने के पश्चात् कथानक की आवश्यकता लेखक को कथा लेखन हेतु होती है. यह कथानक जितना दोषमुक्त, संयमित, उद्देश्य के निकट, व्यर्थालाप तथा संवाद-पात्रों की भीड़ से मुक्त होगा, कथा उतनी ही मर्मस्पर्शी, अपने लक्ष्य के निकट तथा सुदृढ़ होगी और पटकथा लेखन में कथा का चयन फिल्म-धारावाहिक आदि के लिए उतना ही सरल होगा क्योंकि एक सजग निर्देशक ऐसी फिल्म या धारावाहिक बनाना चाहता है जो दर्शकों को आकृष्ट करे. फलतः वह एक बेहतरीन पटकथा लेखन की खोज में रहता है. अतः एक अच्छा कथा विचार और कथानक ही एक अच्छी कथा के निर्माण में सहायक होता है जिस पर पटकथा लेखन कर एक सफल फिल्म, नाटक या वेब सीरीज बनती है. अतः पटकथा लेखन में आवश्यक तथ्य कथानक की आवश्यकता कथा की गहनता और उसके स्वरुप को समझना है. सम्पूर्ण कथा को पढ़ने का समय निर्देशक के पास नहीं होता है. अतः कथा का कथानक ही पटकथा लिखने के लिए लेखक को प्रेरित करता है. जिससे एक ही विचार पर बनी कहानियों पर कथानक के भिन्न-भिन्न दृष्टिकोण फिल्मों में पटकथा लेखन की भूमिका उसकी महत्ता अनुभव में आती है. उदाहरणतः शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के 'देवदास' उपन्यास पर अनेक फ़िल्में बनीं हैं किन्तु कथा विचार की समानता के उपरांत भी कथानक के भेद के कारण दर्शकों को दिलीप कुमार की देवदास की तुलना में शाहरुख खान की देवदास फिल्म नवीन लगती है. फलतः कथा विचार की तुलना में पटकथा लेखन में कथानक की विशिष्ट भूमिका दृष्टिगोचर है.

2.8 पटकथा लेखन की प्रक्रिया

पटकथा लेखन मूलतः दृश्य-श्रव्य माध्यम जैसे-फिल्म, धारावाहिक, नाटक, वेब सीरिज तथा यूट्यूब वीडियो हेतु दृश्यांकन का आवश्यक कारक तत्त्व है. जिसके अंतर्गत अनेक दृश्यों का योजनाबद्ध रुप क्रमवार फिल्मांकन होता है. किसी फिल्म की सफलता उसके इन्हीं दृश्यों की प्रभावोत्पादकता तथा आकर्षण पर निर्भर करता है. फिल्म का कोई दृश्य जो दर्शक को बाँध पाने में सफल होता है एक यादगार स्मृति बन जाती है. जिसके कारण सम्पूर्ण फिल्म हिट हो जाती है. जैसे-शोले फिल्म में गब्बर सिंह का 'कितने आदमी थे' पूछना और कालिया का 'दो' कहना. यह संवाद व दृश्य इतना अधिक प्रभावी व आकर्षक हुआ कि शोले फिल्म एक कालजयी फिल्म साबित हुई. इसी प्रकार के दृश्यों से सम्पूर्ण फिल्म या धारावाहिक सूत्रबद्ध होते हैं और प्रत्येक दृश्य में स्थान-परिवेश कथानक के अनुरुप बदलते रहते हैं. वहीं पात्र अपनी भूमिका के अनुरुप संवाद बोलते हैं. जैसे-नायक-नायिका प्रधान रूप में सम्पूर्ण फिल्म में छाये रहते हैं किन्तु कुछ सहायक पात्र जैसे-ड्राइवर, पुजारी, नौकर या दुकानदार आदि ऐसे पात्र होते हैं जो फिल्म में दृश्य की प्रासंगिकता व सार्थकता के लिए कथा विस्तार हेतु प्रधान पात्रों के समक्ष दृष्टिगोचर होते हैं. फलतः इन सहायक पात्रों के संवाद व साधन इनकी भूमिका से संबंध

रखते हैं. उदाहरण के लिए किसी दृश्य में नायक को नायिका के पास जाने के लिए ड्राइवर के साथ कार में जाना है, तब रास्ते में उसे अन्य सहायक पात्र दुकानदार, मित्र, रिश्तेदार तथा ऑफिस के कर्मचारी मित्र आदि मिल सकते हैं, जो भिन्न-भिन्न प्रसंगों पर संवाद द्वारा कथा विस्तार करते हुए फिल्म के उद्देश्य को चरम (climax) तक पहुँचाते हैं.

इस प्रकार एक पटकथा लेखन का महत्व पात्रों की भूमिका, कथा विस्तार, संवाद, स्थान-परिवेश, साधन प्रयोग, ध्वनि-प्रकाश आदि के द्वारा अनुभव होता है, यदि पात्र कोई संवाद बोल रहा है तो उसका वह संवाद उसके परिवेश, साधन-वस्तु तथा समय-परिस्थिति से मेल खाना चाहिए. जैसे-फिल्म का नायक मंदिर में पूजा करने जाता है तब पुजारी का संवाद धार्मिक मतावलंबन अनुरूप नायक के साथ होगा. वह स्थान मंदिर होगा और वहाँ भगवान् की मूर्ति प्रतिष्ठित होगी तथा समय सुबह या संध्या का होगा और उसी के अनुरूप प्रकाश की व्यवस्था होगी तथा मंदिर में घंटियों की ध्वनि सुनाई देगी. इसके अतिरिक्त यदि किसी दृश्य में नायक-नायिका को आकस्मिक मिलना है तब मेघ गर्जना के साथ वर्षा आदि अन्य किसी प्रसंग का उल्लेख भी पटकथा में होगा तथा कौन-सा दृश्य अन्य किसी दृश्य के पहले या बाद में फिल्म में बाँधा जाएगा इसका वर्णन भी पटकथा लेखन में किया जाता है जो कथानक की क्रमबद्ध दृश्य योजना को मूर्त बनाता है. फलतः पटकथा लेखन की प्रक्रिया में कथा विस्तार, कथानक का मात्र प्रयोग या पात्रों की भीड़ जमा कर संवादों की बौछार कर इति श्री करना नहीं है, बल्कि पटकथा लेखन में तकनीक तथा टीम वर्क का विशेष प्रयोग होता है. जिसमें प्रत्येक दृश्य का कथानक अनुरूप फिल्माने के लिए पात्र का परिस्थिति अनुसार संवाद, परिवेश-स्थान के अनुकूल ध्वनि-प्रकाश की व्यवस्था, वस्तुओं-स्थानों तथा मंच साज-सज्जा आदि का निर्देशक के निर्देशन में कैमरा मैन द्वारा शूट किया जाना होता है. फिल्म के प्रत्येक दृश्य का शूट उसके बेहतरीन शॉट की कसौटी होती है. जो एक अच्छे पटकथा लेखन पर निर्भर होता है तथा इसके आधार पर ही एक यादगार फिल्म-धारावाहिक आदि दृश्य माध्यम पर्दे पर दिखाई पड़ते हैं.

2.9 पटकथा लेखन की शैलियाँ

पटकथा लेखन की दृष्टि से प्रयुक्त होने वाली शैलियाँ इस प्रकार निम्नलिखित हैं :-

1. **नाटकीय शैली-** पटकथा लेखन में जहाँ दृश्य माध्यमों के लिए मंच साज-सज्जा, अभिनय, पात्रों के संवाद तथा कथावस्तु आदि का प्रकटीकरण रंगमंचीयता का अंश अधिकांशतः होता है, वहाँ नाटकीय शैली प्रयुक्त होती है. उदाहरणतः ऐतिहासिक, धार्मिक, सांस्कृतिक तथा एक्शन आदि से युक्त फिल्म, धारावाहिक के दृश्यों में नाटकीय शैली का प्रयोग होता है.

2. **वर्णनात्मक शैली-** यहाँ पटकथा लेखन में जादुई, तिलस्मी, लोक कथाओं तथा एनीमेशन आदि का प्रयोग वर्णनात्मक रूप में मुख्य रूप से होता है. वर्णात्मक शैली में कल्पना की व्यापकता अनुभव होती है.

3. **संवाद शैली-** फिल्म या धारावाहिक में जहाँ विषय पूर्ण समस्या या असंभावित घटना आदि के द्वारा किरदारों के संवादों में तर्क-वितर्क दर्शाया जाता है, वहाँ पटकथा लेखन में संवाद शैली का प्रयोग होता है. इस प्रकार की पटकथा में जासूसी, दार्शनिक तथा तार्किक कथाओं का प्रयोग होता है.

4. **विश्लेषण शैली-** जब पटकथा लेखन में व्यक्तिगत किरदारों या विशिष्ट चरित्र-पात्रों के द्वारा सामाजिक दृष्टि से विवेचन या उल्लेख किया जाता है। तब वहाँ विश्लेषण शैली का प्रयोग होता है. इसे चरित्र प्रधान शैली के नाम से भी अभिहित किया जाता है.

5. **संगीत शैली-** इस शैली में पटकथा लेखन के दौरान नृत्य-गान तथा संगीत-ध्वनि का

विशेष प्रयोग व उल्लेख होता है. संगीत शैली में कथानक के स्थान पर राग-रंग को विशेष ध्यान दिया जाता है.

6. **रोमांचक शैली-** पटकथा लेखन में जब रहस्य, रोमांच, उत्सुकता तथा अद्‌भुत प्रसंगों का वर्णन किया जाता है. तब वहाँ रोमांचक शैली का उपयोग होता है. इसका प्रयोग दर्शकों को आकृष्ट करने और उनमें रोमांच भरने व मनोरंजन करने के उद्देश्य से किया जाता है.

7. **फ्लैश बैक शैली (पूर्व दीप्ति शैली)-** इस शैली में पटकथा लेखक किसी प्रसंग या घटना का पात्र के बीते जीवन में उसकी अनुभूति की परिधि के अन्दर की स्मृति का वर्तमान में पुनरवलोकन होता है. जिसे पूर्व दीप्ति या फ्लेश बैक शैली कहा जाता है.

8. **मनोरंजन शैली-** पटकथा लेखन में जब दर्शकों का मात्र मनोरंजन करना तथा हास्य-परिहास व चुहुलबाजी के प्रसंगों का उल्लेख करना लक्ष्य होता है तब वहाँ मनोरंजन शैली का प्रयोग होता है.

9. **बिंब शैली-** बिंब शैली का सम्बन्ध दृश्य माध्यमों से होता है. इसके अंतर्गत घटना-प्रसंगों, चरित्रों और उनके मनोभावों को बिंब व प्रतीकों के माध्यम से पर्दे पर चित्रित किया जाता है.

2.9 गोदान धारावाहिक का पटकथा का अंश

हिन्दी साहित्य के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद की प्रसिद्ध रचना 'गोदान' पर आधृत धारावाहिक जो 'तहरीर... मुंशी प्रेमचंद की' के नाम से दूरदर्शन पर प्रसारित हुआ था, का पटकथा लेखन की दृष्टि से उल्लेख इस प्रकार है :-

प्रथम दृश्य

स्थान-होरी का घर

पात्र:

- होरी: एक वृद्ध, ईमानदार और परिश्रमी कृषक.
- धनिया: होरी की पत्नी, जो व्यावहारिक और साहसी है.

दृश्य का विवरण:

गाँव का एक छोटा सा मिट्टी का घर है. संध्या का समय है, होरी थका-हारा खेत से लौटता है. वह गरीब है लेकिन अपनी मर्यादा (सम्मान) को लेकर बहुत संवेदनशील है. होरी की पत्नी धनिया घर के बाहर बैठी है.

संवाद:

होरी : (दीवार पर टिकी अपनी लाठी रखते हुए) धनिया, ज़रा पानी तो देना. गला सूखा जा रहा है.

धनिया : (पानी का लोटा लाते हुए) अब क्या पानी-पानी कर रहे हो? भोला काका कह रहे थे कि तुम फिर गाय की बात कर रहे थे. अरे, जब घर में खाने को दाना नहीं है, तो गाय लाकर क्या करोगे? गाय आ गई तो उसे खिलाओगे क्या?

होरी : (पानी पीते हुए, भावुक होकर) धनिया, घर में गाय न हो तो, लगता है कि मर्यादा ही नहीं है. दूसरों की गाय का दूध देखते हैं तो मन मचल जाता है. मेरे भी दो-चार आने पैसे होते तो...

धनिया : (गुस्से में) पैसे होते तो पहले लगान भरते, या फिर साहूकार का कर्ज? गोबर की शादी करनी है, उस पर कौन ध्यान देगा? तुम तो बस जमींदार साहब की जी-हुजूरी में लगे रहते हो.

होरी : (धीरे से) राय साहब ने बुलाया है। जाना तो पड़ेगा ही.

धनिया : (व्यंग्य से) हां! जाओ, जाओ! उन्हें तो बस होरी की मेहनत चाहिए, जब मुसीबत आएगी, तो राय साहब मुंह फेर लेंगे.

(दृश्य के अंत में, होरी उदास होकर ऊपर आकाश की ओर देखता है और उसके मन में गाय की इच्छा और यथार्थ का भय दोनों हैं.)

- धारावाहिक के अनुसार दृश्य की विशेषताएँ :
- ग्रामीण परिवेश : गाँव का जीवंत चित्रण.
- होरी का चरित्र-चित्रण : होरी की सादगी, परिश्रम और मर्यादा के प्रति अटूट आस्था.

धनिया का यथार्थवाद : धनिया की व्यावहारिकता और परिवार की चिंता.

2.10 सारबिंदु

- दृश्य-श्रव्य माध्यमों टेलीविजन धारावाहिक, फिल्म तथा वेब सीरिज आदि का मूल आधार या आत्मा पटकथा लेखन है.
- पटकथा लेखन के लिए आवश्यक सभी तत्त्व एक टीम वर्क के रूप में कार्य करते हैं. जिनमें कथा विचार, कथा विस्तार तथा पात्र व संवाद आदि के अतिरिक्त ध्वनि-प्रकाश, कैमरा मैन तथा निर्देशक के निर्देशन की अहम् भूमिका होती है.
- कथानक, कथा का सार माना जाता है. यह कथा की विषय-वस्तुओं को पाठक को अवगत कराता है तथा पटकथा लेखन में कथानक की आवश्यक भूमिका होती है.
- कथा विचार पटकथा लेखन के लिए निमित्त तत्त्व है. जिसके स्रोत रूप में घटना-प्रसंग, अनुभव-अनुभूति, रचनात्मकता, कल्पना, मनोरंजन, जनश्रुतियाँ तथा इतिहास आदि दर्शनीय हैं.
- कथा विचार तथा उसका विस्तार एक सृजनात्मक प्रक्रिया है – जिसके सहायक तत्त्वों में मूल विचार, पात्रों का निर्माण, प्रारूप या रूपरेखा तथा परिवेश-शैली दर्शनीय हैं.
- पटकथा लेखन की विभिन्न शैलियाँ विविध प्रकार के प्रसंगों के अनुरूप फिल्म-धारावाहिक के लिए सहायक सिद्ध होती हैं. जिनमें नाटकीय शैली, वर्णनात्मक शैली, संवाद शैली, विश्लेषण शैली, संगीत शैली, रोमांचक शैली, फ्लैश बैक शैली, मनोरंजन शैली तथा बिंब शैली प्रमुख रूप से दृष्टिगोचर हैं.

2.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न.**
- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तारपूर्वक दीजिए.**

1. पटकथा लेखन का अर्थ क्या है इसके स्वरूप का वर्णन कीजिए.
2. पटकथा लेखन की प्रक्रिया को प्रकट करते हुए, उसके महत्व को दर्शाइए.
3. कथा विचार का विस्तार तथा उसके तत्त्वों का उल्लेख कीजिए.
4. कथा विचार तथा कथानक में अंतर करते हुए, कथा विचार के स्रोतों का उल्लेख कीजिए.

- **टिपण्णी लिखिए.**

1. पटकथा लेखन के तत्वों को विश्लेषित कीजिए.
2. पटकथा लेखन की विशेषताओं को प्रकट कीजिए.
3. पटकथा लेखन के सिद्धांतों का वर्णन कीजिए.
4. कथानक के महत्व पर टिपण्णी कीजिए.
5. पटकथा लेखन की शैलियों का उल्लेख कीजिए.

- **वस्तुनिष्ठ प्रश्न.**

1. इनमें कौन-सा तत्त्व पटकथा का नहीं है?

   1. ध्वनि　　2. कैमरा
   3. संवाद　　4. अलंकार

2. पटकथा लेखन का उद्देश्य क्या है?

   1. मनोरंजन　　2. पठन
   3. दृश्य-श्रव्य प्रस्तुति　　4. श्रवण

3. इनमें कौन सा सिद्धांत पटकथा लेखन का है?

   1. मंच साज-सज्जा　　2. राग-रंग
   3. चरमोत्कर्ष　　4. सुव्यवस्थित नाटकीयता

4. पटकथा लेखन में कथा विस्तार तथा पात्रों के घटना-प्रसंग का विस्तार किसके द्वारा होता है?

   1. संघर्ष (conflict)　　2. कथानक
   3. संवाद　　4. अभिनय

5. इनमें कथा विस्तार का स्रोत कौन-सा तत्त्व है?

   1. कल्पना　　2. लोककथा
   3. इतिहास　　4. राजनीति

6. पटकथा में चरमोत्कर्ष की घोषणा किसको दर्शाती है?

   1. समापन　　2. आरम्भ
   3. मध्यांतर　　4. नृत्य-गान

7. इनमें पटकथा लेखन की कौन-सी शैली नहीं है?

   1. फ्लैशबैक शैली　　2. रोमांचक शैली
   3. मिथक शैली　　4. संगीत शैली

8. दृश्य माध्यमों की आत्मा किसे माना जाता है?

   1. संवाद　　2. पटकथा
   3. अभिनय　　4. भाषा-शैली

9. पटकथा के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्त्व क्या है?

   1. संवाद　　2. कथा विचार
   3. कथा विचार का विस्तार　　4. दृश्यात्मकता

10. इनमें कौन-सा शब्द पटकथा के लिए प्रयोग होता है?

1. कथानक
2. संवाद
3. स्क्रीन प्ले
4. कथा विचार

2.12 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1. जाकिर अली रजनीश, हिन्दी में पटकथा-लेखन, वैज्ञानिक तथा तकनिकी शब्दावली आयोग, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ
2. मनोहर श्याम जोशी, पटकथा लेखन : एक परिचय, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. अरविन्द झा, पटकथा लेखन, हिन्दी बुक सेंटर, नई दिल्ली
4. असग़र वजाहत, पटकथा लेखन : व्यावहारिक निर्देशिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5. कुलदीप सिन्हा, पटकथा लेखन, Kindle unlimited
6. सुदर्शन कुमार, पटकथा लेखन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. मनोज पांडेय, फिल्मों में कथा-पटकथा लेखन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. सत्यदेव त्रिपाठी, पटकथा लेखन : सिद्धांत और व्यवहार, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
9. प्रभात रंजन, फिल्म लेखन के गुर, राजपाल एँड संस, नई दिल्ली
10. विनोद भारद्वाज, सिनेमा और पटकथा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
11. https://www.theknowledgeacademy.com/blog/what-is-script-writing
12. https://hi.wikibooks.org/wiki/%E0%
13. https://www.hindwi.org/creative-writing/katha-pataktha-unknown-creative-writing
14. https://www.socreate.it/hi/blog/patakatha-lekhan/paramparik-patkatha-ke-lagbhag-har-ek-bhaag-ke-liye-patkatha-lekhan-ke-udaaharan

इकाई 3 चरित्र-निर्माण

रुपरेखा

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 चरित्र निर्माण का अर्थ एवं स्वरूप

3.4 चरित्र निर्माण का महत्त्व

3.5 पात्रों के प्रकार

3.6 चरित्र की विशेषताएँ

3.7 चरित्र निर्माण की विधियाँ

3.8 चरित्र और कथा का संबंध

3.9 भारतीय सिनेमा और नाटक में चरित्र निर्माण

3.10 चरित्र निर्माण में लेखक की भूमिका

3.11 चरित्र निर्माण की समस्याएँ

3.12 आधुनिक संदर्भ में चरित्र निर्माण

3.13 सारसबिंदु

3.14 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

3.15 उपयोगी पाठ्यसामग्री

3.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! प्रस्तुत इकाई का प्रमुख उद्देश्य आपको पटकथा लेखन के अंतर्गत पात्र के चरित्र निर्माण से परिचित कराना है. इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :-

- चरित्र निर्माण की अवधारणा को समझ सकेंगे.
- पटकथा लेखन में पात्रों के महत्त्व को जान सकेंगे.
- विभिन्न प्रकार के पात्रों से परिचित हो सकेंगे.
- प्रभावशाली एवं यथार्थवादी पात्र निर्माण की प्रक्रिया को समझ सकेंगे.
- संवाद, क्रिया एवं वातावरण द्वारा चरित्र निर्माण की विधियों को जान सकेंगे.
- कथा और पात्रों के पारस्परिक संबंध को समझ सकेंगे.
- रचनात्मक लेखन क्षमता का विकास कर सकेंगे.
- भारतीय सिनेमा एवं नाटक में चरित्र निर्माण की परंपरा से परिचित हो सकेंगे.
- दर्शकों पर पात्रों के प्रभाव को समझ सकेंगे.
- सफल पटकथा लेखन में चरित्र निर्माण की भूमिका का अध्ययन कर सकेंगे.

3.2 प्रस्तावना

पटकथा लेखन में चरित्र निर्माण का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है. किसी भी फिल्म, नाटक, धारावाहिक, वेब-सीरीज़ अथवा रेडियो नाटक की सफलता उसके प्रभावशाली चरित्रों पर निर्भर करती है. कथा केवल घटनाओं का क्रम नहीं होती, बल्कि उन घटनाओं को जीने

वाले पात्र ही कथा को गति प्रदान करते हैं. यदि पात्र जीवंत, स्वाभाविक और प्रभावशाली हों तो सामान्य कथा भी दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ती है. इसके विपरीत यदि चरित्र कमजोर हों तो श्रेष्ठ कथानक भी प्रभावहीन हो जाता है.

चरित्र निर्माण का आशय केवल पात्रों के नामकरण से नहीं है, बल्कि उनके स्वभाव, व्यवहार, विचार, मानसिकता, भाषा, उद्देश्य, संघर्ष तथा विकास को सशक्त रूप देना है. पटकथा लेखक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि प्रत्येक पात्र कथा की आवश्यकता के अनुसार हो तथा उसके कार्य और संवाद स्वाभाविक प्रतीत हों.

पटकथा में चरित्र निर्माण का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं होता, बल्कि समाज, संस्कृति, नैतिकता तथा मानवीय संवेदनाओं को अभिव्यक्त करना भी होता है. भारतीय सिनेमा और नाटक परंपरा में अनेक ऐसे चरित्र मिलते हैं जो समाज के आदर्श बन गए हैं. अतः चरित्र निर्माण पटकथा लेखन की आत्मा माना जाता है.

3.3 चरित्र निर्माण का अर्थ

चरित्र निर्माण का अर्थ कथा, नाटक, फिल्म, धारावाहिक अथवा वेब-सीरीज़ में प्रस्तुत पात्रों के व्यक्तित्व के सृजन, विकास और प्रभावी प्रस्तुतीकरण है. यह पटकथा लेखन का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण पक्ष है, क्योंकि किसी भी कथा की सफलता उसके पात्रों की जीवंतता और विश्वसनीयता पर निर्भर करती है. चरित्र निर्माण केवल किसी पात्र का नाम, रूप या बाहरी स्वरूप निर्धारित करने तक सीमित नहीं होता, बल्कि उसके संपूर्ण व्यक्तित्व, विचारों, भावनाओं, व्यवहार, उद्देश्यों तथा जीवन-दृष्टि को आकार देने की प्रक्रिया है.

पटकथा लेखक जब किसी पात्र का निर्माण करता है, तब वह उसके सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक परिवेश को भी ध्यान में रखता है. पात्र किस परिवार से संबंधित है, उसकी आयु क्या है, वह किस प्रकार की भाषा का प्रयोग करता है, उसकी रुचियाँ और आकांक्षाएँ क्या हैं तथा वह जीवन की विभिन्न परिस्थितियों में किस प्रकार प्रतिक्रिया देता है इन सभी बातों का निर्धारण चरित्र निर्माण के अंतर्गत किया जाता है. यही तत्व किसी पात्र को विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं और उसे अन्य पात्रों से अलग बनाते हैं.

चरित्र निर्माण का स्वरूप बहुआयामी होता है. इसमें पात्र की बाह्य तथा आंतरिक दोनों विशेषताओं का समावेश होता है. बाह्य स्वरूप के अंतर्गत उसके पहनावे, शारीरिक बनावट, रहन-सहन और बोलचाल को शामिल किया जाता है, जबकि आंतरिक स्वरूप में उसकी मानसिकता, भावनाएँ, मूल्य, विश्वास, इच्छाएँ, संघर्ष तथा मनोवैज्ञानिक प्रवृत्तियाँ सम्मिलित होती हैं. एक सशक्त चरित्र वही माना जाता है जिसमें इन दोनों पक्षों का संतुलित और स्वाभाविक समन्वय दिखाई देता हो.

पटकथा लेखन में चरित्र निर्माण का उद्देश्य केवल कथा को आगे बढ़ाना नहीं होता, बल्कि दर्शकों और पात्रों के बीच भावनात्मक संबंध स्थापित करना भी होता है. जब कोई पात्र अपने व्यवहार, संघर्ष और अनुभवों के कारण वास्तविक जीवन के व्यक्ति जैसा प्रतीत होने लगता है, तब दर्शक उससे जुड़ाव महसूस करते हैं. वे उसके सुख-दुःख, सफलता-असफलता और मानसिक द्वंद्व को समझने लगते हैं. यही स्थिति चरित्र निर्माण की सफलता का प्रमाण मानी जाती है.

चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में पात्र के उद्देश्य और संघर्ष का विशेष महत्त्व होता है. प्रत्येक प्रभावशाली पात्र के जीवन में कोई न कोई लक्ष्य अवश्य होता है, जिसे प्राप्त करने के लिए वह विभिन्न चुनौतियों का सामना करता है. यही संघर्ष उसके व्यक्तित्व को विकसित करता है और कथा को रोचक बनाता है. संघर्ष के माध्यम से ही पात्र की वास्तविक शक्तियाँ,

कमजोरियाँ और मानवीय गुण उजागर होते हैं.

आधुनिक पटकथा लेखन में चरित्र निर्माण को और अधिक गहराई प्रदान की गई है. आज के पात्र केवल आदर्शवादी या पूर्णतः अच्छे-बुरे नहीं होते, बल्कि उनमें मानवीय गुणों और कमजोरियों का मिश्रण दिखाई देता है. वे मानसिक तनाव, नैतिक दुविधाओं, सामाजिक दबावों और व्यक्तिगत संघर्षों से गुजरते हैं. इस कारण वे अधिक यथार्थवादी और विश्वसनीय प्रतीत होते हैं. आधुनिक दर्शक भी ऐसे पात्रों को अधिक पसंद करते हैं जिनमें वास्तविक जीवन की जटिलताओं का प्रतिबिंब दिखाई देता हो.

3.4 चरित्र निर्माण का महत्त्व

किसी भी कथा, नाटक, फिल्म, धारावाहिक या वेब-सीरीज़ की सफलता केवल उसके कथानक पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि उसमें प्रस्तुत पात्र कितने प्रभावशाली, जीवंत और विश्वसनीय हैं. पात्र ही कथा को गति प्रदान करते हैं तथा घटनाओं को अर्थ और दिशा देते हैं. यदि कथा में सशक्त और आकर्षक पात्र हों, तो साधारण कथानक भी दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ सकता है, जबकि कमजोर चरित्रों के कारण उत्कृष्ट कथानक भी प्रभावहीन हो सकता है.

चरित्र निर्माण का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि इसके माध्यम से कथा का विकास संभव होता है. कहानी की घटनाएँ पात्रों के निर्णयों, कार्यों, इच्छाओं और संघर्षों के कारण आगे बढ़ती हैं. प्रत्येक पात्र का कोई न कोई उद्देश्य होता है और उसी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए वह विभिन्न परिस्थितियों का सामना करता है. उसके प्रयास, सफलताएँ और असफलताएँ ही कथा को रोचक बनाती हैं. इस प्रकार पात्र कथा के विकास के प्रमुख आधार बन जाते हैं.

चरित्र निर्माण का दूसरा महत्त्वपूर्ण पक्ष दर्शकों के साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करना है. जब कोई पात्र स्वाभाविक और यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तब दर्शक उसके जीवन से स्वयं को जोड़ने लगते हैं. वे उसके सुख-दुःख, आशाओं, निराशाओं, संघर्षों और उपलब्धियों को महसूस करते हैं. यही भावनात्मक जुड़ाव दर्शकों को कथा के साथ अंत तक बनाए रखता है. जिन पात्रों से दर्शक गहराई से जुड़ जाते हैं, वे लंबे समय तक उनकी स्मृति में बने रहते हैं.

चरित्र निर्माण सामाजिक और सांस्कृतिक यथार्थ को अभिव्यक्त करने का भी महत्त्वपूर्ण माध्यम है. पात्र समाज के विभिन्न वर्गों, समुदायों, परंपराओं और विचारधाराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं. उनके माध्यम से लेखक सामाजिक समस्याओं, मानवीय मूल्यों, सांस्कृतिक मान्यताओं तथा समकालीन परिस्थितियों को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सकता है. इस प्रकार पात्र केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहते, बल्कि समाज और जीवन की वास्तविकताओं को समझने का माध्यम भी बन जाते हैं.

चरित्र निर्माण का महत्त्व इस दृष्टि से भी है कि इसके माध्यम से लेखक अपने विचारों और संदेशों को दर्शकों तक पहुँचाता है. अनेक बार किसी सामाजिक, नैतिक या सांस्कृतिक संदेश को सीधे प्रस्तुत करने की अपेक्षा पात्रों के अनुभवों और व्यवहार के माध्यम से प्रस्तुत करना अधिक प्रभावशाली सिद्ध होता है. जब दर्शक किसी पात्र के संघर्ष और उसके परिणामों को देखते हैं, तब वे उस संदेश को अधिक सहजता और गहराई से ग्रहण करते हैं.

प्रभावशाली चरित्र किसी रचना को स्थायित्व प्रदान करते हैं. साहित्य, रंगमंच और सिनेमा के इतिहास में अनेक ऐसे पात्र हुए हैं जो अपनी कथा से आगे बढ़कर समाज की स्मृति का हिस्सा बन गए. लोग कई बार पूरी कहानी भूल जाते हैं, किंतु उसके प्रमुख पात्रों को वर्षों तक याद रखते हैं. यह चरित्र निर्माण की सफलता और उसके महत्त्व का सबसे बड़ा प्रमाण है.

आधुनिक समय में चरित्र निर्माण का महत्त्व और भी बढ़ गया है. आज के दर्शक केवल घटनाओं में रुचि नहीं रखते, बल्कि वे पात्रों की मनोवैज्ञानिक गहराई, आंतरिक संघर्षों और मानवीय जटिलताओं को भी समझना चाहते हैं. इसलिए आधुनिक पटकथा लेखन में बहुआयामी और यथार्थवादी पात्रों के निर्माण पर विशेष बल दिया जाता है. ऐसे पात्र दर्शकों को अधिक विश्वसनीय और जीवन के निकट प्रतीत होते हैं.

3.5 पात्रों के प्रकार

पटकथा लेखन में पात्रों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान होता है. किसी भी कथा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रस्तुत पात्र कितने प्रभावशाली, स्वाभाविक और उद्देश्यपूर्ण हैं. विभिन्न कथाओं और परिस्थितियों के अनुसार पात्रों का स्वरूप, भूमिका और महत्त्व भी अलग-अलग होता है. कुछ पात्र कथा के केंद्र में होते हैं, कुछ संघर्ष उत्पन्न करते हैं, कुछ मुख्य पात्र की सहायता करते हैं और कुछ कथा में मनोरंजन अथवा भावनात्मक वातावरण का निर्माण करते हैं. इसी आधार पर पात्रों को विभिन्न प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है.

3.5.1 प्रमुख पात्र

प्रमुख पात्र वह होता है जिसके इर्द-गिर्द पूरी कथा का विकास होता है. कथा की अधिकांश घटनाएँ उसके जीवन, उद्देश्यों, संघर्षों और अनुभवों से जुड़ी होती हैं. दर्शकों का ध्यान मुख्य रूप से इसी पात्र पर केंद्रित रहता है तथा वे उसकी यात्रा के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं. प्रमुख पात्र कथा को दिशा प्रदान करता है और उसके निर्णयों का प्रभाव अन्य पात्रों तथा घटनाओं पर भी पड़ता है. एक प्रभावशाली प्रमुख पात्र पूरी पटकथा को जीवंत और आकर्षक बना देता है. स्वतंत्रता सेनानी, संघर्षशील युवक, समाज सुधारक अथवा आदर्शवादी शिक्षक जैसे पात्र अनेक कथाओं में प्रमुख पात्र के रूप में दिखाई देते हैं.

3.5.2 नायक

नायक वह पात्र होता है जो सामान्यतः सकारात्मक गुणों से युक्त होता है तथा कथा के उद्देश्य की प्राप्ति के लिए संघर्ष करता है. वह सत्य, न्याय, नैतिकता और मानवीय मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है. भारतीय साहित्य और सिनेमा में नायक को लंबे समय तक आदर्श व्यक्तित्व के रूप में प्रस्तुत किया जाता रहा है. वह कठिन परिस्थितियों का साहसपूर्वक सामना करता है तथा बाधाओं के बावजूद अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ता रहता है. आधुनिक पटकथाओं में नायक को पूर्णतः आदर्श रूप में प्रस्तुत करने के स्थान पर अधिक यथार्थवादी रूप दिया जाता है, जिसमें उसकी कमजोरियाँ, भय और आंतरिक संघर्ष भी दिखाई देते हैं. इससे उसका चरित्र अधिक विश्वसनीय और मानवीय बन जाता है.

3.5.3 प्रतिनायक या खलनायक

प्रतिनायक अथवा खलनायक वह पात्र होता है जो नायक के मार्ग में बाधाएँ उत्पन्न करता है और कथा में संघर्ष तथा तनाव का निर्माण करता है. उसकी उपस्थिति कथा को रोचक और गतिशील बनाती है. यदि कथा में प्रभावशाली खलनायक न हो तो नायक का संघर्ष भी कमजोर प्रतीत होने लगता है. सामान्यतः खलनायक स्वार्थ, शक्ति, लालच, प्रतिशोध या व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा से प्रेरित होकर कार्य करता है. आधुनिक पटकथाओं में खलनायक को केवल नकारात्मक व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत नहीं किया जाता, बल्कि उसके व्यवहार और विचारों के पीछे के कारणों को भी दिखाया जाता है. इससे उसका चरित्र अधिक गहराई और जटिलता प्राप्त करता है.

3.5.4 सहायक पात्र

सहायक पात्र वे होते हैं जो मुख्य पात्र के व्यक्तित्व को उभारने और कथा को विस्तार प्रदान करने में सहायता करते हैं. यद्यपि वे कथा के केंद्र में नहीं होते, फिर भी उनके बिना

कहानी अधूरी प्रतीत होती है. मित्र, परिवार के सदस्य, गुरु, सहकर्मी तथा पड़ोसी जैसे पात्र प्रायः सहायक पात्रों की भूमिका निभाते हैं. ये पात्र नायक को भावनात्मक, सामाजिक अथवा व्यावहारिक सहायता प्रदान करते हैं तथा कथा में वास्तविकता और गहराई का समावेश करते हैं. कई बार सहायक पात्र हास्य, संवेदना अथवा प्रेरणा का स्रोत भी बनते हैं.

3.5.5 स्थिर पात्र

स्थिर पात्र वे होते हैं जिनके स्वभाव, विचारों और व्यवहार में कथा के प्रारंभ से अंत तक कोई विशेष परिवर्तन नहीं आता. वे पूरे कथानक में लगभग समान बने रहते हैं. ऐसे पात्रों की विशेषता यह होती है कि वे परिस्थितियों से अधिक प्रभावित नहीं होते और अपने मूल स्वभाव को बनाए रखते हैं. कई बार आदर्शवादी, सिद्धांतनिष्ठ या परंपरागत पात्र इसी श्रेणी में आते हैं. स्थिर पात्र कथा में संतुलन और स्थायित्व बनाए रखने का कार्य करते हैं.

3.5.6 गतिशील पात्र

गतिशील पात्र वे होते हैं जिनके व्यक्तित्व में कथा के दौरान परिवर्तन और विकास दिखाई देता है. अनुभव, संघर्ष और परिस्थितियाँ उनकी सोच तथा व्यवहार को प्रभावित करती हैं. वे अपनी गलतियों से सीखते हैं और समय के साथ अधिक परिपक्व बनते हैं. उदाहरण के लिए कोई डरपोक व्यक्ति साहसी बन सकता है या कोई स्वार्थी व्यक्ति संवेदनशील बन सकता है. आधुनिक पटकथाओं में गतिशील पात्रों को विशेष महत्त्व दिया जाता है क्योंकि वे जीवन की वास्तविकताओं के अधिक निकट होते हैं और दर्शकों को अधिक प्रभावित करते हैं.

3.5.7 प्रतीकात्मक पात्र

प्रतीकात्मक पात्र किसी विशेष विचार, भावना, वर्ग या सामाजिक स्थिति का प्रतिनिधित्व करते हैं. इनके माध्यम से लेखक गहरे सामाजिक, सांस्कृतिक और वैचारिक संदेश प्रस्तुत करता है. उदाहरण के लिए किसान श्रम और संघर्ष का, सैनिक साहस और देशभक्ति का तथा माँ प्रेम, त्याग और ममता का प्रतीक मानी जाती है. ऐसे पात्र कथा को केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं रखते, बल्कि उसे व्यापक सामाजिक और मानवीय अर्थ प्रदान करते हैं.

3.5.8 हास्य पात्र

हास्य पात्रों का मुख्य उद्देश्य कथा में मनोरंजन और हल्कापन उत्पन्न करना होता है. ये पात्र अपने चुटीले संवादों, रोचक व्यवहार और हास्यपूर्ण परिस्थितियों के माध्यम से दर्शकों का मनोरंजन करते हैं. गंभीर कथाओं में भी हास्य पात्र मानसिक तनाव को कम करने का कार्य करते हैं और कथा को संतुलित बनाए रखते हैं. उनकी उपस्थिति दर्शकों की रुचि बनाए रखने में सहायक होती है तथा कथा को अधिक आकर्षक बनाती है.

3.5.9 आदर्श एवं यथार्थवादी पात्र

पात्रों को उनके स्वभाव और प्रस्तुति के आधार पर आदर्श तथा यथार्थवादी पात्रों में भी वर्गीकृत किया जाता है. आदर्श पात्र नैतिक मूल्यों, त्याग, सत्यनिष्ठा और उच्च आदर्शों का प्रतिनिधित्व करते हैं. वे समाज के लिए प्रेरणा का स्रोत बनते हैं. इसके विपरीत यथार्थवादी पात्र सामान्य मनुष्य की तरह गुणों और कमियों दोनों से युक्त होते हैं. वे मानसिक संघर्षों, कमजोरियों और मानवीय सीमाओं के साथ प्रस्तुत किए जाते हैं. आधुनिक पटकथाओं में यथार्थवादी पात्रों को अधिक महत्त्व दिया जाता है क्योंकि दर्शक उनसे अधिक निकटता और जुड़ाव अनुभव करते हैं.

3.5.10 स्त्री एवं पुरुष पात्र

पटकथा में स्त्री और पुरुष दोनों पात्रों की समान रुप से महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है.

दोनों मिलकर कथा को संतुलन और पूर्णता प्रदान करते हैं. परंपरागत कथाओं में स्त्री पात्रों को प्रायः सीमित भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जाता था, किंतु आधुनिक समय में यह स्थिति बदल चुकी है. आज स्त्री पात्र आत्मनिर्भर, नेतृत्वक्षम, संघर्षशील और सामाजिक रूप से जागरूक रूप में दिखाई देते हैं. वे केवल सहायक भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अनेक कथाओं में केंद्रीय भूमिका निभाते हैं. इसी प्रकार आधुनिक पुरुष पात्र भी पहले की अपेक्षा अधिक संवेदनशील, भावनात्मक और यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं. स्त्री और पुरुष दोनों पात्रों की संतुलित प्रस्तुति कथा को अधिक विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाती है.

इस प्रकार पटकथा लेखन में विभिन्न प्रकार के पात्र अपनी-अपनी भूमिका निभाते हैं. प्रत्येक पात्र कथा की संरचना, विकास और प्रभाव को किसी न किसी रूप में प्रभावित करता है. एक सफल पटकथा वही मानी जाती है जिसमें पात्रों का चयन कथा की आवश्यकता के अनुरूप किया गया हो तथा प्रत्येक पात्र अपने उद्देश्य और भूमिका को प्रभावी ढंग से निभाता हो.

3.6 चरित्र की विशेषताएँ

पटकथा लेखन में चरित्र केवल कथा को आगे बढ़ाने का माध्यम नहीं होता, बल्कि वही कथा का प्राण तत्व होता है. किसी भी पात्र की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें कितनी स्वाभाविकता, विश्वसनीयता और मानवीय गहराई है. यदि पात्र केवल घटनाओं का वाहक बनकर रह जाए और उसमें जीवन का यथार्थ प्रतिबिंबित न हो, तो वह दर्शकों के मन पर स्थायी प्रभाव नहीं छोड़ पाता. एक प्रभावशाली चरित्र वह होता है जो अपने व्यवहार, विचारों, संघर्षों और भावनाओं के माध्यम से वास्तविक जीवन के व्यक्ति जैसा प्रतीत हो. इसी कारण चरित्र निर्माण के दौरान कुछ विशेष गुणों का होना आवश्यक माना जाता है.

चरित्र की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी स्वाभाविकता है. पात्र का व्यवहार, भाषा, विचार और प्रतिक्रियाएँ उसकी परिस्थितियों तथा सामाजिक पृष्ठभूमि के अनुरूप होनी चाहिए. जब कोई पात्र वास्तविक जीवन की तरह व्यवहार करता है, तब दर्शक उसे सहज रूप से स्वीकार कर लेते हैं. स्वाभाविकता पात्र को कृत्रिमता से बचाती है और उसे जीवंत बनाती है. लेखक को इस बात का ध्यान रखना होता है कि पात्र की भाषा, रहन-सहन, सोच और जीवन-दृष्टि उसकी सामाजिक स्थिति और परिवेश के अनुरूप हो.

स्वाभाविकता के साथ-साथ विश्वसनीयता भी चरित्र का आवश्यक गुण है. विश्वसनीयता का अर्थ है कि दर्शक पात्र के कार्यों, निर्णयों और व्यवहार पर विश्वास कर सकें. यदि कोई पात्र बिना किसी तार्किक कारण के अपने स्थापित स्वभाव के विपरीत व्यवहार करने लगे, तो उसकी विश्वसनीयता समाप्त हो जाती है. इसलिए पात्र की प्रत्येक क्रिया और प्रतिक्रिया उसके व्यक्तित्व तथा परिस्थितियों से जुड़ी हुई होनी चाहिए. विश्वसनीय पात्र दर्शकों को वास्तविक जीवन के व्यक्तियों की याद दिलाते हैं और उनके साथ भावनात्मक संबंध स्थापित करने में सफल होते हैं.

प्रत्येक प्रभावशाली पात्र का कोई न कोई स्पष्ट उद्देश्य अवश्य होता है. यही उद्देश्य उसके जीवन को दिशा देता है और कथा को आगे बढ़ाने का कार्य करता है. पात्र का लक्ष्य चाहे व्यक्तिगत सफलता प्राप्त करना हो, परिवार की रक्षा करना हो, प्रेम प्राप्त करना हो अथवा किसी सामाजिक परिवर्तन के लिए संघर्ष करना हो, उसका उद्देश्य ही उसके कार्यों और निर्णयों का आधार बनता है. उद्देश्य के अभाव में पात्र निष्क्रिय और प्रभावहीन प्रतीत होता है. स्पष्ट उद्देश्य कथा में रोचकता और गति बनाए रखने में सहायक होता है.

संघर्षशीलता भी चरित्र की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है. संघर्ष के बिना न तो पात्र का विकास संभव है और न ही कथा में रोचकता उत्पन्न हो सकती है. जब पात्र किसी समस्या, विरोध, सामाजिक दबाव या आंतरिक द्वंद्व का सामना करता है, तब उसके व्यक्तित्व के वास्तविक पक्ष सामने आते हैं. संघर्ष उसके साहस, धैर्य, आत्मविश्वास और मानसिक शक्ति की परीक्षा लेता है. यही संघर्ष पात्र को सामान्य से असाधारण बनाता है तथा दर्शकों को उसके साथ जोड़ता है.

एक सफल चरित्र में भावनात्मक गहराई का होना भी आवश्यक है. केवल बाहरी घटनाएँ और क्रियाएँ किसी पात्र को प्रभावशाली नहीं बनातीं, बल्कि उसकी आंतरिक भावनाएँ उसे मानवीय स्वरूप प्रदान करती हैं. प्रेम, करुणा, भय, क्रोध, आशा, निराशा, त्याग और संवेदना जैसी भावनाएँ पात्र को वास्तविक जीवन के निकट ले आती हैं. जब दर्शक किसी पात्र की भावनाओं को महसूस करने लगते हैं, तब उनके मन में उसके प्रति सहानुभूति और जुड़ाव उत्पन्न होता है. भावनात्मक गहराई ही किसी पात्र को यादगार बनाती है.

चरित्र की विकासशीलता भी एक महत्त्वपूर्ण गुण है. जीवन की भाँति कथा में भी परिस्थितियाँ निरंतर बदलती रहती हैं और इन परिस्थितियों का प्रभाव पात्रों पर पड़ता है. एक अच्छा पात्र समय, अनुभव और संघर्ष के साथ विकसित होता है. उसके विचारों, व्यवहार और दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देता है. यह परिवर्तन सकारात्मक भी हो सकता है और नकारात्मक भी. विकासशील पात्र दर्शकों को जीवन की वास्तविक यात्रा का अनुभव कराते हैं तथा कथा को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं.

संवाद क्षमता भी चरित्र की प्रमुख विशेषताओं में सम्मिलित है. संवादों के माध्यम से पात्र अपने विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोण को व्यक्त करता है. उसके संवाद उसकी शिक्षा, सामाजिक स्तर, मानसिकता और व्यक्तित्व का परिचय देते हैं. प्रत्येक पात्र की भाषा और संवाद शैली उसकी पृष्ठभूमि के अनुरूप होनी चाहिए. प्रभावशाली संवाद पात्र को दर्शकों के मन में विशिष्ट पहचान प्रदान करते हैं और उसके चरित्र को अधिक सशक्त बनाते हैं.

सामाजिक एवं सांस्कृतिक अनुकूलता भी चरित्र की विश्वसनीयता को बढ़ाती है. प्रत्येक पात्र किसी न किसी सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ा होता है. इसलिए उसके व्यवहार, पहनावे, भाषा और विचारों में उस परिवेश की झलक दिखाई देनी चाहिए. जब पात्र अपने सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों के अनुरूप प्रस्तुत किया जाता है, तब वह अधिक यथार्थवादी और प्रभावशाली प्रतीत होता है.

प्रत्येक पात्र में कुछ न कुछ विशिष्टता भी होनी चाहिए जो उसे अन्य पात्रों से अलग पहचान प्रदान करे. यह विशिष्टता उसके बोलने के तरीके, व्यवहार, आदतों, विचारों या व्यक्तित्व के किसी विशेष गुण के रूप में दिखाई दे सकती है. यही विशेषता पात्र को दर्शकों की स्मृति में लंबे समय तक बनाए रखती है और उसे यादगार बनाती है.

आधुनिक पटकथा लेखन में मनोवैज्ञानिक गहराई को भी अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है. आज के दर्शक केवल पात्रों की बाहरी गतिविधियों को नहीं, बल्कि उनके मन में चल रहे विचारों, इच्छाओं, भय, असुरक्षाओं और आंतरिक संघर्षों को भी समझना चाहते हैं. मनोवैज्ञानिक रूप से समृद्ध पात्र अधिक जटिल, यथार्थवादी और प्रभावशाली प्रतीत होते हैं. वे मानव जीवन की जटिलताओं को गहराई से अभिव्यक्त करते हैं और दर्शकों को सोचने के लिए प्रेरित करते हैं.

इस प्रकार स्वाभाविकता, विश्वसनीयता, स्पष्ट उद्देश्य, संघर्षशीलता, भावनात्मक गहराई, विकासशीलता, संवाद क्षमता, सामाजिक-सांस्कृतिक अनुकूलता, विशिष्टता तथा मनोवैज्ञानिक गहराई किसी भी प्रभावशाली चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ हैं. इन गुणों के माध्यम से ही पात्र जीवंत, यथार्थवादी और स्मरणीय बनते हैं तथा कथा को प्रभावशाली स्वरूप प्रदान करते हैं.

3.7 चरित्र निर्माण की विधियाँ

पटकथा लेखन में चरित्र निर्माण एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण और रचनात्मक प्रक्रिया है. किसी भी पात्र को केवल नाम, रूप और पहचान प्रदान कर देना पर्याप्त नहीं होता, बल्कि उसके व्यक्तित्व को इस प्रकार विकसित करना आवश्यक होता है कि वह दर्शकों के लिए जीवंत, विश्वसनीय और प्रभावशाली बन सके. चरित्र निर्माण की विभिन्न विधियाँ लेखक को यह अवसर प्रदान करती हैं कि वह पात्रों के स्वभाव, विचार, भावनाओं, मानसिकता तथा जीवन-दृष्टि को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत कर सके. इन विधियों के माध्यम से पात्र केवल कथा का हिस्सा नहीं रहते, बल्कि वे दर्शकों के मन में अपनी अलग पहचान स्थापित कर लेते हैं.

चरित्र निर्माण की सबसे प्रमुख विधि संवाद है. संवाद पात्र के व्यक्तित्व को अभिव्यक्त करने का सबसे प्रभावशाली माध्यम माना जाता है. पात्र जिस प्रकार बोलता है, जिन शब्दों का चयन करता है और जिस भाषा शैली का प्रयोग करता है, उससे उसकी शिक्षा, सामाजिक स्थिति, मानसिकता और दृष्टिकोण का परिचय प्राप्त होता है. संवाद केवल सूचना देने का माध्यम नहीं होते, बल्कि वे पात्र के आंतरिक भावों और विचारों को भी प्रकट करते हैं. एक साहसी पात्र के संवादों में आत्मविश्वास दिखाई देता है, जबकि भयभीत या असुरक्षित पात्र की भाषा में संकोच और अस्थिरता दिखाई दे सकती है. इस प्रकार संवाद पात्र की पहचान को स्पष्ट और प्रभावशाली बनाते हैं.

चरित्र निर्माण की दूसरी महत्त्वपूर्ण विधि पात्र की क्रियाएँ और व्यवहार हैं. कई बार पात्र के कार्य उसके शब्दों की अपेक्षा अधिक प्रभावशाली सिद्ध होते हैं. व्यक्ति जैसा सोचता है, उससे अधिक महत्त्वपूर्ण यह होता है कि वह व्यवहार में क्या करता है. यदि कोई पात्र दूसरों की सहायता करता है, तो उसका दयालु और संवेदनशील स्वभाव प्रकट होता है. इसी प्रकार यदि कोई पात्र कठिन परिस्थितियों में भी अपने सिद्धांतों पर अडिग रहता है, तो उसका साहस और नैतिक दृढ़ता स्पष्ट होती है. पात्र की क्रियाएँ उसके वास्तविक व्यक्तित्व को सामने लाती हैं और दर्शकों को उसके चरित्र का सही आकलन करने में सहायता करती हैं.

चरित्र निर्माण की एक अन्य प्रभावशाली विधि अन्य पात्रों के माध्यम से किसी पात्र का परिचय कराना है. अनेक बार लेखक किसी पात्र के गुणों, कमियों या विशेषताओं को सीधे प्रस्तुत करने के बजाय अन्य पात्रों की टिप्पणियों, प्रतिक्रियाओं और विचारों के माध्यम से उजागर करता है. जब कोई पात्र दूसरे पात्र की ईमानदारी, साहस या प्रभाव की चर्चा करता है, तो दर्शकों के मन में उस पात्र के प्रति एक विशेष छवि निर्मित होती है. इस विधि से पात्र के प्रति उत्सुकता और रहस्य भी बना रहता है तथा उसका प्रभाव अधिक गहराई से स्थापित होता है.

वातावरण और परिवेश भी चरित्र निर्माण की एक महत्त्वपूर्ण विधि है. प्रत्येक पात्र किसी न किसी सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और पारिवारिक वातावरण में विकसित होता है. इसलिए उसके व्यवहार, सोच, भाषा और जीवन-दृष्टि पर उस वातावरण का प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. लेखक वातावरण के माध्यम से यह दर्शाता है कि पात्र किन परिस्थितियों में पला-बढ़ा है और उन परिस्थितियों ने उसके व्यक्तित्व को किस प्रकार आकार दिया है. ग्रामीण परिवेश में विकसित पात्र और महानगरीय वातावरण में विकसित पात्र के व्यवहार, दृष्टिकोण तथा जीवनशैली में स्वाभाविक रूप से अंतर दिखाई देता है. इस प्रकार वातावरण पात्र को यथार्थवादी और विश्वसनीय बनाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है.

आत्मकथन अथवा आत्मसंवाद भी चरित्र निर्माण की एक प्रभावशाली विधि है. इस विधि में पात्र स्वयं अपने विचारों, भावनाओं, अनुभवों और मानसिक संघर्षों को व्यक्त करता है. इसके माध्यम से दर्शकों को पात्र के आंतरिक संसार को समझने का अवसर मिलता है. कई बार

पात्र के मन में चल रहे द्वंद्व, उसकी आशंकाएँ, इच्छाएँ और भावनाएँ बाहरी व्यवहार से स्पष्ट नहीं हो पातीं. ऐसी स्थिति में आत्मकथन दर्शकों को उसके मन की गहराइयों से परिचित कराता है. आधुनिक फिल्मों, नाटकों और वेब-सीरीज़ में इस तकनीक का व्यापक उपयोग किया जाता है क्योंकि यह पात्र और दर्शक के बीच भावनात्मक निकटता स्थापित करती है.

चरित्र निर्माण में संघर्ष की प्रस्तुति भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जाती है. संघर्ष किसी भी पात्र की वास्तविक शक्ति, कमजोरी और मानसिक स्थिति को उजागर करता है. जब पात्र किसी चुनौती, विरोध, सामाजिक दबाव या आंतरिक द्वंद्व का सामना करता है, तब उसका वास्तविक चरित्र सामने आता है. संघर्ष के माध्यम से लेखक यह दिखाता है कि पात्र कठिन परिस्थितियों में किस प्रकार निर्णय लेता है और स्वयं को कैसे विकसित करता है. इसी प्रक्रिया से पात्र अधिक जीवंत और प्रभावशाली बनता है.

लेखक प्रतीकों और संकेतों का प्रयोग करके भी चरित्र निर्माण करता है. किसी पात्र का विशेष पहनावा, व्यवहार, आदत, वस्तु या जीवनशैली उसके व्यक्तित्व का प्रतीक बन सकती है. कई बार बिना प्रत्यक्ष वर्णन के भी लेखक ऐसे संकेतों के माध्यम से पात्र के स्वभाव और मनोवृत्ति को स्पष्ट कर देता है. यह विधि विशेष रूप से साहित्यिक और कलात्मक पटकथाओं में प्रभावी मानी जाती है.

आधुनिक पटकथा लेखन में मनोवैज्ञानिक प्रस्तुति को भी चरित्र निर्माण की एक महत्त्वपूर्ण विधि के रूप में स्वीकार किया गया है. इसमें पात्र के बाहरी व्यवहार के साथ-साथ उसके आंतरिक विचारों, मानसिक संघर्षों, इच्छाओं, भय और असुरक्षाओं को भी प्रस्तुत किया जाता है. इससे पात्र अधिक बहुआयामी और यथार्थवादी प्रतीत होता है. आधुनिक दर्शक ऐसे पात्रों को अधिक पसंद करते हैं जिनके व्यक्तित्व में जटिलता और गहराई दिखाई देती है.

इस प्रकार संवाद, क्रियाएँ, अन्य पात्रों की दृष्टि, वातावरण, आत्मकथन, संघर्ष, प्रतीकात्मक प्रस्तुति तथा मनोवैज्ञानिक विश्लेषण चरित्र निर्माण की प्रमुख विधियाँ हैं. इन विधियों का संतुलित और प्रभावी प्रयोग किसी भी पात्र को जीवंत, विश्वसनीय और स्मरणीय बना सकता है. एक सफल पटकथा लेखक इन सभी तकनीकों का उचित उपयोग करके ऐसे पात्रों का निर्माण करता है जो कथा को प्रभावशाली बनाने के साथ-साथ दर्शकों के मन में स्थायी स्थान भी बना लेते हैं.

- **बोध प्रश्न.**

1. चरित्र निर्माण किससे संबंधित है?

   (क) संगीत — (ख) पात्रों के विकास

   (ग) प्रकाश व्यवस्था — (घ) मंच सज्जा

   उत्तर (ख) पात्रों के विकास

2. कथा का केंद्र कौन होता है?

   (क) सहायक पात्र — (ख) दर्शक

   (ग) मुख्य पात्र — (घ) लेखक

   उत्तर (ग) मुख्य पात्र

3. प्रभावशाली पात्र क्या उत्पन्न करते हैं?

   (क) भ्रम — (ख) रुचि और भावनात्मक जुड़ाव

   (ग) शोर — (घ) भय

उत्तर (ख) रुचि और भावनात्मक जुड़ाव

4. चरित्र निर्माण का मुख्य उद्देश्य क्या है?

(क) केवल मनोरंजन	(ख) कथा को प्रभावशाली बनाना
(ग) मंच सजाना	(घ) गीत प्रस्तुत करना

उत्तर (ख) कथा को प्रभावशाली बनाना

5. यथार्थवादी पात्र कहानी को क्या बनाते हैं?

(क) जटिल	(ख) कमजोर
(ग) विश्वसनीय	(घ) हास्यास्पद

उत्तर (ग) विश्वसनीय

3.8 चरित्र और कथा का संबंध

चरित्र और कथा का संबंध अत्यंत घनिष्ठ तथा अविभाज्य होता है. किसी भी कथा की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि उसमें प्रस्तुत पात्र और घटनाएँ किस प्रकार एक-दूसरे से जुड़ी हुई हैं. कथा और चरित्र को अलग-अलग करके नहीं देखा जा सकता, क्योंकि दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं. बिना पात्रों के कथा केवल घटनाओं का विवरण बनकर रह जाती है और बिना कथा के पात्र निष्क्रिय एवं उद्देश्यहीन प्रतीत होते हैं. इसलिए प्रभावशाली पटकथा के लिए चरित्र और कथा के बीच संतुलन तथा सामंजस्य का होना अत्यंत आवश्यक है.

कथा का निर्माण मूलतः पात्रों की इच्छाओं, उद्देश्यों, संघर्षों और निर्णयों से होता है. प्रत्येक पात्र किसी न किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए प्रयास करता है और उसी प्रयास के दौरान विभिन्न घटनाएँ जन्म लेती हैं. पात्रों की आकांक्षाएँ और चुनौतियाँ ही कथा को गति प्रदान करती हैं. यदि किसी पात्र का कोई उद्देश्य न हो, तो उसके कार्यों में दिशा नहीं होगी और कथा भी प्रभावहीन हो जाएगी. इस प्रकार पात्र ही कथा के विकास का आधार बनते हैं और उनके माध्यम से कहानी आगे बढ़ती है.

दूसरी ओर कथा भी पात्रों के विकास में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है. कथा में आने वाली परिस्थितियाँ, संघर्ष, सफलताएँ और असफलताएँ पात्रों के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं. जब कोई पात्र कठिन परिस्थितियों का सामना करता है, तब उसके विचारों, व्यवहार और दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है. यही परिवर्तन उसके विकास को दर्शाता है. कथा के आरंभ में जो पात्र जैसा होता है, वह अंत तक वैसा ही बना रहे, यह आवश्यक नहीं है. जीवन की तरह कथा भी पात्रों को अनुभव प्रदान करती है और उन्हीं अनुभवों के माध्यम से उनका व्यक्तित्व विकसित होता है.

चरित्र और कथा के संबंध में संघर्ष की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है. संघर्ष वह तत्व है जो दोनों को एक-दूसरे से जोड़ता है. जब पात्र किसी समस्या, विरोध या चुनौती का सामना करता है, तभी कथा में रोचकता और गतिशीलता उत्पन्न होती है. संघर्ष के माध्यम से पात्र की वास्तविक शक्तियाँ, कमजोरियाँ, भावनाएँ और मानसिकता सामने आती हैं. साथ ही यही संघर्ष कथा को रोमांचक और प्रभावशाली बनाता है. इसलिए संघर्ष को चरित्र और कथा के बीच संबंध स्थापित करने वाला प्रमुख तत्व माना जाता है.

कथा का भावनात्मक प्रभाव भी पात्रों के माध्यम से ही संभव होता है. दर्शक सामान्यतः घटनाओं की अपेक्षा पात्रों से अधिक जुड़ते हैं. जब कोई पात्र दुःख, संघर्ष, प्रेम, त्याग या सफलता का अनुभव करता है, तो दर्शक भी उन भावनाओं को महसूस करते हैं. यदि कथा में प्रभावशाली

पात्र न हों, तो घटनाएँ केवल सूचना बनकर रह जाती हैं और दर्शकों पर अपेक्षित प्रभाव नहीं छोड़ पातीं. इसलिए पात्र कथा को भावनात्मक गहराई और मानवीय संवेदनाएँ प्रदान करते हैं.

प्रत्येक कथा की प्रकृति और उद्देश्य के अनुसार पात्रों का चयन भी किया जाता है. ऐतिहासिक कथाओं में वीरता और नेतृत्व से युक्त पात्रों की आवश्यकता होती है, जबकि सामाजिक कथाओं में सामान्य जीवन से जुड़े यथार्थवादी पात्र अधिक उपयुक्त होते हैं. इसी प्रकार हास्य कथाओं में विनोदी पात्रों का विशेष महत्त्व होता है. यदि पात्र कथा की प्रकृति के अनुरूप न हों, तो पूरी रचना अस्वाभाविक और कमजोर प्रतीत होने लगती है. इसलिए कथा और पात्रों के बीच सामंजस्य स्थापित करना लेखक की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी होती है.

पात्रों के निर्णय और क्रियाएँ भी कथा को दिशा प्रदान करते हैं. कई बार किसी पात्र का एक छोटा-सा निर्णय पूरी कहानी का स्वरुप बदल देता है. नायक का सत्य का साथ देना, खलनायक का षड्यंत्र रचना या किसी पात्र का त्याग करना जैसी घटनाएँ कथा में नए मोड़ उत्पन्न करती हैं. इस प्रकार कथा का विकास पात्रों की क्रियाओं और निर्णयों पर निर्भर करता है. यही कारण है कि प्रभावशाली पात्रों के बिना प्रभावशाली कथा की कल्पना नहीं की जा सकती.

सफल पटकथा में चरित्र और कथानक के बीच पूर्ण एकता दिखाई देती है. पात्रों की क्रियाएँ कथा को प्रभावित करती हैं और कथा की परिस्थितियाँ पात्रों को विकसित करती हैं. दोनों के बीच यह परस्पर संबंध ही रचना को स्वाभाविक, विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाता है. जब चरित्र और कथा एक-दूसरे के साथ संतुलित रूप से आगे बढ़ते हैं, तब दर्शकों का भावनात्मक जुड़ाव बढ़ता है और रचना अधिक प्रभावशाली बन जाती है.

अतः कहा जा सकता है कि चरित्र और कथा एक-दूसरे के बिना अधूरे हैं. पात्र कथा को जीवन प्रदान करते हैं और कथा पात्रों को विकास का अवसर देती है. दोनों के समन्वय से ही एक सशक्त, रोचक और स्मरणीय पटकथा का निर्माण संभव होता है.

3.9 भारतीय सिनेमा और नाटक में चरित्र निर्माण

भारतीय सिनेमा और नाटक में चरित्र निर्माण की एक समृद्ध और गौरवशाली परंपरा रही है. भारतीय सांस्कृतिक विरासत, धार्मिक मान्यताओं, सामाजिक मूल्यों तथा ऐतिहासिक अनुभवों ने यहाँ के चरित्र निर्माण को विशेष स्वरुप प्रदान किया है. भारतीय कथाओं में पात्र केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहे हैं, बल्कि वे समाज के आदर्शों, नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक परंपराओं और मानवीय भावनाओं के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किए जाते रहे हैं. यही कारण है कि भारतीय सिनेमा और रंगमंच में निर्मित अनेक पात्र समय की सीमाओं को पार करके लोगों की स्मृति का स्थायी हिस्सा बन गए हैं.

भारतीय नाट्य परंपरा में चरित्र निर्माण की अवधारणा अत्यंत प्राचीन है. संस्कृत नाटकों और प्राचीन भारतीय रंगमंच में पात्रों का निर्माण विशेष नियमों और सिद्धांतों के आधार पर किया जाता था. पात्रों के स्वभाव, व्यवहार, भाषा और सामाजिक स्थिति को ध्यान में रखते हुए उनका स्वरुप निर्धारित किया जाता था. नाट्यशास्त्र में भी पात्रों के गुणों, प्रकारों और उनके प्रस्तुतीकरण के संबंध में विस्तृत निर्देश दिए गए हैं. इस परंपरा ने भारतीय नाटक और बाद में विकसित हुए भारतीय सिनेमा को गहराई से प्रभावित किया.

भारतीय सिनेमा और नाटकों में पौराणिक पात्रों का विशेष महत्त्व रहा है. राम, सीता, कृष्ण, अर्जुन, हनुमान और द्रौपदी जैसे पात्र भारतीय समाज में आदर्श, त्याग, साहस, धर्म और कर्तव्यनिष्ठा के प्रतीक माने जाते हैं. इन पात्रों के माध्यम से केवल कथा का विकास नहीं किया गया, बल्कि समाज को नैतिक शिक्षा और जीवन-मूल्यों का संदेश भी दिया गया.

पौराणिक पात्रों की लोकप्रियता का मुख्य कारण यह है कि वे भारतीय संस्कृति और जनमानस से गहराई से जुड़े हुए हैं.

सामाजिक नाटकों और फिल्मों में चरित्र निर्माण का स्वरूप कुछ भिन्न दिखाई देता है. यहाँ पात्रों को समाज की वास्तविक परिस्थितियों और समस्याओं से जोड़कर प्रस्तुत किया जाता है. गरीबी, बेरोजगारी, सामाजिक असमानता, जातिगत भेदभाव, स्त्री संघर्ष, शिक्षा, भ्रष्टाचार और पारिवारिक संबंधों जैसे विषयों को अभिव्यक्त करने के लिए यथार्थवादी पात्रों का निर्माण किया जाता है. ऐसे पात्र समाज के विभिन्न वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं और दर्शकों को अपनी परिस्थितियों का प्रतिबिंब दिखाई देता है. इस प्रकार सामाजिक चरित्र समाज की वास्तविकताओं को समझने और उन पर विचार करने के लिए प्रेरित करते हैं.

भारतीय सिनेमा में ऐतिहासिक पात्रों का भी विशेष महत्त्व रहा है. इतिहास पर आधारित फिल्मों और नाटकों में ऐसे पात्रों का निर्माण किया जाता है जो साहस, नेतृत्व, देशभक्ति और बलिदान के आदर्श प्रस्तुत करते हैं. इन पात्रों के माध्यम से दर्शकों को राष्ट्र के गौरवशाली इतिहास तथा महान व्यक्तित्वों के योगदान से परिचित कराया जाता है. ऐतिहासिक चरित्र केवल अतीत की घटनाओं का वर्णन नहीं करते, बल्कि वे वर्तमान पीढ़ी को प्रेरणा प्रदान करने का कार्य भी करते हैं.

समय के साथ भारतीय सिनेमा में चरित्र निर्माण की शैली में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुए हैं. प्रारंभिक फिल्मों में नायक और खलनायक को स्पष्ट रूप से अच्छे और बुरे रूप में प्रस्तुत किया जाता था. नायक आदर्शवादी, त्यागी और नैतिक मूल्यों का पालन करने वाला होता था, जबकि खलनायक नकारात्मक प्रवृत्तियों का प्रतिनिधित्व करता था. आधुनिक सिनेमा में यह विभाजन पहले की अपेक्षा कम स्पष्ट हो गया है. आज के पात्र अधिक जटिल, बहुआयामी और मनोवैज्ञानिक रूप से गहरे दिखाई देते हैं. उनमें गुण और दोष दोनों मौजूद रहते हैं, जिससे वे वास्तविक जीवन के अधिक निकट प्रतीत होते हैं.

आधुनिक भारतीय फिल्मों और वेब-सीरीज़ में पात्रों के आंतरिक संघर्षों पर विशेष ध्यान दिया जाता है. आज के पात्र केवल बाहरी चुनौतियों का सामना नहीं करते, बल्कि वे मानसिक तनाव, नैतिक दुविधाओं, सामाजिक दबावों और व्यक्तिगत असुरक्षाओं से भी जूझते हैं. इस प्रकार के चरित्र दर्शकों को अधिक यथार्थवादी और विश्वसनीय लगते हैं क्योंकि वे आधुनिक जीवन की जटिलताओं को प्रतिबिंबित करते हैं. यही कारण है कि समकालीन सिनेमा में मनोवैज्ञानिक रूप से विकसित पात्रों की लोकप्रियता लगातार बढ़ रही है.

स्त्री पात्रों के चित्रण में भी उल्लेखनीय परिवर्तन देखने को मिलता है. पहले अधिकांश फिल्मों और नाटकों में स्त्री पात्रों को सीमित और पारंपरिक भूमिकाओं में प्रस्तुत किया जाता था, किंतु आधुनिक समय में स्त्री पात्र नेतृत्व, संघर्ष, निर्णय क्षमता और आत्मनिर्भरता के साथ दिखाई देते हैं. वे केवल सहायक पात्र की भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि अनेक कथाओं में केंद्रीय भूमिका निभाते हुए कथा को दिशा प्रदान करती हैं. यह परिवर्तन भारतीय समाज में हो रहे सामाजिक और सांस्कृतिक बदलावों का भी संकेत देता है.

भारतीय सिनेमा और रंगमंच में चरित्र निर्माण का उद्देश्य केवल मनोरंजन प्रदान करना नहीं है, बल्कि समाज, संस्कृति और मानवीय जीवन की विविधताओं को अभिव्यक्त करना भी है. प्रभावशाली पात्र दर्शकों को सोचने, समझने और आत्मचिंतन करने के लिए प्रेरित करते हैं. वे समाज के आदर्शों, संघर्षों, सफलताओं और चुनौतियों का प्रतिनिधित्व करते हुए मानवीय अनुभवों को व्यापक रूप में प्रस्तुत करते हैं.

इस प्रकार भारतीय सिनेमा और नाटक में चरित्र निर्माण की परंपरा अत्यंत समृद्ध और बहुआयामी रही है. पौराणिक, ऐतिहासिक, सामाजिक और आधुनिक पात्रों के माध्यम से भारतीय

रचनाकारों ने समाज, संस्कृति और मानव जीवन के विभिन्न पक्षों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है. यही कारण है कि भारतीय सिनेमा और रंगमंच में चरित्र निर्माण को रचना की सफलता का एक प्रमुख आधार माना जाता है.

3.10 चरित्र निर्माण में लेखक की भूमिका

चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में लेखक की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण और केंद्रीय होती है. किसी भी कथा, नाटक, फिल्म या वेब-सीरीज़ में प्रस्तुत पात्र स्वयं विकसित नहीं होते, बल्कि उन्हें लेखक अपनी कल्पनाशक्ति, अनुभव, संवेदनशीलता और रचनात्मक दृष्टि के माध्यम से आकार प्रदान करता है. लेखक ही वह व्यक्ति होता है जो पात्रों को जन्म देता है, उनके व्यक्तित्व का निर्माण करता है तथा उन्हें कथा के अनुरूप विकसित करता है. इसलिए चरित्र निर्माण की सफलता काफी हद तक लेखक की प्रतिभा और दृष्टिकोण पर निर्भर करती है.

लेखक सबसे पहले पात्र की मूल अवधारणा तैयार करता है. वह यह निर्धारित करता है कि पात्र का स्वभाव कैसा होगा, उसका सामाजिक और पारिवारिक परिवेश क्या होगा, उसकी रुचियाँ, आकांक्षाएँ और जीवन के लक्ष्य क्या होंगे. इसके साथ ही लेखक यह भी तय करता है कि पात्र कथा में किस प्रकार की भूमिका निभाएगा तथा उसका अन्य पात्रों के साथ क्या संबंध होगा. इस प्रारंभिक योजना के आधार पर ही पात्र का संपूर्ण व्यक्तित्व विकसित होता है.

चरित्र निर्माण में लेखक की सूक्ष्म निरीक्षण क्षमता का विशेष महत्त्व होता है. एक सफल लेखक समाज, लोगों के व्यवहार, मानवीय संबंधों तथा जीवन की विभिन्न परिस्थितियों का गहराई से अध्ययन करता है. वह अपने आसपास के लोगों की आदतों, बोलचाल, भावनाओं और प्रतिक्रियाओं का अवलोकन करता है तथा उन्हीं अनुभवों को अपने पात्रों में रूपांतरित करता है. यही कारण है कि अच्छे लेखक द्वारा निर्मित पात्र वास्तविक जीवन के व्यक्तियों की तरह जीवंत और विश्वसनीय प्रतीत होते हैं.

लेखक की कल्पनाशक्ति भी चरित्र निर्माण की एक महत्त्वपूर्ण आधारशिला है. केवल वास्तविक जीवन का अवलोकन ही पर्याप्त नहीं होता, बल्कि लेखक को उन अनुभवों को रचनात्मक रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता भी होनी चाहिए. वह पात्रों के जीवन में ऐसी परिस्थितियाँ, संघर्ष और घटनाएँ निर्मित करता है जो कथा को रोचक और प्रभावशाली बनाती हैं. कल्पनाशक्ति के माध्यम से लेखक साधारण पात्रों को भी असाधारण बना सकता है और उन्हें दर्शकों की स्मृति में स्थायी स्थान दिला सकता है.

संवाद लेखन भी चरित्र निर्माण में लेखक की महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारी है. प्रत्येक पात्र की भाषा, अभिव्यक्ति और संवाद शैली उसके व्यक्तित्व को दर्शाती है. लेखक को इस बात का विशेष ध्यान रखना होता है कि प्रत्येक पात्र अपनी सामाजिक स्थिति, शिक्षा, आयु और मानसिकता के अनुरूप संवाद बोले. प्रभावशाली संवाद पात्र के विचारों, भावनाओं और दृष्टिकोण को स्पष्ट करते हैं तथा उसके चरित्र को अधिक सशक्त और प्रभावी बनाते हैं. कई बार किसी पात्र की पहचान उसके संवादों के कारण ही स्थापित होती है.

लेखक की सामाजिक समझ भी चरित्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है. समाज निरंतर परिवर्तनशील है और उसके साथ मानवीय व्यवहार तथा संबंधों में भी परिवर्तन आता रहता है. एक जागरूक लेखक समाज की समस्याओं, चुनौतियों और वास्तविकताओं को समझता है तथा उन्हें अपने पात्रों के माध्यम से अभिव्यक्त करता है. इस प्रकार पात्र केवल व्यक्तिगत अनुभवों का प्रतिनिधित्व नहीं करते, बल्कि वे समाज की व्यापक परिस्थितियों और मानवीय चिंताओं को भी सामने लाते हैं.

संवेदनशीलता लेखक का एक और महत्त्वपूर्ण गुण है, जो चरित्र निर्माण को गहराई प्रदान करता है. लेखक को मानवीय भावनाओं, सुख-दुःख, प्रेम, करुणा, भय, आशा और संघर्ष को समझने की क्षमता होनी चाहिए. जब लेखक स्वयं मानवीय संवेदनाओं को गहराई से अनुभव करता है, तभी वह अपने पात्रों को भावनात्मक रूप से समृद्ध बना सकता है. संवेदनशीलता के कारण पात्र केवल काल्पनिक आकृतियाँ नहीं रहते, बल्कि वे दर्शकों के मन को स्पर्श करने वाले जीवंत व्यक्तित्व बन जाते हैं.

लेखक का एक महत्त्वपूर्ण दायित्व पात्रों के विकास को स्वाभाविक बनाए रखना भी है. कथा के दौरान पात्र जिन परिस्थितियों और संघर्षों से गुजरते हैं, उनके परिणामस्वरूप उनके व्यक्तित्व में परिवर्तन आना स्वाभाविक है. लेखक को यह सुनिश्चित करना होता है कि यह परिवर्तन तार्किक, क्रमबद्ध और विश्वसनीय हो. यदि पात्र का विकास अस्वाभाविक या अचानक दिखाई दे, तो उसकी विश्वसनीयता प्रभावित हो सकती है. इसलिए लेखक को पात्रों की मानसिक और भावनात्मक यात्रा को सावधानीपूर्वक प्रस्तुत करना पड़ता है.

आधुनिक समय में लेखक की भूमिका और भी चुनौतीपूर्ण हो गई है. आज के दर्शक जटिल, बहुआयामी और यथार्थवादी पात्रों को पसंद करते हैं. इसलिए लेखक को केवल बाहरी घटनाओं पर ध्यान केंद्रित नहीं करना पड़ता, बल्कि पात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्ष, आंतरिक संघर्षों और व्यक्तिगत अनुभवों को भी गहराई से प्रस्तुत करना पड़ता है. आधुनिक लेखक अपने पात्रों को अधिक मानवीय, वास्तविक और समकालीन जीवन के निकट बनाने का प्रयास करता है.

अतः कहा जा सकता है कि चरित्र निर्माण की प्रक्रिया में लेखक की भूमिका सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण होती है. उसकी कल्पनाशक्ति, निरीक्षण क्षमता, सामाजिक समझ, संवेदनशीलता और रचनात्मक कौशल ही पात्रों को जीवन प्रदान करते हैं. एक सफल लेखक अपने पात्रों के माध्यम से न केवल कथा को प्रभावशाली बनाता है, बल्कि दर्शकों के मन में स्थायी प्रभाव भी छोड़ता है. इसलिए चरित्र निर्माण की सफलता का आधार लेखक की दृष्टि, अनुभव और रचनात्मक क्षमता को माना जाता है.

3.11 चरित्र निर्माण की समस्याएँ

चरित्र निर्माण पटकथा लेखन की एक महत्त्वपूर्ण और जटिल प्रक्रिया है. किसी भी पात्र को प्रभावशाली, विश्वसनीय और जीवंत बनाना लेखक के लिए एक बड़ी चुनौती होती है. यद्यपि लेखक अपने अनुभव, कल्पनाशक्ति और रचनात्मकता के आधार पर पात्रों का निर्माण करता है, फिर भी इस प्रक्रिया में अनेक प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं. यदि इन समस्याओं पर उचित ध्यान न दिया जाए, तो पात्र कृत्रिम, कमजोर और प्रभावहीन प्रतीत होने लगते हैं. परिणामस्वरूप कथा की गुणवत्ता तथा उसका प्रभाव दोनों प्रभावित होते हैं. इसलिए चरित्र निर्माण से संबंधित समस्याओं को समझना और उनका समाधान करना अत्यंत आवश्यक है.

चरित्र निर्माण की प्रमुख समस्याओं में कृत्रिमता सबसे महत्त्वपूर्ण मानी जाती है. जब पात्र का व्यवहार, संवाद या प्रतिक्रिया उसकी परिस्थितियों और व्यक्तित्व के अनुरूप नहीं होती, तब वह स्वाभाविक नहीं लगता. दर्शकों को ऐसा प्रतीत होता है कि पात्र वास्तविक जीवन का व्यक्ति न होकर केवल लेखक की कल्पना का एक बनावटी रूप है. इस प्रकार की कृत्रिमता पात्र की विश्वसनीयता को कम कर देती है और दर्शकों का उससे भावनात्मक जुड़ाव स्थापित नहीं हो पाता. इसलिए लेखक को पात्रों को यथार्थ जीवन के निकट रखने का प्रयास करना चाहिए.

संवादों की अस्वाभाविकता भी चरित्र निर्माण की एक गंभीर समस्या है. संवाद पात्र के व्यक्तित्व का महत्त्वपूर्ण माध्यम होते हैं. यदि संवाद पात्र की आयु, शिक्षा, सामाजिक स्तर

और परिस्थितियों के अनुरूप न हों, तो वे बनावटी और अविश्वसनीय प्रतीत होते हैं. कई बार लेखक अत्यधिक साहित्यिक या जटिल भाषा का प्रयोग कर देता है, जो सामान्य जीवन की भाषा से मेल नहीं खाती. परिणामस्वरूप पात्र वास्तविक न लगकर केवल शब्दों का माध्यम बन जाता है. प्रभावशाली चरित्र निर्माण के लिए संवादों का स्वाभाविक और परिस्थिति-संगत होना आवश्यक है.

अत्यधिक आदर्शवाद भी चरित्र निर्माण की एक सामान्य समस्या है. कई बार लेखक अपने पात्रों को इतना श्रेष्ठ, निर्दोष और पूर्ण बना देता है कि वे वास्तविक जीवन से कटे हुए प्रतीत होने लगते हैं. ऐसे पात्रों में मानवीय कमजोरियाँ और सीमाएँ दिखाई नहीं देतीं. जबकि वास्तविक जीवन में प्रत्येक व्यक्ति में गुणों और दोषों का मिश्रण होता है. जब पात्र अत्यधिक आदर्शवादी बनाए जाते हैं, तो दर्शक उनसे स्वयं को जोड़ नहीं पाते. इसलिए आधुनिक पटकथा लेखन में पात्रों को अधिक यथार्थवादी और मानवीय रूप में प्रस्तुत करने पर बल दिया जाता है.

कमजोर संघर्ष भी चरित्र निर्माण की एक महत्त्वपूर्ण समस्या है. संघर्ष किसी भी पात्र के विकास का आधार होता है. यदि पात्र को पर्याप्त चुनौतियों और कठिनाइयों का सामना नहीं करना पड़ता, तो उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली रूप से उभरकर सामने नहीं आ पाता. संघर्ष के अभाव में कथा नीरस और पूर्वानुमेय बन जाती है. दर्शकों की रुचि बनाए रखने के लिए आवश्यक है कि पात्र के सामने ऐसे संघर्ष उपस्थित हों जो उसके साहस, धैर्य और निर्णय क्षमता की परीक्षा लें.

चरित्र निर्माण में असंगति भी एक बड़ी समस्या हो सकती है. जब कोई पात्र बिना किसी तार्किक कारण के अपने स्थापित स्वभाव के विपरीत व्यवहार करने लगता है, तब उसकी विश्वसनीयता प्रभावित होती है. उदाहरण के लिए यदि कोई पात्र पूरी कथा में ईमानदार और सिद्धांतनिष्ठ दिखाया गया हो और अचानक बिना किसी उचित कारण के बेईमानी करने लगे, तो दर्शक उसे स्वीकार नहीं कर पाएंगे. इसलिए पात्र के विकास और परिवर्तन को तार्किक तथा क्रमबद्ध रूप में प्रस्तुत करना आवश्यक होता है.

पात्रों में एकरूपता का अभाव भी कई बार समस्या उत्पन्न करता है. यदि कथा के सभी पात्र एक जैसी भाषा बोलते हों, समान विचार रखते हों और समान प्रकार का व्यवहार करते हों, तो उनकी अलग पहचान नहीं बन पाती. प्रत्येक पात्र का अपना विशिष्ट व्यक्तित्व, दृष्टिकोण और व्यवहार होना चाहिए. यही विविधता कथा को अधिक रोचक और यथार्थवादी बनाती है. लेखक को प्रत्येक पात्र की अलग पहचान स्थापित करने का प्रयास करना चाहिए.

अतार्किक घटनाएँ भी चरित्र निर्माण को प्रभावित करती हैं. यदि पात्र ऐसे निर्णय लेने लगें जो उनकी परिस्थितियों या व्यक्तित्व से मेल न खाते हों, तो कथा की विश्वसनीयता कम हो जाती है. दर्शक कहानी की घटनाओं और पात्रों के व्यवहार के बीच तार्किक संबंध की अपेक्षा करते हैं. इसलिए लेखक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि पात्रों की सभी क्रियाएँ और निर्णय परिस्थितियों तथा उनके व्यक्तित्व के अनुरूप हों.

आधुनिक समय में चरित्र निर्माण से जुड़ी एक अन्य चुनौती बदलती हुई सामाजिक परिस्थितियाँ हैं. आज का समाज पहले की अपेक्षा अधिक जटिल और विविधतापूर्ण हो गया है. दर्शकों की अपेक्षाएँ भी बदल चुकी हैं. वे ऐसे पात्रों को पसंद करते हैं जो वास्तविक जीवन की समस्याओं, मानसिक संघर्षों और सामाजिक चुनौतियों को प्रतिबिंबित करते हों. इसलिए लेखक को समकालीन जीवन की वास्तविकताओं और बदलती सामाजिक संवेदनाओं की गहरी समझ विकसित करनी पड़ती है. यदि पात्र समय की आवश्यकताओं के अनुरूप न हों, तो वे दर्शकों को प्रभावित नहीं कर पाते.

इन सभी समस्याओं के समाधान के लिए लेखक को समाज और मानव व्यवहार का गहन अध्ययन करना चाहिए. उसे वास्तविक जीवन के अनुभवों का अवलोकन करना चाहिए तथा पात्रों को स्वाभाविक, संतुलित और यथार्थवादी रूप में प्रस्तुत करना चाहिए. संवादों को परिस्थिति के अनुरूप रखना, पात्रों में मानवीय गुणों और कमजोरियों का संतुलन बनाए रखना तथा उनके विकास को तार्किक ढंग से प्रस्तुत करना भी आवश्यक है. इसी प्रकार संघर्ष और भावनात्मक गहराई को उचित स्थान देकर पात्रों को अधिक प्रभावशाली बनाया जा सकता है.

अतः कहा जा सकता है कि चरित्र निर्माण एक चुनौतीपूर्ण प्रक्रिया है, जिसमें अनेक समस्याएँ उत्पन्न हो सकती हैं. किंतु यदि लेखक सावधानी, संवेदनशीलता और रचनात्मक दृष्टि के साथ कार्य करे, तो वह इन कठिनाइयों को दूर करके ऐसे पात्रों का निर्माण कर सकता है जो जीवंत, विश्वसनीय और स्मरणीय बन सकें. सफल चरित्र निर्माण ही किसी भी प्रभावशाली पटकथा की आधारशिला होता है.

3.12 आधुनिक संदर्भ में चरित्र निर्माण

वर्तमान समय में संचार माध्यमों, डिजिटल तकनीक, ओटीटी प्लेटफॉर्म, वेब-सीरीज़ तथा वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण चरित्र निर्माण की अवधारणा में महत्त्वपूर्ण परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं. पहले जहाँ पात्रों को प्रायः आदर्शवादी, स्पष्ट रूप से अच्छे या बुरे तथा सीमित व्यक्तित्व वाले रूप में प्रस्तुत किया जाता था, वहीं आधुनिक युग में पात्रों को अधिक यथार्थवादी, बहुआयामी और मनोवैज्ञानिक रूप से जटिल स्वरूप प्रदान किया जा रहा है. आधुनिक दर्शक केवल मनोरंजन नहीं चाहते, बल्कि वे ऐसे पात्रों को देखना पसंद करते हैं जो वास्तविक जीवन की परिस्थितियों, संघर्षों और भावनाओं का प्रतिनिधित्व करते हों. इसलिए आज चरित्र निर्माण की प्रक्रिया पहले की तुलना में अधिक गहन, संवेदनशील और चुनौतीपूर्ण हो गई है.

आधुनिक चरित्र निर्माण की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता पात्रों की बहुआयामी प्रकृति है. आज के पात्र केवल नायक या खलनायक की पारंपरिक सीमाओं में बंधे हुए नहीं होते. उनमें अच्छाइयों और कमियों का संतुलित मिश्रण दिखाई देता है. वे कभी सही निर्णय लेते हैं तो कभी गलतियाँ भी करते हैं. उनके व्यक्तित्व में मानवीय कमजोरियाँ, असुरक्षाएँ और अंतर्विरोध भी मौजूद रहते हैं. यही विशेषताएँ उन्हें वास्तविक जीवन के अधिक निकट और दर्शकों के लिए अधिक विश्वसनीय बनाती हैं.

वर्तमान समय में मनोवैज्ञानिक गहराई को चरित्र निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण आधार माना जाता है. आधुनिक पात्रों के बाहरी व्यवहार के साथ-साथ उनके आंतरिक विचारों, भावनाओं, इच्छाओं, भय और मानसिक संघर्षों को भी विस्तार से प्रस्तुत किया जाता है. आज की पटकथाओं में पात्रों के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर विशेष ध्यान दिया जाता है, जिससे दर्शक उनके निर्णयों और व्यवहार को अधिक गहराई से समझ सकें. इस प्रकार के पात्र केवल घटनाओं के माध्यम नहीं रहते, बल्कि वे मानवीय मन की जटिलताओं को अभिव्यक्त करने वाले सशक्त माध्यम बन जाते हैं.

आधुनिक संदर्भ में सामाजिक विविधता का समावेश भी चरित्र निर्माण का एक महत्त्वपूर्ण पहलू है. आज की कथाओं में विभिन्न सामाजिक वर्गों, समुदायों, संस्कृतियों, व्यवसायों और जीवन-शैलियों से जुड़े पात्रों को स्थान दिया जा रहा है. इससे समाज की वास्तविक विविधता का चित्रण संभव हो पाता है. लेखक अब केवल एक विशेष वर्ग या दृष्टिकोण तक सीमित नहीं रहते, बल्कि समाज के विभिन्न समूहों के अनुभवों और संघर्षों को भी अपनी रचनाओं में शामिल करते हैं. इससे कथाएँ अधिक समावेशी और यथार्थवादी बनती हैं.

स्त्री पात्रों के चित्रण में भी आधुनिक समय में उल्लेखनीय परिवर्तन आया है. पहले अधिकांश कथाओं में स्त्री पात्रों की भूमिका अपेक्षाकृत सीमित होती थी, किंतु आज वे कथा

के केंद्र में दिखाई देती हैं. आधुनिक स्त्री पात्र आत्मनिर्भर, निर्णयक्षम, शिक्षित और संघर्षशील रूप में प्रस्तुत किए जाते हैं. वे केवल भावनात्मक सहारे या सहायक पात्र की भूमिका तक सीमित नहीं हैं, बल्कि नेतृत्व, सामाजिक परिवर्तन और व्यक्तिगत उपलब्धियों के प्रतीक के रूप में भी उभर रही हैं. यह परिवर्तन समाज में महिलाओं की बदलती भूमिका और बढ़ती भागीदारी को दर्शाता है.

आधुनिक चरित्र निर्माण में सामाजिक और नैतिक जटिलताओं को भी विशेष महत्त्व दिया जाता है. आज के पात्र अनेक प्रकार की नैतिक दुविधाओं और सामाजिक चुनौतियों का सामना करते हैं. वे सही और गलत के बीच स्पष्ट विभाजन के बजाय जटिल परिस्थितियों में निर्णय लेते दिखाई देते हैं. इससे पात्र अधिक मानवीय और वास्तविक प्रतीत होते हैं. आधुनिक दर्शक भी ऐसे पात्रों को अधिक पसंद करते हैं जिनके जीवन में संघर्ष, असमंजस और आत्ममंथन दिखाई देता हो.

डिजिटल माध्यमों और ओटीटी प्लेटफॉर्म के विकास ने भी चरित्र निर्माण को नई दिशा प्रदान की है. वेब-सीरीज़ और लंबी कथात्मक प्रस्तुतियों में पात्रों को विकसित करने के लिए अधिक समय और अवसर उपलब्ध होता है. परिणामस्वरूप लेखक पात्रों के व्यक्तित्व, संबंधों और मानसिक विकास को अधिक विस्तार से प्रस्तुत कर पाते हैं. इससे पात्रों में गहराई और विश्वसनीयता बढ़ती है तथा दर्शकों का उनके साथ भावनात्मक जुड़ाव भी अधिक मजबूत होता है.

आधुनिक समय में संवाद शैली में भी महत्त्वपूर्ण परिवर्तन हुआ है. अब पात्रों की भाषा अधिक स्वाभाविक, बोलचाल की और यथार्थ जीवन के अनुरूप होती है. कृत्रिम और अत्यधिक साहित्यिक संवादों के स्थान पर ऐसी भाषा का प्रयोग किया जाता है जो पात्र की सामाजिक पृष्ठभूमि और परिस्थितियों के अनुकूल हो. इससे पात्र अधिक जीवंत और विश्वसनीय प्रतीत होते हैं.

आधुनिक चरित्र निर्माण केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक जागरूकता, मानवीय संवेदनाओं और समकालीन समस्याओं की अभिव्यक्ति का सशक्त साधन बन गया है. आज के पात्र समाज में हो रहे परिवर्तनों, नई चुनौतियों, सांस्कृतिक बदलावों और व्यक्तिगत संघर्षों को प्रभावी रूप से प्रस्तुत करते हैं. वे दर्शकों को केवल कथा का अनुभव नहीं कराते, बल्कि उन्हें सोचने, समझने और आत्मविश्लेषण करने के लिए भी प्रेरित करते हैं.

अतः कहा जा सकता है कि आधुनिक संदर्भ में चरित्र निर्माण का स्वरूप पहले की अपेक्षा अधिक व्यापक, गहन और यथार्थवादी हो गया है. बहुआयामी व्यक्तित्व, मनोवैज्ञानिक गहराई, सामाजिक विविधता, स्त्री सशक्तिकरण, नैतिक जटिलता तथा स्वाभाविक संवाद शैली इसके प्रमुख आधार बन चुके हैं. आधुनिक चरित्र केवल कथा के पात्र नहीं हैं, बल्कि वे समकालीन समाज और मानव जीवन की जटिलताओं का जीवंत प्रतिबिंब हैं. यही कारण है कि वर्तमान युग में चरित्र निर्माण को पटकथा लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण और सृजनात्मक प्रक्रियाओं में से एक माना जाता है.

- **बोधप्रश्न.**

1. चरित्र निर्माण में संवाद क्या प्रकट करते हैं?

   (क) मौसम (ख) पात्र की मानसिकता

   (ग) स्थान (घ) समय

2. पात्र की पहचान किससे स्पष्ट होती है?

   (क) वेशभूषा (ख) क्रियाओं से

   (ग) संगीत से (घ) प्रकाश से

3. अन्य पात्रों के माध्यम से क्या ज्ञात होता है?

(क) मंच सज्जा (ख) पात्र की विशेषताएँ

(ग) गीत (घ) दृश्य प्रभाव

4. वातावरण किसे प्रभावित करता है?

(क) कैमरा (ख) पात्र के व्यक्तित्व को

(ग) मंच को (घ) दर्शकों की संख्या को

5. सफल चरित्र दर्शकों के मन में क्या छोड़ते हैं?

(क) भ्रम (ख) असंतोष

(ग) स्थायी प्रभाव (घ) डर

3.13 सारबिंदु

विद्यार्थी मित्रो! आशा है आपने पूरी इकाई पढ़कर अच्छी तरह समझ ली होगी. अब आप इकाई के प्रत्येक उपशीर्षक से उसकी आवश्यक बातें एक जगह पर लिख लीजिए, जिससे इस इकाई को सार रूप में याद रखने में आपको सुविधा होगी. हम भी यहां यही काम करने जा रहे हैं. आप अपनी सूची से इस सूची का मिलान कीजिएगा और देखिएगा की कहीं हमसे कुछ छूट तो नहीं गया है, या आपसे कुछ रह तो नहीं गया!

- चरित्र निर्माण पटकथा लेखन का अत्यंत महत्त्वपूर्ण तत्व है.
- प्रभावशाली पात्र कथा को जीवंत और रोचक बनाते हैं.
- पात्रों के माध्यम से ही कथा आगे बढ़ती है.
- प्रत्येक पात्र का अपना उद्देश्य, स्वभाव और व्यक्तित्व होता है.
- मुख्य पात्र कथा का केंद्र होता है.
- सहायक पात्र मुख्य पात्र के विकास में सहायता करते हैं.
- खलनायक कथा में संघर्ष उत्पन्न करता है.
- चरित्र निर्माण में संवाद महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.
- पात्रों की क्रियाएं उनके स्वभाव को प्रकट करती हैं.
- अन्य पात्रों के माध्यम से भी किसी पात्र की विशेषताएँ सामने आती हैं.
- वातावरण और परिस्थितियाँ पात्र के व्यक्तित्व को प्रभावित करती हैं.
- सफल चरित्र दर्शकों के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं.
- यथार्थवादी पात्र कहानी को विश्वसनीय बनाते हैं.
- भारतीय सिनेमा और नाटक में चरित्र निर्माण की महत्त्वपूर्ण परंपरा रही है.
- प्रभावी चरित्र निर्माण से पटकथा अधिक सशक्त और आकर्षक बनती है.

3.14 परीक्षा उपयोगी प्रश्नावली

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से दीजिए.

1. चरित्र निर्माण का अर्थ एवं स्वरूप स्पष्ट करते हुए पटकथा लेखन में उसके महत्त्व का विस्तार से वर्णन कीजिए.
2. पटकथा लेखन में पात्रों के प्रकारों का वर्णन कीजिए तथा मुख्य पात्र की विशेषताओं

को उदाहरण सहित समझाइए.

3. चरित्र निर्माण की विभिन्न विधियों का वर्णन करते हुए चरित्र और कथा के संबंध पर प्रकाश डालिए.

टिप्पणी लिखिए.

1. चरित्र निर्माण का महत्त्व
2. मुख्य पात्र (Main Character)
3. सामाजिक यथार्थ की अभिव्यक्ति
4. चरित्र निर्माण की विधियाँ
5. भारतीय सिनेमा और नाटक में चरित्र निर्माण

वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

1. पटकथा की सफलता मुख्य रूप से किस पर निर्भर करती है?

   (क) गीतों पर (ख) चरित्रों पर

   (ग) वेशभूषा पर (घ) स्थान पर

2. कथा को गति कौन प्रदान करता है?

   (क) संगीत (ख) दृश्य

   (ग) पात्र (घ) प्रकाश

3. मुख्य पात्र को क्या कहा जाता है?

   (क) सहायक पात्र (ख) खलनायक

   (ग) केंद्रीय पात्र (घ) हास्य पात्र

4. चरित्र निर्माण में कौन-सी बात सम्मिलित नहीं होती?

   (क) पात्र का स्वभाव (ख) पात्र की भाषा

   (ग) मौसम का वर्णन (घ) पात्र का उद्देश्य

5. प्रभावशाली पात्र दर्शकों के मन में क्या बनाते हैं?

   (क) भ्रम (ख) स्थायी स्थान

   (ग) भय (घ) असमंजस

3.15 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- पटकथा लेखन - असगर वजाहत, राजकमल प्रकाशन
- फिल्म लेखन के सिद्धांत - मनोहर श्यम जोशी, वाणी प्रकाशन
- फिल्म, टीवी और रेडियो लेखन - ओमप्रकाश सिंह, ज्ञानगंगा प्रकाशन
- जनसंचार और पटकथा लेखन - सुरेश शर्मा, ग्रंथ अकादमी
- टेलीविजन एवं फिल्म लेखन - विनोद तिवारी, राधा पब्लिकेशन्स

इकाई 4 दृश्य संरचना

रूपरेखा

4.1 उद्देश्य

4.2 प्रस्तावना

4.3 'दृश्य' की अवधारणा

4.4 'दृश्य' के प्रकार

4.5 'दृश्य' का उद्देश्य

4.6 समय और स्थान का प्रयोग

4.7 'दृश्य' निरंतरता

4.8 'दृश्य' लेखन का प्रारुप

4.9 सारबिंदु

4.10 पारिभाषिक शब्दावली

4.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

4.12 उपयोगी पाठ्यसामग्री

4.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! कौशल संवर्धन पाठ्यक्रम के अंतर्गत आप पटकथा लेखन का कौशल प्राप्त करने के लिए अध्ययन कर रहे हैं. इस इकाई के अंतर्गत हम पटकथा के लिए आवश्यक दृश्य संरचना को समझने का प्रयत्न करेंगे. इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

– दृश्य की अवधारणा से परिचित हो सकेंगे.

– दृश्य के विभिन्न प्रकारों को जान सकेंगे.

– दृश्य का उद्देश्य समझ सकेंगे.

– दृश्य के संदर्भ में समय और स्थान का प्रयोग सीख सकेंगे.

– दृश्य की निरंतरता की आवश्यकता समझ सकेंगे.

– दृश्य लेखन के प्रारुप से परिचित हो सकेंगे.

– और अंततः स्वयं दृश्य लेखन करने में सक्षम हो सकेंगे.

4.2 प्रस्तावना

आप कथा से तो भलीभाँति परिचित हैं. आपने अब तक न जाने कितनी कथाएँ, कहानी, उपन्यास, आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रावृतांत आदि साहित्यिक विधाओं के रूप में पढ़ी होंगी. एक बार उन सबको याद करने की कोशिश कीजिए. उनमें से कौन-सी आपको सबसे अच्छी लगी थी, जो आपको अभी तक याद है! अब जरा समझने की कोशिश कीजिए कि वह क्यों अच्छी लगी थी? वैसे तो, किसी कृति के अच्छा लगने के अनेक कारण हो सकते हैं, पर किसी विशेष कारण के अभाव में एक सामान्य कारण किसी कृति के अच्छा लगने का यह हो सकता है कि लेखक ने अपने शब्दों से कुछ ऐसे चित्र खींचे हों जो पढ़ते ही मानसिक बिम्बों के रूप में आपकी आँखों के सामने उभरने लगे हों. वस्तुतः आप जब किसी कथा को पढ़ते हैं तो उसे अपने मानसिक पटल पर चित्रित

होता हुआ देखते हैं और चित्र जितने सुस्पष्ट, जितने गहरे रंगों वाले होते हैं, उतना ही वह कथा आपको प्रभावित करती है, अच्छी लगती है, याद रहती है.

'कथा' शब्दों से चित्र खींचने की कला है, जबकि 'पटकथा' इसके उलट चित्रों को शब्दों में उतार लाने की कला है. 'पटकथा' दृश्य माध्यम के लिए लिखी जाती है, जो 'कथा' को शब्दों से नहीं बल्कि चित्रों – चलते फिरते चित्रों के जरिये कहता है. चलते फिरते चित्रों यानी दृश्यों के माध्यम से कथा कहने के लिए पटकथा की आवश्यकता होती है, – इसलिए पटकथा का एक महत्त्वपूर्ण घटक, बल्कि कहना चाहिए कि उसकी आत्मा होती है – दृश्य संरचना.

आइये! इस इकाई में हम सीखें कि पटकथा में दृश्य संरचना कैसे की जाय. इसके लिए हम सबसे पहले जानें कि 'दृश्य' कहते किसको हैं.

4.3 दृश्य की अवधारणा

संस्कृत की दृश् (देखना) धातु से बने शब्द 'दृश्य' का पहला और सीधा मतलब है– वह जो दिखाई दे. यहाँ भी यह मूल अर्थ तो लागू है ही कि जो दर्शकों को दिखाई दे वह 'दृश्य', पर पटकथा के संदर्भ में यह विशिष्ट ढंग से परिभाषित होता है.

पटकथा में **बिना व्यवधान के एक कालखंड में एक स्थान पर घटित हुआ क्रियाकलाप एक दृश्य कहलाता है.** जैसे ही स्थान बदलता है, या समय का अंतराल आता है, तो वहाँ से नया दृश्य शुरू हो जाता है. उदाहरण के लिए, यदि किसी फिल्म में एक छात्र अपने घर में परीक्षा की तैयारी कर रहा है, तो यह एक दृश्य होगा. उसी छात्र का अगले क्षण विद्यालय पहुँच जाना एक नया दृश्य माना जाएगा, क्योंकि स्थान बदल गया. इसी प्रकार यदि वही छात्र उसी कमरे में सुबह पढ़ाई कर रहा था और अगले दृश्य में रात का समय दिखाया गया है, तो समय परिवर्तन के कारण नया दृश्य आरम्भ होगा.

'दृश्य' पटकथा की मूल इकाई है. जिस प्रकार कहानी कई प्रकरणों से मिलकर बनती है, उसी प्रकार पटकथा अनेक दृश्यों के संयोजन से निर्मित होती है. प्रत्येक दृश्य का अपना एक उद्देश्य होता है वह कथा को आगे बढ़ाता है, पात्रों के स्वभाव को उद्घाटित करता है, वातावरण निर्मित करता है या किसी भाव अथवा संघर्ष को अभिव्यक्त करता है.

दृश्य केवल घटनाओं का विवरण नहीं होता, बल्कि उसमें दृश्यात्मकता का विशेष महत्त्व होता है. पटकथा लेखक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि जो कुछ लिखा जाए वह पर्दे पर दिखाई भी दे सके. इसलिए दृश्य में पात्रों की गतिविधियाँ, हाव-भाव, वातावरण, ध्वनियाँ, प्रकाश, वस्तुएँ और संवाद सभी मिलकर अर्थ का निर्माण करते हैं.

एक प्रभावशाली दृश्य की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:-

- दृश्य कथा को आगे बढ़ाने वाला होना चाहिए.
- उसमें स्पष्ट क्रिया या घटना होनी चाहिए.
- दृश्य में अनावश्यक विस्तार नहीं होना चाहिए.
- दृश्य का आरम्भ और अंत प्रभावपूर्ण होना चाहिए.
- दृश्य दर्शकों की जिज्ञासा बनाए रखे.
- दृश्य में समय, स्थान और पात्रों की स्पष्टता होनी चाहिए.

दृश्य निर्माण में निरंतरता भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण होती है. यदि दृश्यों के बीच तारतम्य न हो तो कथा बिखरी हुई प्रतीत होती है. इसलिए प्रत्येक दृश्य अगले दृश्य से किसी न किसी रूप में जुड़ा रहता है.

इस प्रकार, दृश्य पटकथा की आत्मा है. वही कथा को दृश्यात्मक रूप देकर उसे जीवंत और प्रभावपूर्ण बनाता है.

आशा है, अब आपके मन में पटकथा के संदर्भ में 'दृश्य' की अवधारणा स्पष्ट हो गयी होगी. आइये! अपनी समझ को जाँच लेते हैं. विद्यार्थी मित्रो! नीचे दिये गये प्रश्नों का उत्तर बिना ऊपर देखे देने की कोशिश करें और उसके बाद आपने उत्तर का सत्यापन ऊपर के अनुच्छेद से करें. यदि आपने सही उत्तर दिये हैं, तो इसका अर्थ है आपने अभी तक का पढ़ा हुआ अच्छी तरह समझ लिया है. यदि आप सही उत्तर नहीं दे पा रहे हैं तो आपको ऊपर का अनुच्छेद एक बार फिर ध्यान से पढ़ने की आवश्यकता है.

- **बोध प्रश्न**
- **नीचे लिखे प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दें.**

1. 'दृश्य' का मूल अर्थ क्या है?
2. पटकथा के संदर्भ में 'दृश्य' किसको कहेंगे?
3. पटकथा की मूल इकाई क्या है?
4. 'दृश्य' के क्या उद्देश्य होते हैं?
5. प्रभावशाली 'दृश्य' की क्या विशेषताएँ होती हैं?

4.4 'दृश्य' के प्रकार

पटकथा लेखन में 'दृश्य' या सिनेमा की प्रचलित भाषा में जिसे 'सीन' कहते हैं, कथा की मूल इकाई होता है. पटकथा एक तकनीकी दस्तावेज है, जहाँ कथा सीन दर सीन इसलिए कही जाती है ताकि प्रोडक्शन टीम को शूटिंग की तैयारी करने में सुविधा हो. कथा की आवश्यकता, समय, स्थान, भाव और प्रस्तुति के आधार पर दृश्यों के अनेक प्रकार हो सकते हैं :

1. स्थान के आधार पर

(क) आंतरिक दृश्य (इंटीरियर सीन) – जो दृश्य किसी कमरे, भवन, कार्यालय, घर, स्टूडियो आदि यानी किसी चारदीवारी के भीतर घटित होता है. उदाहरणार्थ कक्षा में शिक्षक से पढ़ते हुए बच्चों का सीन. पटकथा में इसे INT लिखकर जताते हैं.

(ख) बाह्य दृश्य (एक्सटीरियर सीन) – जो दृश्य खुले स्थान, सड़क, मैदान, पार्क, गाँव, जंगल आदि यानी खुले आसमान के नीचे घटित होता है. उदाहरण के लिए मैदान में खेलते हुए बच्चों का सीन. पटकथा में ऐसे दृश्यों के ऊपर EXT. लिख दिया जाता है.

2. समय के आधार पर दृश्य

(क) दिन का दृश्य (डे सीन) – ऐसा दृश्य जिसे दिन की रोशनी में फिल्माना हो. यह भी पटकथा में प्रत्येक दृश्य के ऊपर लिखा जाता है.

(ख) रात्रि दृश्य (नाइट सीन) – ऐसा दृश्य जिसमें आसमान में अँधेरा दिखाना इच्छित हो. यह भी दृश्य लिखते हुए ऊपर इंगित कर दिया जाता है.

उपर्युक्त 4 का ही उल्लेख प्रत्येक दृश्य के आरंभ में करना आवश्यक होता है, क्योंकि इसी के आधार पर प्रोडक्शन टीम को अपनी तैयारी करनी होती है. आगे बताये जाने वाले प्रकार पटकथा लेखक और निर्देशक की स्पष्टता के लिए है, अतः उनका उल्लेख दृश्य के आरंभ में अलग से नहीं किया जाता.

(ग) फ्लैशबैक दृश्य – वर्तमान से अतीत की घटनाओं को दिखाने वाला दृश्य.

(घ) फ्लैश-फॉरवर्ड दृश्य – भविष्य की संभावित या कल्पित घटनाओं को दिखाने वाला दृश्य.

3. प्रस्तुति के आधार पर दृश्य

(क) **संवाद प्रधान दृश्य –** जिसमें पात्रों के संवाद मुख्य भूमिका निभाते हैं. जैसे, दो पात्रों के बीच विचार-विमर्श का सीन

(ख) **क्रिया प्रधान दृश्य –** जिसमें शारीरिक गतिविधि, संघर्ष, पीछा, युद्ध आदि प्रमुख हों.

(ग) **भाव प्रधान दृश्य –** जिसमें भावनाएँ, मन:स्थिति और संवेदनाएँ अधिक महत्त्वपूर्ण हों.

4. कथानक के आधार पर दृश्य

(क) **परिचयात्मक दृश्य –** पात्र, स्थान या परिस्थिति का परिचय कराने वाला दृश्य.

(ख) **संघर्ष दृश्य –** जहाँ समस्या, टकराव या विरोध उत्पन्न होता है.

(ग) **चरम दृश्य (क्लाइमेक्स सीन) –** कथा के सबसे महत्त्वपूर्ण और तनावपूर्ण क्षण का दृश्य.

(घ) **समाधान दृश्य –** जहाँ कथा का निष्कर्ष या समस्या का समाधान प्रस्तुत होता है.

5. तकनीकी आधार पर दृश्य

(क) **मोंताज दृश्य –** अनेक छोटे-छोटे दृश्यों को जोड़कर समय या घटनाओं की गति दिखाना.

(ख) **समानांतर दृश्य –** दो अलग-अलग स्थानों पर एक साथ घट रही घटनाओं को समानांतर रुप से दिखाना.

(ग) **स्वप्न दृश्य –** पात्र के स्वप्न या कल्पना को दर्शाने वाला दृश्य.

'दृश्य' कथा को दृश्यात्मक रुप देने का माध्यम है. विभिन्न प्रकार के दृश्य पटकथा को प्रभावशाली, गतिशील और रोचक बनाते हैं. उचित दृश्य संरचना के माध्यम से लेखक कथा, भाव, संघर्ष और चरित्रों को प्रभावपूर्ण ढंग से प्रस्तुत कर सकता है.

आइये! अब जाँचें कि आपने कितना समझकर याद कर लिया है. नीचे लिखे वाक्यों की उचित शब्द से पूर्ति करें :

- **बोध प्रश्न.**

1. स्थान के आधार पर दृश्य के दो भेद होते हैं .... और ....
2. समय के आधार पर दृश्य के .... भेद होते हैं.
3. एक के पीछे एक दौड़ती कारों का दृश्य प्रस्तुति के आधार पर .... दृश्य है.
4. कथा के सबसे महत्त्वपूर्ण और तनावपूर्ण क्षण का दृश्य .... दृश्य कहलाता है.
5. अनेक छोटे-छोटे दृश्यों को जोड़कर समय या घटनाओं की गति दिखाना तकनीकी दृष्टि से .... कहलाता है.

4.5 'दृश्य' का उद्देश्य

पटकथा-लेखन में दृश्य केवल घटनाओं का प्रस्तुतीकरण नहीं होता, बल्कि वह कथा-विकास का एक सशक्त माध्यम भी होता है. दृश्य ही वह इकाई है जिसके माध्यम से कथा दर्शकों के सामने क्रमशः उद्घाटित होती है. प्रत्येक दृश्य का कोई-न-कोई विशिष्ट उद्देश्य होता है. यदि किसी दृश्य का स्पष्ट उद्देश्य न हो, तो वह न केवल कथा की गति को बाधित करता है, बल्कि दर्शकों की रुचि को भी कम कर सकता है. इसलिए सफल पटकथा में प्रत्येक दृश्य इस प्रकार रचा जाता है कि वह कहानी को आगे बढ़ाने, पात्रों के चरित्र को

उभारने, भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करने तथा कथा की प्रभावशीलता को सुदृढ़ करने में सार्थक योगदान दे.

प्रख्यात पटकथा-लेखक और साहित्यकार मनोहर श्याम जोशी ने अपनी पुस्तक 'पटकथा लेखन : एक परिचय' में कथा-निरूपण और 'चरित्र-चित्रण' को दृश्य-लेखन के दो प्रमुख उद्देश्य माना है. सिनेमा की भाषा में इन्हें क्रमशः 'स्टोरी सीन' (Story Scene) अथवा 'नैरेटिव सीन' (Narrative Scene) तथा 'कैरेक्टर सीन' (Character Scene) कहा जाता है. वस्तुतः दृश्य के उद्देश्य इससे भी अधिक व्यापक होते हैं. आइए, इनके प्रमुख आयामों को विस्तार से समझें.

1. कथा को आगे बढ़ाना

दृश्य का सबसे प्रमुख उद्देश्य कथा को आगे बढ़ाना होता है. प्रत्येक दृश्य कहानी में कोई नई घटना, परिस्थिति, सूचना, संघर्ष या मोड़ प्रस्तुत करता है, जिससे कथानक क्रमशः विकसित होता है. यदि कोई दृश्य कथा के विकास में कोई योगदान नहीं देता, तो उसकी उपस्थिति अनावश्यक मानी जाती है.

पटकथा-लेखन में यह एक महत्त्वपूर्ण कसौटी मानी जाती है कि यदि किसी दृश्य को हटाने पर कथा-प्रवाह अथवा कथा-प्रभाव में कोई अंतर न पड़े, तो उस दृश्य की आवश्यकता पर पुनर्विचार किया जाना चाहिए. एक सफल दृश्य वह है जो दर्शकों को नई जानकारी प्रदान करे, किसी समस्या को जन्म दे, किसी रहस्य को गहरा करे अथवा किसी पात्र को नई दिशा में ले जाए.

यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि सभी दृश्य प्रत्यक्ष रूप से कथा को आगे नहीं बढ़ाते. कुछ दृश्य ऐसे होते हैं जो कथा के भावनात्मक या सौंदर्यात्मक प्रभाव को सुदृढ़ करते हैं. ऐसे दृश्य भी कथा के समग्र प्रभाव के लिए महत्वपूर्ण होते हैं. अतः दृश्य का मूल्यांकन केवल उसकी कथात्मक उपयोगिता से नहीं, बल्कि उसके प्रभाव से भी किया जाना चाहिए.

2. पात्रों का विकास करना

पटकथा में पात्रों का विकास मुख्यतः दृश्यों के माध्यम से ही होता है. उपन्यासकार के पास पात्रों के विचारों, भावनाओं और व्यक्तित्व का वर्णन करने की सुविधा होती है, परंतु दृश्य-माध्यम में यह सुविधा सीमित होती है. यहाँ लेखक को पात्रों को उनके व्यवहार, संवाद, प्रतिक्रियाओं और क्रियाओं के माध्यम से प्रस्तुत करना पड़ता है.

दर्शक किसी पात्र को उसके कार्यों से अधिक अच्छी तरह समझते हैं. वह क्या कहता है, कैसे बोलता है, किन परिस्थितियों में कैसी प्रतिक्रिया देता है और दूसरों के साथ उसका व्यवहार कैसा हैये सभी बातें उसके चरित्र को उद्घाटित करती हैं. इसलिए प्रभावी पटकथा में चरित्र-चित्रण का कार्य प्रत्यक्ष वर्णन की अपेक्षा दृश्यात्मक प्रस्तुति के माध्यम से किया जाता है.

पात्रों का विकास सामान्यतः क्रमिक प्रक्रिया होती है. किसी पात्र का संपूर्ण व्यक्तित्व एक ही दृश्य में प्रकट नहीं किया जाता. दृश्य-दर-दृश्य उसके स्वभाव, विचार, इच्छाएँ, कमजोरियाँ, संघर्ष और संबंध धीरे-धीरे सामने आते हैं. इस प्रकार दर्शक पात्र के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ने लगते हैं और उसका विकास स्वाभाविक प्रतीत होता है.

3. संघर्ष और नाटकीयता उत्पन्न करना

संघर्ष पटकथा का मूल आधार है. जहाँ संघर्ष नहीं होता, वहाँ नाटकीयता भी नहीं होती. इसलिए दृश्य का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य पात्रों के बीच, व्यक्ति और परिस्थिति के बीच अथवा व्यक्ति के भीतर चल रहे संघर्ष को प्रस्तुत करना है.

जब कोई पात्र किसी लक्ष्य की प्राप्ति का प्रयास करता है और उसके मार्ग में बाधाएँ आती हैं, तब संघर्ष उत्पन्न होता है. यही संघर्ष दर्शकों में उत्सुकता बनाए रखता है कि आगे क्या होगा, पात्र समस्या का समाधान कैसे करेगा और उसके प्रयासों का परिणाम क्या होगा.

दृश्य में नाटकीयता तब उत्पन्न होती है जब उसमें भावनात्मक तनाव, विरोध, दुविधा, संकट अथवा अप्रत्याशित घटनाएँ उपस्थित हों. उदाहरणार्थ, नायक और प्रतिनायक के बीच तीखा टकराव, किसी पात्र का नैतिक दुविधा में फँस जाना, अथवा किसी संकटपूर्ण परिस्थिति का अचानक उत्पन्न होना दृश्य को अधिक प्रभावशाली बना देता है.

संघर्ष दर्शकों को पात्रों के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ता है. वे पात्रों की आशाओं, भय, इच्छाओं और चुनौतियों को अनुभव करने लगते हैं. परिणामस्वरूप दृश्य अधिक जीवंत और नाटकीय बन जाता है.

4. भावनात्मक प्रभाव उत्पन्न करना

दृश्य का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य दर्शकों में भावनात्मक प्रतिक्रिया उत्पन्न करना भी है. किसी दृश्य के माध्यम से करुणा, हास्य, भय, प्रेम, आश्चर्य, रोमांच, उत्साह या संवेदना जैसी भावनाएँ जागृत की जा सकती हैं. प्रभावी दृश्य दर्शकों को केवल कहानी नहीं दिखाता, बल्कि उन्हें कहानी का अनुभव कराता है.

पटकथा-विमर्श के क्षेत्र में चर्चित लेखक रामकुमार सिंह और सत्यांशु सिंह ने अपनी पुस्तक आइडिया से परदे तक : कैसे सोचता है फिल्म का लेखक? में दृश्य के नाटकीय (Dramatic) और हास्यात्मक (Comedic) कार्यों की चर्चा की है. उनके अनुसार कुछ दृश्य कथा को प्रत्यक्ष रूप से आगे नहीं बढ़ाते, फिर भी वे दर्शकों को कथा से भावनात्मक रूप से जोड़ने में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं.

प्रसिद्ध फिल्म निर्देशक **राजकुमार हिरानी** के एल.सी.डी. फॉर्मूले (Laugh, Cry, Drama) का उल्लेख करते हुए वे बताते हैं कि किसी भी दृश्य में कम-से-कम इनमें से एक तत्व अवश्य होना चाहिए. अर्थात् दृश्य दर्शकों को हँसाए, रुलाए अथवा किसी नाटकीय अनुभव से जोड़े. यदि किसी दृश्य में इन तीनों में से कोई भी तत्व उपस्थित नहीं है, तो उसकी प्रभावशीलता कम हो सकती है.

5. वातावरण और परिवेश की स्थापना

दृश्य केवल घटनाओं का प्रस्तुतीकरण नहीं करता, बल्कि कथा के समय, स्थान और सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश को भी स्थापित करता है. दर्शकों को यह समझने में सहायता मिलती है कि कथा कहाँ घट रही है, किस समय की है और उस समाज का स्वरूप कैसा है.

(क) समय और काल का निर्धारण

दृश्य यह संकेत देता है कि कथा वर्तमान, अतीत, भविष्य या किसी विशिष्ट ऐतिहासिक कालखंड में घटित हो रही है. उदाहरण के लिए, प्राचीन काल को दर्शाने के लिए महल, पारंपरिक वेशभूषा, मशालें और रथों का प्रयोग किया जा सकता है, जबकि आधुनिक परिवेश को मोबाइल फोन, इंटरनेट और आधुनिक जीवनशैली के माध्यम से व्यक्त किया जा सकता है.

(ख) स्थान की पहचान

दृश्य यह भी स्पष्ट करता है कि कथा किस स्थान पर घट रही है. गाँव, शहर, जंगल, समुद्रतट, विद्यालय, युद्धभूमि अथवा किसी घर का वातावरणसभी का अपना विशिष्ट स्वरूप होता है. दृश्य में प्रयुक्त वस्तुएँ, ध्वनियाँ, प्रकाश और पृष्ठभूमि उस स्थान की पहचान निर्मित करते हैं.

(ग) सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश

दृश्य किसी समाज की संस्कृति, परंपराओं, भाषा, वेशभूषा और जीवन-मूल्यों को भी अभिव्यक्त करता है. पात्रों का व्यवहार, सामाजिक संबंध, त्योहार, संगीत और जीवन-शैली उस समाज की पहचान को दर्शाते हैं. इस प्रकार दर्शक कथा की सामाजिक पृष्ठभूमि को सहज रूप से समझ पाते हैं.

(घ) मनोवैज्ञानिक वातावरण का निर्माण

दृश्य केवल बाहरी परिवेश ही नहीं, बल्कि पात्रों की मानसिक स्थिति और भावनात्मक वातावरण को भी व्यक्त करता है. प्रकाश, रंग, ध्वनि और दृश्य-संयोजन के माध्यम से भय, तनाव, अकेलापन, रहस्य, प्रसन्नता या आशा जैसी भावनाएँ निर्मित की जाती हैं.

(ड) कथा की विश्वसनीयता

उचित वातावरण और परिवेश कथा को यथार्थपरक और विश्वसनीय बनाते हैं. जब दृश्य कथा के अनुरूप होते हैं, तो दर्शक कहानी के संसार में अधिक गहराई से प्रवेश कर पाते हैं. परिणामस्वरूप कथा का प्रभाव बढ़ जाता है.

6. सूचना और संकेत प्रदान करना

दृश्य का एक महत्त्वपूर्ण उद्देश्य दर्शकों को आवश्यक सूचना प्रदान करना तथा भविष्य की घटनाओं के संकेत देना भी है. इसके माध्यम से कथा अधिक संगठित, रोचक और प्रभावशाली बनती है.

(क) आवश्यक सूचना प्रदान करना

कुछ दृश्यों का प्रमुख उद्देश्य कथा से संबंधित आवश्यक जानकारी देना होता है. यह जानकारी पात्रों, परिस्थितियों, संबंधों, स्थानों या आगामी घटनाओं से जुड़ी हो सकती है. सिनेमा की भाषा में ऐसी सूचनात्मक प्रस्तुति को 'एक्सपोज़िशन' (Exposition) कहा जाता है.

उदाहरण के लिए, किसी संवाद, पत्र, समाचार-पत्र, फोन कॉल या अन्य वस्तु के माध्यम से दर्शकों को किसी पात्र की आर्थिक स्थिति, पारिवारिक संबंधों अथवा किसी समस्या की जानकारी दी जा सकती है.

(ख) भविष्य की घटनाओं का संकेत

पटकथा में अनेक दृश्य भविष्य में घटने वाली घटनाओं का सूक्ष्म संकेत देते हैं. इस तकनीक को 'पूर्वाभास' (Foreshadowing) कहा जाता है. यह संकेत प्रत्यक्ष भी हो सकते हैं और प्रतीकात्मक भी.

उदाहरणार्थ, किसी पात्र का बार-बार घड़ी की ओर देखना, टूटती हुई तस्वीर, बुझता हुआ दीपक या किसी साधारण संवाद का बार-बार दोहराया जाना आगे आने वाली महत्त्वपूर्ण घटनाओं की ओर संकेत कर सकता है.

(ग) रहस्य और उत्सुकता बनाए रखना

कई बार दृश्य पूरी जानकारी तुरंत नहीं देता, बल्कि कुछ बातों को अधूरा छोड़ देता है. इससे रहस्य और रोमांच की स्थिति उत्पन्न होती है. किसी पात्र का रहस्यमय ढंग से गायब हो जाना, किसी अज्ञात व्यक्ति की केवल परछाई दिखाना अथवा किसी बंद कमरे को बार-बार दिखाना दर्शकों की जिज्ञासा को बढ़ाता है.

(घ) प्रतीकों और वस्तुओं के माध्यम से संकेत

दृश्यात्मक माध्यम में संकेत केवल संवादों द्वारा ही नहीं दिए जाते, बल्कि प्रतीकों,

रंगों, ध्वनियों और वस्तुओं के माध्यम से भी व्यक्त किए जाते हैं. काले बादल संकट का, टूटी हुई चूड़ी संबंध-विच्छेद का तथा धीमा संगीत उदासी या खतरे का संकेत बन सकता है. ऐसे प्रतीक दृश्य को अधिक कलात्मक और अर्थपूर्ण बनाते हैं.

सूचना और संकेत देने वाले दृश्य दर्शकों को कथा में सक्रिय रूप से सहभागी बनाते हैं. वे केवल घटनाएँ नहीं देखते, बल्कि उनके अर्थों को समझने और आगे की संभावनाओं का अनुमान लगाने का प्रयास भी करते हैं.

7. दृश्यात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावी बनाना

पटकथा दृश्य माध्यम के लिए लिखी जाती है. इसलिए दृश्य का उद्देश्य केवल संवाद प्रस्तुत करना नहीं, बल्कि हाव-भाव, क्रिया, प्रकाश, रंग, ध्वनि और दृश्यात्मक संकेतों के माध्यम से अर्थ व्यक्त करना भी होता है. यही कारण है कि पटकथा-लेखन का मूल सिद्धांत है **– "Show, Don't Tell" (दिखाओ, बताओ नहीं)**.

दर्शक किसी पात्र की मनःस्थिति, संबंधों की जटिलता अथवा किसी घटना के प्रभाव को सुनने की अपेक्षा देखकर अधिक गहराई से अनुभव करते हैं. इसलिए प्रभावी दृश्य वे होते हैं जिनमें अर्थ स्वयं दृश्यात्मक रूप से प्रकट होता है.

उदाहरण के लिए, यदि कोई पात्र केवल यह कहे कि वह दुखी है, तो उसका प्रभाव सीमित रहेगा. किंतु यदि वही पात्र किसी पुराने पत्र को बार-बार पढ़ते हुए आँसू बहाता दिखाई दे, तो दर्शक बिना किसी अतिरिक्त संवाद के उसकी पीड़ा को समझ सकते हैं. यही दृश्यात्मक अभिव्यक्ति की शक्ति है.

हाव-भाव, शारीरिक क्रियाएँ, प्रकाश, रंग और ध्वनि दृश्य को प्रभावशाली बनाते हैं. चेहरे की मुस्कान, आँखों की चमक, काँपते हाथ, झुके हुए कंधे अथवा तेज़ कदमों से चलना पात्र की मानसिक अवस्था को व्यक्त कर सकते हैं. इसी प्रकार उज्जवल प्रकाश आशा और प्रसन्नता का, जबकि धुंधला प्रकाश रहस्य और भय का वातावरण निर्मित कर सकता है.

पृष्ठभूमि संगीत और ध्वनि-प्रभाव भी दृश्य की भावनात्मक शक्ति को बढ़ाते हैं. घड़ी की टिक-टिक, बारिश की आवाज़, दूर से आती ट्रेन की सीटी या अचानक छा जाने वाला सन्नाटा दृश्य के अर्थ को और अधिक गहरा बना सकते हैं.

दृश्यात्मक अभिव्यक्ति का अंतिम उद्देश्य कथा को अधिक जीवंत, रोचक और स्मरणीय बनाना है. दर्शक उन दृश्यों को लंबे समय तक याद रखते हैं जो सशक्त चित्रों, प्रभावशाली क्रियाओं और गहन भावनात्मक संकेतों के माध्यम से प्रस्तुत किए गए हों. यही कारण है कि सफल पटकथाएँ संवादों की अपेक्षा दृश्यात्मक प्रस्तुति पर अधिक निर्भर रहती हैं.

आपने दृश्य के उद्देश्य को ठीक से समझ लिया है. अब अपनी समझ की जाँच कीजिए. निम्न वाक्यों की सत्यता-असत्यता का निर्णय कीजिए :

- **बोध प्रश्न.**

1. प्रत्येक दृश्य का कोई न कोई निश्चित उद्देश्य होना चाहिए.
2. पटकथा में पात्रों का विकास केवल वर्णन द्वारा किया जाता है.
3. संघर्ष कथा को गतिशील बनाता है.
4. दृश्य केवल घटनाओं को दिखाने का माध्यम है, वातावरण स्थापित करने का नहीं.
5. प्रतीकों और वस्तुओं के माध्यम से भी संकेत दिए जा सकते हैं.

4.6 समय और स्थान का प्रयोग

विद्यार्थी मित्रो! समय और स्थान के प्रयोग की सीमित चर्चा हम दृश्य के उद्देश्य के संदर्भ में ऊपर भी कर चुके हैं. यहाँ पुनः इस विषय पर अलग से विचार करने की आवश्यकता इसलिए है, क्योंकि पटकथा एक साहित्यिक रचना होने से ज्यादा एक तकनीकी दस्तावेज है जिसका प्रयोग शूटिंग की तैयारी के लिए प्रोडक्शन टीम करती है. लेखन करते हुए पटकथा लेखक को प्रत्येक दृश्य के ऊपर समय और स्थान का स्पष्ट उल्लेख करना होता है, जिससे प्रोडक्शन टीम बिना किसी संदेह के अपनी तैयारी समय और स्थान के अनुरूप उपयुक्त ढंग से कर सके.

किसी भी तरह का कोई भी दृश्य हो– वास्तविक या काल्पनिक, घोर यथार्थवादी अथवा नितांत फंतासी (fantasy), उसका कोई समय और कोई स्थान होना सुनिश्चित है. यह समय दिन के उजाले का हो सकता है या फिर रात के अँधेरे का. शूटिंग व्यवस्था के लिए समय के बस यही दो विभाग होना काफी है. हालाँकि लेखक समय के विषय में और सुनिश्चित हो सकता है और दोपहर के 2:00 बजे या रात के 8:00 बजे ऐसे संकेत भी दे सकता है, लेकिन दृश्य के शीर्षक में उसे 'उजाले' और 'अँधेरे' के संदर्भ में 'दिन' या 'रात' का उल्लेख करना ही पर्याप्त होता है. इसी तरह स्थान कोई भी हो, पर उसे दो ही वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है – 'अंदर' यानी कि किसी छत के नीचे या फिर 'बाहर' यानी मुले आसमान के नीचे.

उपर्युक्त दोनों तथ्यों के हवाले से पटकथा के प्रत्येक दृश्य का शीर्षक **INT - Day; INT - Night; EXT - Day; EXT - Night** - इन चारों में से कोई एक होता है. इसके बाद लेखक समय और स्थान का और अधिक विवरण देने के लिए स्वतंत्र होता है.

किसी भी दृश्य की प्रभावशीलता केवल पात्रों और घटनाओं पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि वह घटना कब और कहाँ घटित हो रही है. समय और स्थान दृश्य को वास्तविक्ता, विश्वसनीयता तथा संदर्भ प्रदान करते हैं. इनके माध्यम से दर्शक कथा के वातावरण, परिस्थितियों और भावनात्मक स्थिति को बेहतर ढंग से समझ पाते हैं. एक कुशल पटकथा लेखक समय और स्थान का ऐसा चयन करता है कि वे कथा की विषयवस्तु, पात्रों और घटनाओं के अनुरूप हों तथा दृश्य के नाटकीय प्रभाव को बढ़ाएँ.

4.6.1 समय का प्रयोग

पटकथा में समय से आशय उस कालखंड या समयावधि से है जिसमें कोई घटना घटित हो रही होती है. समय दृश्य की प्रकृति, वातावरण, प्रकाश व्यवस्था, पात्रों की गतिविधियों तथा भावनात्मक प्रभाव को निर्धारित करता है. इसलिए पटकथा में समय का उल्लेख स्पष्ट रूप से किया जाता है.

समय के प्रमुख प्रकार

1. सुबह (Morning)

सुबह का समय सामान्यतः नई शुरुआत, आशा, ताजगी, ऊर्जा और सकारात्मकता का प्रतीक माना जाता है. सूर्योदय, पक्षियों की चहचहाहट और प्राकृतिक प्रकाश दृश्य को जीवंत बनाते हैं. उदाहरण के लिए एक विद्यार्थी परीक्षा के दिन उत्साहपूर्वक सुबह जल्दी उठकर तैयारी करता है.

2. दोपहर (Afternoon)

दोपहर का समय दैनिक गतिविधियों, व्यस्तता और कार्यशीलता को दर्शाता है. यह समय

सामान्य जीवन की गतिविधियों को प्रस्तुत करने के लिए उपयुक्त माना जाता है. उदाहरणार्थ बाज़ार में लोगों की भीड़, कार्यालयों में कार्यरत कर्मचारी अथवा विद्यालय में चल रही कक्षाएँ.

3. **शाम (Evening)**

शाम का समय दिन और रात के बीच का संक्रमणकाल है. यह विश्राम, चिंतन, मिलन अथवा किसी नई घटना की भूमिका तैयार करने के लिए उपयुक्त होता है. उदाहरण के लिए सूर्यास्त के समय किसी पात्र का अकेले बैठकर अपने जीवन के बारे में विचार करना.

4. **रात (Night)**

रात्रि का समय रहस्य, रोमांच, भय, गोपनीयता अथवा आत्मचिंतन को व्यक्त करने के लिए प्रभावी माना जाता है. अंधकार और सीमित दृश्यता नाटकीय प्रभाव को बढ़ा सकते हैं. उदाहरण के लिए सुनसान सड़क पर किसी रहस्यमयी व्यक्ति का दिखाई देना.

5. **भूतकाल (Flashback)**

जब कथा वर्तमान से अतीत की ओर जाती है और पूर्व में घटित किसी घटना को दिखाया जाता है, तो उसे फ्लैशबैक कहा जाता है. इसका उपयोग पात्रों की पृष्ठभूमि, प्रेरणाओं या महत्त्वपूर्ण घटनाओं को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है.

6. **भविष्यकाल (Flashforward)**

जब वर्तमान कथा से आगे भविष्य में घटित होने वाली संभावित घटना दिखाई जाती है, तो उसे फ्लैशफॉरवर्ड कहते हैं. यह तकनीक दर्शकों में उत्सुकता और जिज्ञासा उत्पन्न करती है.

4.6.2 समय के प्रयोग का महत्त्व

1. **वातावरण का निर्माण**

समय दृश्य के वातावरण को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है. एक ही स्थान अलग-अलग समय पर भिन्न प्रभाव उत्पन्न कर सकता है. उदाहरण के लिए, दिन में शांत दिखाई देने वाला जंगल रात में भयावह लग सकता है.

2. **भावनात्मक प्रभाव की सृष्टि**

समय के अनुसार दर्शकों की भावनात्मक प्रतिक्रिया भी बदलती है. सुबह आशा और उत्साह का भाव उत्पन्न करती है, जबकि रात एकांत, रहस्य या तनाव की अनुभूति करा सकती है.

3. **कथा की गति और विकास**

समय परिवर्तन के माध्यम से कहानी को आगे बढ़ाया जाता है. 'अगले दिन', 'एक वर्ष बाद' या 'कुछ घंटों' बाद जैसे संकेत कथा में समय की निरंतरता बनाए रखते हैं तथा घटनाओं के विकास को स्पष्ट करते हैं.

4. **यथार्थता की स्थापना**

समय का उचित निर्धारण दृश्य को अधिक विश्वसनीय बनाता है. उदाहरण के लिए, विद्यालय की कक्षा का दृश्य प्रायः दिन में अधिक स्वाभाविक लगेगा, जबकि आधी रात में वही दृश्य असामान्य या रहस्यमय प्रतीत होगा.

5. **नाटकीय तनाव का निर्माण**

समय-सीमा (Deadline) कई बार कथा में तनाव उत्पन्न करती है. यदि किसी पात्र को सीमित समय में कोई महत्वपूर्ण कार्य पूरा करना हो, तो दर्शकों की उत्सुकता बढ़ जाती है.

4.6.3 फ्लैशबैक का प्रयोग

फ्लैशबैक पटकथा की एक महत्वपूर्ण तकनीक है, जिसके माध्यम से दर्शकों को अतीत की घटनाओं से परिचित कराया जाता है. यह तकनीक पात्रों के व्यक्तित्व, संबंधों और वर्तमान परिस्थितियों को समझाने में सहायता करती है.

- फ्लैशबैक के उद्देश्य
- पात्र की पृष्ठभूमि स्पष्ट करना.
- किसी रहस्य का खुलासा करना.
- वर्तमान घटनाओं का कारण बताना.
- दर्शकों की भावनात्मक भागीदारी बढ़ाना.

उदाहरण

एक वृद्ध व्यक्ति पार्क में बैठा हुआ अपने बचपन के दिनों को याद करता है. दृश्य अचानक अतीत में चला जाता है और दर्शक उसके बचपन की घटनाएँ देखते हैं. इससे उसके वर्तमान व्यक्तित्व को समझने में सहायता मिलती है.

4.6.4 स्थान का प्रयोग

स्थान वह भौतिक परिवेश है जहाँ दृश्य घटित होता है. स्थान केवल पृष्ठभूमि भर नहीं होता, बल्कि वह कथा के अर्थ, वातावरण और पात्रों की परिस्थितियों को भी व्यक्त करता है. उचित स्थान चयन दृश्य को अधिक प्रभावशाली और विश्वसनीय बनाता है.

प्रत्येक स्थान अपनी विशिष्ट सामाजिक, सांस्कृतिक और भावनात्मक विशेषताओं के कारण दृश्य को अलग प्रभाव प्रदान करता है.

4.6.5 स्थान चयन का महत्त्व

1. कथा की विश्वसनीयता

उचित स्थान कहानी को वास्तविक और प्रामाणिक बनाता है. यदि किसी किसान की कहानी दिखाई जा रही है, तो गाँव और खेतों का परिवेश कथा को अधिक विश्वसनीय बनाएगा.

2. वातावरण निर्माण

स्थान दृश्य की भावनात्मक प्रकृति को प्रभावित करता है. अस्पताल चिंता और गंभीरता का वातावरण उत्पन्न कर सकता है, जबकि उद्यान शांति और प्रसन्नता का भाव प्रदान कर सकता है.

3. पात्रों की पहचान

स्थान के माध्यम से पात्रों की सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का संकेत मिलता है. एक आलीशान बंगला और एक साधारण झोपड़ी दो अलग-अलग जीवन-स्थितियों को दर्शाते हैं.

4. संघर्ष और नाटकीयता को बढ़ाना

कुछ स्थान स्वाभाविक रूप से नाटकीय परिस्थितियाँ उत्पन्न करते हैं. अदालत में होने वाला दृश्य न्याय और संघर्ष का भाव उत्पन्न करता है, जबकि युद्धक्षेत्र संकट और तनाव का वातावरण निर्मित करता है.

5. **दृश्यात्मक आकर्षण**

विविध और उपयुक्त स्थान दर्शकों की रुचि बनाए रखते हैं तथा दृश्य को अधिक प्रभावशाली बनाते हैं. सुंदर प्राकृतिक स्थल, ऐतिहासिक इमारतें अथवा भीड़भाड़ वाले शहरी क्षेत्र दृश्य को दृश्यात्मक समृद्धि प्रदान करते हैं.

4.6.6 समय और स्थान का संयुक्त प्रभाव

पटकथा में समय और स्थान अलग-अलग नहीं, बल्कि परस्पर जुड़े हुए तत्व हैं. दोनों मिलकर दृश्य की संपूर्ण अनुभूति का निर्माण करते हैं. एक ही स्थान अलग-अलग समय पर भिन्न प्रभाव उत्पन्न कर सकता है और एक ही समय विभिन्न स्थानों पर अलग-अलग वातावरण निर्मित कर सकता है.

उदाहरण

'रात का सुनसान रेलवे स्टेशन' – यह दृश्य भय, रहस्य और अनिश्चितता का वातावरण उत्पन्न करता है.

'सुबह का ग्रामीण खेत' – यह दृश्य शांति, आशा और श्रमशील जीवन का संकेत देता है.

'बरसात की शाम में शहर की व्यस्त सड़क' – यह दृश्य भागदौड़, तनाव और जीवन की गतिशीलता को व्यक्त कर सकता है.

इस प्रकार समय और स्थान का समन्वित प्रयोग दृश्य को अधिक जीवंत, प्रभावशाली और अर्थपूर्ण बनाता है.

समय और स्थान दृश्य संरचना के आधारभूत तत्व हैं. इनके बिना किसी भी दृश्य की स्पष्ट कल्पना संभव नहीं है. समय दृश्य की गति, वातावरण और भावनात्मक प्रभाव को निर्धारित करता है, जबकि स्थान कथा की विश्वसनीयता, परिवेश और सामाजिक संदर्भ को स्पष्ट करता है. जब पटकथा लेखक समय और स्थान का संतुलित एवं उद्देश्यपूर्ण प्रयोग करता है, तब दृश्य अधिक सशक्त, प्रभावपूर्ण और दर्शकों के लिए स्मरणीय बन जाते हैं.

आइये! अब अपनी समझ की जाँच करें. निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर सही विकल्प का चयन करते हुए दें :

- **बोध प्रश्न.**

1. पटकथा में जब वर्तमान कथा से अतीत की किसी घटना को दिखाया जाता है, तो उसे क्या कहा जाता है?

   (अ) फ्लैशफॉरवर्ड (ब) मोंटाज

   (क) फ्लैशबैक (ड) क्लाइमेक्स

2. निम्नलिखित में से कौन-सा समय सामान्यतः रहस्य, रोमांच और भय का वातावरण उत्पन्न करने के लिए उपयुक्त माना जाता है?

   (अ) सुबह (ब) दोपहर

   (क) शाम (ड) रात

3. पटकथा के दृश्य शीर्षक (Scene Heading) में सामान्यतः निम्न में से किन दो तत्वों का स्पष्ट उल्लेख किया जाता है?

   (अ) पात्र और संवाद (ब) समय और स्थान

   (क) कथानक और संघर्ष (ड) वेशभूषा और संगीत

4. निम्नलिखित में से कौन-सा कथन सही है?

(अ) समय केवल प्रकाश व्यवस्था को प्रभावित करता है.

(ब) स्थान केवल दृश्य की पृष्ठभूमि होता है.

(क) समय और स्थान मिलकर दृश्य की संपूर्ण अनुभूति निर्मित करते हैं.

(ड) समय और स्थान का पटकथा लेखन में विशेष महत्त्व नहीं है.

5. किसी किसान की कहानी को अधिक विश्वसनीय बनाने के लिए सबसे उपयुक्त स्थान कौन-सा होगा?

(अ) अदालत (ब) रेलवे स्टेशन

(क) गाँव और खेत (ड) अस्पताल

4.7 दृश्य निरंतरता (Continuity)

शूटिंग सामान्यतया कथाक्रम से नहीं होती. बल्कि शूटिंग के लिए अन्यान्य बातों का ध्यान रखा जाता है, जैसे, एक लोकेशन के सभी दृश्य एक साथ शूट किये जाँय या एक समय के सभी दृश्यों की शूटिंग एक साथ हो. कई बार अभिनेताओं की उपलब्धता अनुपलब्धता के मुताबिक एक पात्र से संबंधित सभी दृश्य एक साथ फिल्माए जा सकते हैं. यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि पटकथा में लिखा हुआ एक पूरा दृश्य भी जरूरी नहीं कि एक साथ फिल्माया जाय. शूटिंग तो शॉट दर शॉट की जाती है और संभव है कि एक शॉट इस दृश्य का हो तो दूसरा किसी अन्य दृश्य का. इन शॉटों को परस्पर जोड़कर पूरी फिल्म तैयार की जाती है. इसलिए 'निरंतरता' पटकथा और दृश्य माध्यम की सफलता का एक अनिवार्य तत्व बन जाती है. यह ध्यान रखना आवश्यक होता है कि एक शॉट से दूसरे शॉट को जोड़ते समय, एक दृश्य से दूसरे दृश्य में जात हुए समय, स्थान, पात्र की निरंतरता बनी रहे, उनमें कोई असंभव परिवर्तन या अंतर न दिखाई पड़ जाय. 'दृश्य निरंतरता' कथा को तार्किक, प्रवाहपूर्ण और विश्वसनीय बनाती है. समय, स्थान, पात्र और वस्तुओं की निरंतरता बनाए रखने से दर्शक बिना किसी भ्रम के कहानी से जुड़ पाते हैं. इसलिए पटकथा लेखन से लेकर फिल्मांकन और संपादन तक प्रत्येक चरण में निरंतरता पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है. एक सफल और प्रभावशाली दृश्य-रचना के लिए निरंतरता केवल तकनीकी आवश्यकता नहीं, बल्कि कलात्मक दक्षता का भी महत्त्वपूर्ण आधार है.

4.7.1 दृश्य निरंतरता का अर्थ

निरंतरता से आशय घटनाओं, पात्रों, वस्तुओं, स्थानों तथा क्रियाओं के बीच तार्किक और दृश्यात्मक संबंध बनाए रखने से है, ताकि कथा एक प्रवाह में आगे बढ़ती हुई प्रतीत हो. दूसरे शब्दों में, एक दृश्य से दूसरे दृश्य तक जाते समय समय, स्थान, पात्र और वस्तुओं की स्थिति में ऐसा सामंजस्य बना रहे कि दर्शक को घटनाएँ स्वाभाविक और वास्तविक लगें.

यदि किसी फिल्म, धारावाहिक या वेब-श्रृंखला में निरंतरता का ध्यान न रखा जाए, तो दर्शक कहानी से जुड़ने के बजाय त्रुटियों पर ध्यान देने लगते हैं. उदाहरण के लिए, यदि किसी पात्र ने एक दृश्य में नीली शर्ट पहनी है और अगले ही क्षण बिना किसी कारण लाल शर्ट में दिखाई दे, तो यह निरंतरता की त्रुटि मानी जाएगी. ऐसी विसंगतियाँ कथा की विश्वसनीयता को कम कर देती हैं.

दृश्य निरंतरता का मूल उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि दर्शक का ध्यान तकनीकी गलतियों पर नहीं, बल्कि कथा और पात्रों पर केंद्रित रहे.

4.7.2 दृश्य निरंतरता के प्रमुख प्रकार

(क) समय निरंतरता (Time Continuity)

समय निरंतरता का संबंध घटनाओं के कालक्रम से होता है. कथा में घटनाएँ जिस क्रम में घटित हो रही हैं, उन्हें उसी तार्किक क्रम में प्रस्तुत किया जाना चाहिए. यदि समय में परिवर्तन हो तो उसका स्पष्ट संकेत दिया जाना आवश्यक है.

उदाहरण के लिए, यदि एक दृश्य में पात्र सुबह विद्यालय जाने की तैयारी कर रहा है और अगले दृश्य में वह विद्यालय पहुँच जाता है, तो यह समय की स्वाभाविक प्रगति है. लेकिन यदि बिना किसी संकेत के सुबह के दृश्य के तुरंत बाद रात का दृश्य दिखा दिया जाए, तो दर्शक भ्रमित हो सकते हैं.

समय निरंतरता बनाए रखने के लिए पटकथा में 'अगले दिन', 'कुछ घंटे बाद', 'एक सप्ताह पश्चात्' जैसे संकेतों का प्रयोग किया जाता है.

(ख) स्थान निरंतरता (Spatial Continuity)

स्थान निरंतरता का अर्थ है कि दृश्य में दिखाए गए स्थानों के बीच तार्किक संबंध बना रहे. दर्शकों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि पात्र कहाँ है और किस दिशा में जा रहा है.

उदाहरण के लिए, यदि एक पात्र घर के मुख्य द्वार से बाहर निकलता है, तो अगले दृश्य में उसे सड़क या घर के बाहर के परिवेश में दिखाई देना चाहिए. यदि वह अचानक किसी अन्य स्थान पर पहुँच जाए और उसके परिवर्तन का कोई कारण या संकेत न दिया जाए, तो स्थान संबंधी निरंतरता भंग हो जाती है.

स्थान निरंतरता दर्शकों को कथा के भौतिक परिवेश को समझने में सहायता करती है और दृश्य को अधिक विश्वसनीय बनाती है.

(ग) पात्र निरंतरता (Character Continuity)

पात्र निरंतरता का संबंध पात्रों की वेशभूषा, शारीरिक बनावट, भाव-भंगिमा, व्यवहार और स्थिति से होता है. एक ही समयावधि में पात्र का स्वरूप और उसकी गतिविधियाँ संगत रहनी चाहिए.

उदाहरण के लिए, यदि किसी पात्र के चेहरे पर चोट का निशान है, तो वह अगले दृश्य में भी तब तक दिखाई देना चाहिए जब तक उसके ठीक होने का कोई कारण न दिखाया जाए. इसी प्रकार, यदि पात्र बैठा हुआ है तो अगले शॉट में अचानक खड़ा हुआ दिखाई देना निरंतरता की त्रुटि हो सकती है.

पात्र निरंतरता कथा की विश्वसनीयता को बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

(घ) वस्तु निरंतरता (Prop Continuity)

दृश्य में प्रयुक्त वस्तुओं (Props) की स्थिति, संख्या और स्वरूप में एकरूपता बनाए रखना वस्तु निरंतरता कहलाता है.

उदाहरण के लिए, यदि मेज पर रखी हुई पुस्तक एक शॉट में दाईं ओर है, तो अगले शॉट में वह बिना किसी क्रिया के बाईं ओर नहीं दिखाई देनी चाहिए. इसी प्रकार, किसी पात्र के हाथ में पकड़ा हुआ मोबाइल फोन या कप अगले शॉट में अचानक गायब नहीं होना चाहिए.

वस्तु निरंतरता छोटी-सी बात प्रतीत हो सकती है, परंतु दर्शकों की दृष्टि ऐसी त्रुटियों को शीघ्र पकड़ लेती है.

4.7.3 दृश्य निरंतरता का महत्त्व

1. कथा को स्पष्ट और सुगम बनाना

निरंतरता कथा के प्रवाह को बनाए रखती है. इससे दर्शक घटनाओं को आसानी से समझ पाते हैं और कहानी में किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न नहीं होता.

2. दर्शकों की रुचि बनाए रखना

जब दृश्य तार्किक और क्रमबद्ध होते हैं, तब दर्शक कहानी से भावनात्मक रूप से जुड़े रहते हैं. निरंतरता की त्रुटियाँ उनका ध्यान भटका सकती हैं.

3. दृश्य की विश्वसनीयता बढ़ाना

निरंतरता किसी भी दृश्य को यथार्थपरक बनाती है. इससे दर्शकों को घटनाएँ वास्तविक प्रतीत होती हैं और कथा का प्रभाव बढ़ता है.

4. संपादन प्रक्रिया को सरल बनाना

फिल्मांकन के दौरान दृश्य प्रायः क्रम से नहीं शूट किए जाते. निरंतरता बनाए रखने से संपादक विभिन्न शॉट्स को आसानी से जोड़ सकता है और कथा का प्रवाह स्वाभाविक बना रहता है.

5. पेशेवर गुणवत्ता सुनिश्चित करना

उत्तम निरंतरता किसी फिल्म, धारावाहिक या वीडियो निर्माण की तकनीकी गुणवत्ता को दर्शाती है. यह निर्माता और निर्देशक की कार्यकुशलता का भी प्रमाण होती है.

4.7.4 निरंतरता भंग होने के उदाहरण

- दृश्य निरंतरता की त्रुटियाँ कई प्रकार की हो सकती हैं. कुछ सामान्य उदाहरण निम्नलिखित हैं.
- एक दृश्य में पात्र के हाथ में पुस्तक है, लेकिन अगले ही शॉट में पुस्तक बिना किसी कारण के गायब हो जाती है.
- पात्र का चश्मा एक शॉट में लगा हुआ है और अगले शॉट में अचानक गायब हो जाता है.
- दिन के दृश्य के तुरंत बाद बिना किसी संकेत के रात का दृश्य दिखाया जाता है.
- पात्र एक दिशा में चलता हुआ दिखाई देता है, लेकिन अगले दृश्य में वह विपरीत दिशा से आता हुआ दिखता है.
- मेज पर रखा हुआ पानी का गिलास एक शॉट में आधा भरा है और अगले शॉट में पूरा भर जाता है.
- पात्र के बालों की शैली या कपड़ों का रंग बिना किसी कारण बदल जाता है.
- ऐसी त्रुटियाँ दर्शकों का ध्यान कथा से हटाकर तकनीकी कमियों की ओर आकर्षित कर देती हैं.

4.7.5 दृश्य निरंतरता बनाए रखने के उपाय

1. विस्तृत पटकथा लेखन

पटकथा में प्रत्येक दृश्य, पात्र, वस्तु और समय का स्पष्ट विवरण दिया जाना चाहिए. इससे फिल्मांकन के दौरान भ्रम की संभावना कम हो जाती है.

2. दृश्य सूची (Scene List) तैयार करना

दृश्यों का क्रमबद्ध रिकॉर्ड रखने से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि कथा की संरचना और घटनाओं का क्रम सही बना रहे.

3. कंटिन्यूटी नोट्स तैयार करना

फिल्मांकन के समय प्रत्येक शॉट की जानकारी, पात्रों की स्थिति, वस्तुओं की व्यवस्था तथा अन्य विवरण लिखित रूप में सुरक्षित रखने चाहिए. इन्हें कंटिन्यूटी नोट्स कहा जाता है.

4. वेशभूषा और प्रॉप्स का रिकॉर्ड रखना

पात्रों के कपड़ों, आभूषणों, मेकअप और दृश्य में प्रयुक्त वस्तुओं का विस्तृत रिकॉर्ड तथा फोटोग्राफ सुरक्षित रखना उपयोगी होता है. इससे बाद में शूट किए जाने वाले दृश्यों में समानता बनाए रखी जा सकती है.

5. कंटिन्यूटी सुपरवाइज़र की नियुक्ति

बड़े फिल्म और टेलीविजन निर्माण में एक विशेष व्यक्ति को निरंतरता की निगरानी का कार्य सौंपा जाता है. वह प्रत्येक शॉट का निरीक्षण करके संभावित त्रुटियों को रोकता है.

6. संपादन में सावधानी

संपादन के समय विभिन्न शॉट्स को जोड़ते हुए यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि पात्रों की स्थिति, क्रिया, दिशा, समय और वस्तुएँ एक-दूसरे से मेल खाती हों.

उपर्युक्त में से यद्यपि केवल पहला पॉइंट ही पटकथा लेखक से संबंधित है, तथापि प्रक्रिया की पूरी समझ के लिए आगे के बिंदुओं को भी ध्यान में रखना अपेक्षित है.

विद्यार्थी मित्रो! 'दृश्य निरंतरता' को आपने अच्छी तरह समझ लिया है, तो निम्नांकित प्रश्नों के सही उत्तर देकर अपनी समझ को परखें.

- **बोध प्रश्न.**

यहाँ प्रत्येक प्रश्न में दो कथन दिए गए हैं – अभिकथन (A) तथा कारण (R). प्रत्येक प्रश्न के लिए नीचे दिये गये विकल्पों में से सही विकल्प चुनिए:

(A) A और R दोनों सत्य हैं तथा R, A की सही व्याख्या करता है.

(B) A और R दोनों सत्य हैं, किन्तु R, A की सही व्याख्या नहीं करता है.

(C) A सत्य है, किन्तु R असत्य है.

(D) A असत्य है, किन्तु R सत्य है.

1. **अभिकथन (A)** : दृश्य निरंतरता कथा को तार्किक, प्रवाहपूर्ण और विश्वसनीय बनाती है.
   कारण (R) : निरंतरता बनाए रखने से दर्शक बिना किसी भ्रम के कहानी से जुड़ पाते हैं.

2. **अभिकथन (A)** : समय निरंतरता में घटनाओं को उनके तार्किक कालक्रम के अनुसार प्रस्तुत किया जाता है.
   कारण (R) : समय में परिवर्तन होने पर उसका स्पष्ट संकेत देना आवश्यक होता है.

3. **अभिकथन (A)** : पात्र निरंतरता का संबंध केवल पात्रों के संवादों से होता है.
   कारण (R) : पात्र निरंतरता में वेशभूषा, शारीरिक बनावट, भाव-भंगिमा और स्थिति की संगति भी महत्त्वपूर्ण होती है.

4. **अभिकथन (A)** : एक शॉट में पात्र के हाथ में पुस्तक होना और अगले शॉट में उसका बिना कारण गायब हो जाना वस्तु निरंतरता की त्रुटि है.
   कारण (R) : वस्तु निरंतरता में दृश्य में प्रयुक्त वस्तुओं की स्थिति और स्वरुप में एकरुपता बनाए रखना आवश्यक होता है.

5. **अभिकथन (A)** : फिल्मांकन के दौरान दृश्य प्रायः कथा के क्रम में ही शूट किए जाते हैं.

कारण (R) : शूटिंग में लोकेशन, समय और कलाकारों की उपलब्धता जैसे व्यावहारिक पक्षों को ध्यान में रखा जाता है.

4.8 दृश्य लेखन का प्रारूप

विद्यार्थी मित्रो! अब तक आपने पटकथा के लिए आवश्यक दृश्य संरचना के लिए सभी आवश्यक बातों को अच्छी तरह समझ लिया होगा. अब आपको उपर्युक्त सूचनाओं के आधार पर दृश्य लेखन का अभ्यास करना चाहिए. यहाँ हम दृश्य लेखन का एक सामान्य प्रारूप प्रस्तुत कर रहे हैं. आप अपने पसंद की कोई कहानी या घटना चुनें और यहाँ दिये गये प्रारूप के आधार पर उसके एक-दो दृश्यों का लेखन करें.

4.8.1 पटकथा दृश्य के मुख्य घटक

1. **सीन हेडिंग/स्लज लाइन (Scene Heading / Slug line)** : यह सबसे ऊपर होता है जो बताता है कि दृश्य अंदर है या बाहर, जगह का नाम, और दिन या रात. जैसे – आंतरिक (INT.) - राहुल का कमरा – रात.
2. **एक्शन लाइन (Action Line)** : इसमें वर्तमान काल में यह लिखा जाता है कि स्क्रीन पर क्या घटित हो रहा है और पात्र क्या कर रहे हैं.
3. **चरित्र का नाम** : जब कोई पात्र बोलता है, तो उसका नाम संवाद के ठीक ऊपर केंद्र में कैपिटल अक्षरों में लिखा जाता है.
4. **संवाद (Dialogue)** : पात्र जो बोलता है, उसे केंद्र में लिखा जाता है.
5. **कोष्ठक (Parentheticals)** : यदि बोलते समय कोई भाव या कोई ख़ास क्रिया दिखाना हो, तो उसे कोष्ठक () में संवाद और चरित्र के नाम के बीच में लिखा जाता है.

4.8.2 उदाहरण

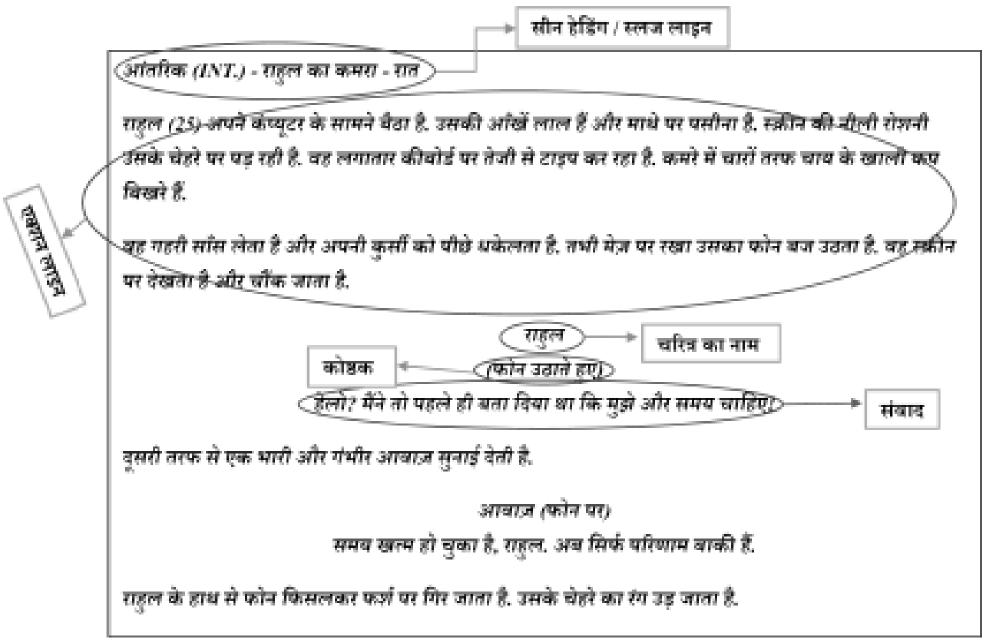

उपर्युक्त प्रारूप के अनुसार अब कुछ अभ्यास करें. नीचे कुछ कहानियों (ये ऐसी कहानियाँ हैं, जिनपर फ़िल्में बन चुकी हैं. आप चाहें तो वे फ़िल्में ढूँढ कर देख सकते हैं.) के शीर्षक दिये जा रहे हैं. आपको कहानी पढ़ कर किसी भी दृश्य माध्यम के लिए कम से कम दो दृश्यों की संरचना करनी है.

- **कहानियों की सूची**

1. 'उसने कहा था' (चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी')
2. 'शतरंज के खिलाड़ी' (प्रेमचंद)
3. 'तीसरी कसम उर्फ़ मारे गये गुलफाम' (फणीश्वरनाथ 'रेणु')
4. 'यही सच है' (मन्नू भंडारी)
5. 'तिरियाचरित्तर' (शिवमूर्ति)

4.9 सारबिंदु

- विद्यार्थी मित्रो! पूरी इकाई का सार कुछ बिंदुओं के रूप में यहाँ दिया जा रहा है. यदि आपने इकाई पढ़कर समझ ली है, तो इन बिंदुओं को पढ़ने से आपको इस इकाई से संबंधित सभी जरूरी बातें तुरंत याद आ जाएँगी. यदि ऐसा नहीं होता है, तो आपको इकाई पुनः पढ़कर समझने की जरूरत अभी बची हुई है. तो लीजिए! बिंदुओं से पूरी इकाई याद करने की कोशिश कीजिए!
- पटकथा की मूल इकाई दृश्य (Scene) है.
- 'दृश्य' एक ही समय में एक स्थान पर बिना व्यवधान घटित होने वाली क्रिया या घटना का प्रस्तुतिकरण है. समय या स्थान बदलते ही नया दृश्य आरम्भ हो जाता है.
- कथा को आगे बढ़ाना, स्पष्ट क्रिया या घटना होना, अनावश्यक विस्तार से मुक्त होना, प्रभावशाली आरम्भ और अंत रखना तथा दर्शकों की जिज्ञासा बनाए रखना दृश्य की विशेषताएँ हैं.
- दृश्यों के अनेक प्रकार होते हैं, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण हैं आतंरिक और बाह्य, जिन्हें पटकथा लेखक को प्रत्येक दृश्य के ऊपर आतंरिक (ENT) या बाह्य (EXT) के रूप में इंगित करना अनिवार्य होता है.
- प्रत्येक दृश्य का स्पष्ट उद्देश्य होना चाहिए. कथा-विकास, चरित्र-निर्माण, भावनात्मक प्रभाव, संघर्ष और नाटकीयता—इनमें से कम से कम एक अवश्य उत्पन्न करने वाला होना चाहिए.
- सूचना (Exposition) और संकेत (Foreshadowing) देने में दृश्य की महत्त्वपूर्ण भूमिका होती है. दृश्य आवश्यक जानकारी प्रदान करते हैं, भविष्य की घटनाओं का पूर्वाभास देते हैं तथा रहस्य और उत्सुकता बनाए रखते हैं.
- समय और स्थान दृश्य-निर्माण के आधारभूत तत्व हैं. इनके उचित प्रयोग से वातावरण, भावनात्मक प्रभाव, यथार्थता, नाटकीय तनाव और कथा की विश्वसनीयता स्थापित होती है.
- दृश्य निरंतरता (Continuity) पटकथा की तकनीकी सफलता के लिए आवश्यक है. समय, स्थान, पात्र और वस्तुओं की निरंतरता कथा को तार्किक और विश्वसनीय बनाती है.
- दृश्य लेखन में सीन हेडिंग, एक्शन लाइन, चरित्र का नाम, संवाद और कोष्ठक (Parentheticals) मुख्य घटक होते हैं.

4.10 पारिभाषिक शब्दावली

1. **पटकथा (Screenplay)** : दृश्य माध्यम (फिल्म, धारावाहिक, वेब-श्रृंखला आदि) के लिए लिखा गया वह तकनीकी दस्तावेज जिसमें कथा को दृश्यों के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है.

2. **दृश्य (Scene)** : पटकथा में एक ही स्थान पर, एक ही कालखंड में बिना व्यवधान घटित होने वाली क्रिया या घटना को दृश्य कहते हैं. स्थान या समय बदलते ही नया दृश्य आरम्भ हो जाता है.

3. **दृश्य संरचना (Scene Structure)** : पटकथा में दृश्यों का उद्देश्यपूर्ण और क्रमबद्ध संगठन, जिससे कथा प्रभावी ढंग से प्रस्तुत हो सके.

4. **आंतरिक दृश्य (Interior Scene/INT.)** : ऐसा दृश्य जो किसी भवन, कमरे, कार्यालय, घर या किसी बंद स्थान के भीतर घटित होता है. पटकथा में इसे INT द्वारा दर्शाया जाता है.

5. **बाह्य दृश्य (Exterior Scene/EXT.)** : ऐसा दृश्य जो खुले स्थान, सड़क, मैदान, पार्क, जंगल आदि में घटित होता है. पटकथा में इसे EXT. द्वारा दर्शाया जाता है.

6. **दिन दृश्य (Day Scene)** : वह दृश्य जिसे दिन के प्रकाश में घटित दिखाना और फिल्माया जाना हो.

7. **रात्रि दृश्य (Night Scene)** : वह दृश्य जिसमें रात या अंधकार का वातावरण दिखाया जाता है.

8. **फ्लैशबैक (Flashback)** : ऐसी तकनीक जिसमें वर्तमान कथा से अतीत की घटनाओं को दिखाया जाता है. इसका उपयोग पात्रों की पृष्ठभूमि या पूर्व घटनाओं को स्पष्ट करने के लिए किया जाता है.

9. **फ्लैश-फॉरवर्ड (Flashforward)** : वर्तमान कथा से आगे भविष्य में घटने वाली संभावित या कल्पित घटनाओं को दिखाने की तकनीक.

10. **संवाद प्रधान दृश्य (Dialogue Scene)** : ऐसा दृश्य जिसमें पात्रों के संवाद कथा-प्रस्तुति का मुख्य माध्यम होते हैं.

11. **क्रिया प्रधान दृश्य (Action Scene)** : ऐसा दृश्य जिसमें गतिविधि, संघर्ष, पीछा, युद्ध आदि प्रमुख हों.

12. **भाव प्रधान दृश्य (Emotional Scene)** : ऐसा दृश्य जिसमें भावनाएँ, संवेदनाएँ और मनःस्थिति प्रमुख होती है.

13. **परिचयात्मक दृश्य (Introduction Scene)** : पात्र, स्थान या परिस्थिति का परिचय कराने वाला दृश्य.

14. **संघर्ष दृश्य (Conflict Scene)** : वह दृश्य जिसमें समस्या, विरोध या टकराव उत्पन्न होता है.

15. **चरम दृश्य (Climax Scene)** : कथा का सबसे महत्त्वपूर्ण, तनावपूर्ण और निर्णायक दृश्य.

16. **समाधान दृश्य (Resolution Scene)** : वह दृश्य जिसमें कथा का निष्कर्ष या समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जाता है.

17. **मोंताज (Montage)** : अनेक छोटे-छोटे दृश्यों को जोड़कर समय के प्रवाह, विकास या घटनाओं की गति को प्रदर्शित करने की तकनीक.

18. **समानांतर दृश्य (Parallel Scene)** : दो या अधिक स्थानों पर एक ही समय में घट रही घटनाओं को समानांतर रूप से दिखाने वाला दृश्य.

19. **स्वप्न दृश्य (Dream Scene)** : पात्र के स्वप्न, कल्पना या मानसिक अनुभव को दर्शाने वाला दृश्य.

20. **स्टोरी सीन/नैरेटिव सीन (Story Scene/Narrative Scene)** : ऐसा दृश्य जिसका मुख्य उद्देश्य कथा को आगे बढ़ाना हो.

21. **कैरेक्टर सीन (Character Scene)** : ऐसा दृश्य जिसका मुख्य उद्देश्य पात्र के स्वभाव, व्यक्तित्व या चरित्र का विकास करना हो.

22. **संघर्ष (Conflict)** : पात्र और परिस्थिति, दो पात्रों या पात्र के आंतरिक द्वंद्व के बीच उत्पन्न टकराव, जो नाटकीयता का आधार होता है.

23. **नाटकीयता (Dramatic Effect)** : दृश्य में उपस्थित तनाव, दुविधा, संकट, विरोध या भावनात्मक प्रभाव से उत्पन्न आकर्षण.

24. **एक्सपोज़िशन (Exposition)** : कथा, पात्रों, परिस्थितियों या घटनाओं से संबंधित आवश्यक जानकारी दर्शकों तक पहुँचाने की प्रक्रिया, जो सीधे दर्शकों के सामने नहीं होतीं.

25. **पूर्वाभास (Foreshadowing)** : भविष्य में घटने वाली घटनाओं का सूक्ष्म संकेत देने की तकनीक.

26. **दृश्यात्मक अभिव्यक्ति (Visual Expression)** : हाव-भाव, क्रिया, प्रकाश, रंग, ध्वनि और दृश्य संकेतों के माध्यम से अर्थ व्यक्त करने की प्रक्रिया.

27. **'दिखाओ, बताओ नहीं' ("Show, Don't Tell")** : पटकथा लेखन का सिद्धांत जिसके अनुसार बातों को केवल संवादों से बताने के बजाय दृश्यात्मक रूप से दिखाया जाना चाहिए.

28. **दृश्य निरंतरता (Continuity)** : दृश्यों, शॉटों, पात्रों, समय, स्थान और वस्तुओं के बीच तार्किक एवं दृश्यात्मक एकरूपता बनाए रखने की प्रक्रिया.

29. **समय निरंतरता (Time Continuity)** : घटनाओं को उनके तार्किक कालक्रम में प्रस्तुत करने की निरंतरता.

30. **स्थान निरंतरता (Spatial Continuity)** : दृश्यों में स्थानों और दिशाओं के बीच तार्किक संबंध बनाए रखने की निरंतरता.

31. **पात्र निरंतरता (Character Continuity)** : पात्र की वेशभूषा, रूप, व्यवहार, स्थिति और भाव-भंगिमा की एकरूपता बनाए रखना.

32. **वस्तु निरंतरता (Prop Continuity)** : दृश्य में प्रयुक्त वस्तुओं Props की स्थिति, संख्या और स्वरूप की निरंतरता बनाए रखना.

33. **प्रॉप्स (Props)** : दृश्य में प्रयुक्त वे वस्तुएँ जो कथा और दृश्य निर्माण में सहायक होती हैं, जैसे पुस्तक, मोबाइल, कप आदि.

34. **कंटिन्यूटी नोट्स (Continuity Notes)** : शूटिंग के दौरान पात्रों, वस्तुओं, वेशभूषा और शॉटों की स्थिति का लिखित रिकॉर्ड, जिससे निरंतरता बनाए रखी जा सके.

35. **कंटिन्यूटी सुपरवाइज़र (Continuity Supervisor)** : वह व्यक्ति जो फिल्मांकन के दौरान निरंतरता की निगरानी करता है और संभावित त्रुटियों को रोकता है.

36. **सीन हेडिंग/स्लग लाइन (Scene Heading/Slug Line)** : दृश्य का शीर्षक, जो यह बताता है कि दृश्य अंदर है या बाहर, स्थान क्या है और समय दिन है या रात.

37. **एक्शन लाइन (Action Line)** : वह भाग जिसमें वर्तमान काल में दृश्य में घट रही गतिविधियों और क्रियाओं का वर्णन किया जाता है.

38. **चरित्र का नाम (Character Name)** : संवाद से पहले लिखा जाने वाला पात्र का नाम.

39. **संवाद (Dialogue)** : पात्रों द्वारा बोले जाने वाले शब्द.

40. **कोष्ठक (Parentheticals)** : संवाद बोलते समय भाव, स्वर या विशेष क्रिया बताने के लिए प्रयुक्त निर्देश, जो कोष्ठकों में लिखे जाते हैं.

4.11 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न.**
- **निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर विस्तार से दीजिए.**

1. 'दृश्य' की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके प्रकारों का विस्तार से वर्णन कीजिए.
2. पटकथा-लेखन में दृश्य के उद्देश्यों का विवेचन कीजिए.
3. दृश्य निरंतरता (Continuity) का अर्थ स्पष्ट करते हुए उसके प्रकार, महत्त्व तथा निरंतरता बनाए रखने के उपायों पर प्रकाश डालिए.

- **निम्न में से प्रत्येक पर टिप्पणी लिखिए.**

1. आंतरिक (Interior) और बाह्य (Exterior) दृश्य
2. फ्लैशबैक एवं फ्लैशफॉरवर्ड तकनीक
3. दृश्य में समय और स्थान का महत्त्व
4. पात्र निरंतरता (Character Continuity)
5. सूचना (Exposition) एवं पूर्वाभास (Foreshadowing)
6. दृश्य लेखन के मुख्य घटक

- **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर निर्देशानुसार दीजिए.**
- **सही उत्तर का चयन करते हुए उत्तर दें.**

1. पटकथा की मूल इकाई क्या है?

   (अ) अंक (ब) अध्याय

   (क) दृश्य (ड) अनुच्छेद

2. छोटी छोटी घटनाओं को परस्पर जोड़कर बनाया गया दृश्य कहलाता है?

   (अ) बाह्य दृश्य (ब) मोंताज दृश्य

   (क) आंतरिक दृश्य (ड) समानांतर दृश्य

3. कथा के सबसे तनावपूर्ण और महत्त्वपूर्ण क्षण का दृश्य कहलाता है?

   (अ) परिचयात्मक दृश्य (ब) समाधान दृश्य

   (क) भाव प्रधान दृश्य (ड) चरम दृश्य

- **रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए.**

4. समय या स्थान बदलते ही नया .... आरम्भ हो जाता है.

5. पटकथा में आंतरिक दृश्य को .... द्वारा सूचित किया जाता है.

6. समय और स्थान .... के आधारभूत तत्व हैं.

- **निम्नलिखित कथनों के सत्य/असत्य होने का निर्णय करें.**

7. दृश्य केवल घटनाओं का विवरण होता है, उसमें दृश्यात्मकता का महत्त्व नहीं होता.

8. समय, स्थान, पात्र और वस्तुओं की निरंतरता कथा को विश्वसनीय बनाती है.

9. प्रत्येक दृश्य के उद्देश्य को स्पष्ट होना आवश्यक नहीं है.

- **निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए.**

स्तम्भ-A		स्तम्भ-B
(क) मोंताज	(i)	कथा का सबसे महत्वपूर्ण, तनावपूर्ण और निर्णायक दृश्य
(ख) एक्सपोज़िशन	(ii)	अनेक छोटे दृश्यों का संयोजन
(ग) फ़ोरशैडोइंग	(iii)	दर्शकों के सामने न घटी हुई घटना की सूचना देना
(घ) क्लाइमेक्स	(iv)	भविष्य में घटने वाली घटनाओं का सूक्ष्म संकेत देने की तकनीक

4.12 उपयोगी पाठ्यसामग्री

विद्यार्थी मित्रो! यहाँ आपके अध्ययन के लिए उपयोगी कुछ पुस्तकों की सूची और लिंक दिये जा रहे हैं, जिनका उपयोग इस इकाई को तैयार करने में भी हुआ है और यदि आप सचमुच पटकथा लेखन के क्षेत्र में आगे बढ़ना चाहते हैं तो आपके लिए भी जरूरी और उपयोगी हो सकते हैं.

- आइडिया से परदे तक : कैसे सोचता है फ़िल्म का लेखक?, राजकुमार सिंह और सत्यांशु सिंह', राजकमल प्रकाशन
- 'पटकथा लेखन : एक परिचय', मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन
- पटकथा लेखन : व्यावहारिक निर्देशिका, असग़र वजाहत, राजकमल प्रकाशन
- https://www.studiobinder.com/blog/how-to-write-a-scene-in-a-screenplay/
- https://www.torontofilmschool.ca/blog/script-writing-the-a-to-z-of-script-writing-explained/

इकाई 5 संवाद लेखन

रूपरेखा

5.1 उद्देश्य

5.2 प्रस्तावना

5.3 संवाद की भूमिका

5.4 प्रभावशाली संवाद के गुण

5.5 संवाद और मौन का संतुलन

5.6 सबटेक्स्ट का प्रयोग

5.7 पात्रानुकूल भाषा और शैली

5.8 संवाद में यथार्थ और नाटकीयता

5.9 सारबिंदु

5.10 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

5.11 उपयोगी पाठ्यसामग्री

5.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! बी.ए. (ऑनर्स) प्रथम वर्ष के द्वितीय सेमेस्टर के पाठ्यक्रम HNDSEC-201 पटकथा लेखन की इस पाँचवीं इकाई से पूर्व आप चार इकाइयों का अध्ययन कर चुके हैं. अध्ययन के दौरान आपने पटकथा लेखन का परिचय प्राप्त किया, कथा-विचार एवं कथानक से परिचित हुए, चरित्र-निर्माण की प्रक्रिया को समझा तत्पश्चात दृश्य-संरचना (Scene) की अवधारणा का अध्ययन किया. अब इस पाँचवीं इकाई के अध्ययनोपरांत आप :-

- पटकथा लेखन में संवाद की महत्त्वपूर्ण भूमिका एवं उसकी कलात्मकता से अवगत होंगे.
- पटकथा लेखन में संवाद के विभिन्न प्रकारों यथा-, मोनोलॉग (Monologue), डूओलॉग (Dulogue), पॉलीलॉग (Polylogue), सामान्य संवाद, संघर्षात्मक संवाद, भावात्मक संवाद, हास्य संवाद, सूचनात्मक संवाद, प्रतीकात्मक संवाद तथा मौन संवाद आदि के स्वरूप और प्रयोग से अवगत होंगे.
- पटकथा लेखन में संवाद लेखन के महत्त्व से परिचित होंगे.
- कहानी एवं उपन्यास के संवाद तथा पटकथा के संवाद के मध्य अंतर को समझ पाएँगे.
- पात्रों की आयु एवं प्रकृति जैसे- बुजुर्ग, युवा, बच्चे तथा स्त्री आदि के अनुरुप संवाद लेखन की प्रक्रिया को समझ पाएँगे.
- संवादों के माध्यम से पात्रों के स्वभाव, विचार, भावनाएँ तथा व्यक्तित्व की अभिव्यक्ति किस प्रकार होती है, तथा संवाद और पात्र के गहरे संबंध को समझ पाएँगे.

- संवादों की मारकता, प्रभावशीलता तथा भावाभिव्यक्ति को सशक्त बनाने में प्रयुक्त शब्द-शक्तियों, अभिधा, लक्षणा एवं व्यंजना के महत्त्व और उनके अनुप्रयोग को समझ पाएँगे.
- एक अच्छे संवाद लेखक के लिए अलंकार, प्रतीक, बिंब, मुहावरे, लोकोक्तियाँ तथा कहावतों की गहरी जानकारी और उनके अनुप्रयोग को समझ पाएँगे.

5.2 प्रस्तावना

कहानी हमारे यहाँ श्रुति परंपरा से चली आ रही है और उसके साथ संवाद की परंपरा भी जुड़ी हुई है. यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि हम कहानी अथवा उपन्यास के संवादों की चर्चा नहीं कर रहे हैं, बल्कि फीचर फिल्म, लघु फिल्म, वृत्तचित्र, टेलीफिल्म, धारावाहिक, वेब सीरीज़, डॉक्यू-ड्रामा, विज्ञापन फिल्म तथा एनीमेशन फिल्म आदि के लिए किए जाने वाले पटकथा लेखन के संवादों की बात कर रहे हैं.

कहानी का इतिहास जहाँ हजारों वर्षो पुराना है, वहीं सिनेमा का इतिहास अपेक्षाकृत नवीन है. नवीन होने के साथ-साथ पाश्चात्य प्रभाव से अत्यधिक प्रभावित इस महत्त्वपूर्ण विधा पर हिंदी में अपेक्षित मात्रा में लेखन और अध्ययन नहीं हो सका है. विशेषत: पटकथा और संवाद लेखन के क्षेत्र में हिंदी में गंभीर एवं व्यवस्थित सामग्री का अभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है. ऐसे समय में पटकथा लेखन पर आधारित यह पाठ्यपत्र विद्यार्थियों, पाठकों एवं संवाद लेखक के लिए उपयोगी सिद्ध हो, यही हमारा प्रयास है.

पटकथा में संवाद केवल सामान्य वार्तालाप नहीं होते, बल्कि वे पात्रों के स्वभाव, मनोभाव, अंतर्द्वंद्व, संघर्ष तथा कथा-विकास को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होते हैं. प्रभावी संवाद किसी भी दृश्य को जीवंत, विश्वसनीय और संप्रेषणीय बना देते हैं. संवादों के माध्यम से ही पात्रों की मानसिकता, सामाजिक पृष्ठभूमि, सांस्कृतिक परिवेश तथा उनके आपसी संबंधों का परिचय प्राप्त होता है. ध्यातव्य है कि भारतीय सिनेमा में एक दौर ऐसा भी था कि कादर खान को संवाद लेखक के रूप में विशेष ख्याति प्राप्त हुई थी. हालीवुड में संवाद लेखन का अलग से कोई क्रेडिट नहीं दिया जाता, लेकिन भारत में पटकथा और संवाद दोनों को बराबर महत्त्व दिया गया है. इसकी वजह से ही 'मधर इंडिया', 'प्यासा', 'मुग़ल-ए-आज़म', 'शोले', 'दीवार', 'सत्या', 'लगान', 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' तथा 'मसान' जैसी फिल्मों को संवादों की गुणवत्ता, प्रभावशीलता, साहित्यिकता तथा जनस्मृति में उनकी गहरी उपस्थिति के कारण भारतीय सिनेमा की श्रेष्ठ संवादप्रधान फिल्मों में स्थान दिया जाता है. याद कीजिए, हालाँकि ऐसे संवादों को याद करने का प्रयास नहीं करना पड़ता, वे स्वयं स्मृतियों में बस जाते हैं. फिल्म 'मुगल-ए-आ़जम' में अनारकली का वह साहसपूर्ण संवाद, जब वह शहंशाह अकबर के सामने कहती है- 'प्यार किया तो डरना क्या', इस एक पंक्ति ने प्रेम, विद्रोह और आत्मविश्वास को अमर बना दिया. फिल्म 'शोले' का वह प्रसिद्ध दृश्य, जब गब्बर सिंह पूछता है, "अरे ओ सांभा, कितना इनाम रखा है रे सरकार हम पर" और ऊँची चट्टान पर बैठा सांभा गदोरी में सुर्ती मलते हुए प्रभावपूर्ण स्वर में उत्तर देता है- "पूरे पचास हजार", 'अरे ओ सांभा' जैसे संबोधन का सम्मोहन और 'पूरे पचास हजार' जवाब की मारकता ऐसी है कि दशकों बाद भी उसका आकर्षण और प्रभाव दर्शकों के मन पर आज तक अक्षुण्ण बना हुआ है. यहाँ तक कि इन संवादों को बोलने वाले कलाकार आज

इस दुनिया में नहीं हैं, फिर भी उनके द्वारा बोले गए संवाद आज भी उनके जीवंत होने का एहसास कराते हैं. इसी तरह से फिल्म दीवार का वह प्रसिद्ध दृश्य, जब विजय अपने भाई से कहता है- "आज मेरे पास बिल्डिंग है, प्रॉपर्टी है, बैंक बैलेंस है, बंगला है, गाड़ी है... क्या है तुम्हारे पास" और सामने खड़ा रवि शांत किंतु दृढ़ स्वर में उत्तर देता है- "मेरे पास माँ है", संवाद का यह टकराव आज भी दर्शकों की स्मृतियों में जीवित है.

यही कारण है कि पटकथा लेखन में संवादों को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है. वर्तमान समय में फिल्म, टेलीविजन, वेब सीरीज, ओटीटी मंचों तथा अन्य दृश्य-माध्यमों के निरंतर विस्तार के कारण संवाद लेखन की आवश्यकता और भी अधिक बढ़ गई है. आज का दर्शक केवल कहानी नहीं देखता, बल्कि संवादों के माध्यम से पात्रों के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ता भी है. ऐसे में संवादों की भाषा, शैली, संप्रेषणीयता, प्रभावशीलता तथा कलात्मकता को समझना अत्यंत आवश्यक हो जाता है. प्रस्तुत इकाई में संवाद लेखन की प्रकृति, उसके प्रकार, भाषा-शैली, शब्द-शक्तियों तथा पटकथा में उसकी भूमिका का विस्तारपूर्वक अध्ययन किया जाएगा.

5.3 संवाद की भूमिका

पटकथा लेखन में विचार, कहानी, किरदार और दृश्य के बाद संवाद और उसकी भूमिका आती है. संवाद, जिसे हम आम बोल चाल की भाषा में डायलॉग (Dialogue) कहते हैं. संवाद केवल पात्रों की बातचीत भर नहीं होते, बल्कि वे किसी भी पटकथा की स्मृति, पहचान और भावात्मक निरंतरता के प्रमुख वाहक होते हैं. यही कारण है कि पटकथा लेखन में संवादों को अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान दिया जाता है. वर्तमान समय में फिल्म, टेलीविजन, वेब सीरीज, ओटीटी मंचों तथा अन्य दृश्य-माध्यमों के निरंतर विस्तार के कारण संवादों की भूमिका और भी व्यापक हो गई है. विशेष रूप से वेब सीरीज और बहु-भागीय फिल्मों के इस दौर में, जहाँ किसी कथा के विभिन्न भागों के प्रदर्शन के बीच महीनों अथवा वर्षों का अंतराल हो सकता है, वहाँ संवाद ही दर्शकों की स्मृति को कथा और उसके पात्रों से जोड़े रखने का कार्य करते हैं. अनेक बार किसी फिल्म या श्रृंखला का कोई संवाद दर्शकों के मन में लंबे समय तक बना रहता है और वही उस रचना की पहचान का माध्यम बन जाता है.

हालाँकि प्रभावी संवाद केवल आकर्षक या स्मरणीय होने भर से नहीं बनते. आवश्यक है कि वे पात्र, परिस्थिति और कथानक के अनुकूल हों. साथ ही संवादों में सटीकता और संक्षिप्तता भी अपेक्षित है, क्योंकि शब्दों की अनावश्यक अधिकता संवाद के प्रभाव को कम कर सकती है. दृश्य-माध्यम की अपनी विशिष्टता यह है कि यहाँ अनेक भाव और अर्थ केवल शब्दों से नहीं, बल्कि अभिनय, हाव-भाव, दृष्टि, देहभाषा और मौन के माध्यम से भी व्यक्त किए जाते हैं. इस संदर्भ में मन्नू भंडारी का कथन उल्लेखनीय है- "संवाद स्थिति और पात्रों के अनुरूप होने चाहिए तथा उन्हें यथासंभव संक्षिप्त और प्रभावी होना चाहिए. उनके अनुसार अभिनेता के चेहरे का एक भाव या उसकी एक अदा कभी-कभी उतना प्रभावशाली संप्रेषण कर देती है, जितना लंबे संवाद भी नहीं कर पाते." इस दृष्टि से पटकथा लेखक का दायित्व केवल संवाद लिखना नहीं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि कहाँ शब्दों का प्रयोग आवश्यक है और कहाँ दृश्य तथा अभिनय स्वयं अर्थ का निर्माण कर सकते हैं.

इस प्रकार सफल संवाद वही माने जाते हैं जो कथा को आगे बढ़ाने के साथ-साथ

पात्रों की विश्वसनीयता बनाए रखें, दृश्य की प्रभावशीलता को बढ़ाएँ और दर्शकों के मन में स्थायी प्रभाव छोड़ें. उदाहरण के लिए, 'Baahubali: The Beginning' के प्रथम भाग के अंत में उठाया गया प्रश्न- "कटप्पा ने बाहुबली को क्यों मारा" केवल एक संवाद नहीं था, बल्कि वह दर्शकों की जिज्ञासा, चर्चा और प्रतीक्षा का केंद्र बन गया. दूसरे भाग के प्रदर्शन तक यह संवाद जनमानस में निरंतर गूँजता रहा. इसी प्रकार 'Dhurandhar' के प्रथम भाग में विमान अपहरण के दृश्य के दौरान खल पात्र का संवाद- "यहीं बगल में रहते हैं... गूदे भर का ज़ोर लगा लो..." उसके व्यक्तित्व की ऐसी पहचान निर्मित करता है कि फिल्म के दूसरे भाग "धुरंधर : द रिवेंज" (Dhurandhar: The Revenge) में आयु, रूप और परिस्थितियाँ बदल जाने के बावजूद दर्शक केवल उसके संवाद और बोलने के अंदाज़ से ही उसे तुरंत पहचान लेते हैं.

इसी प्रकार 'Pushpa: The Rise' का संवाद- "पुष्पा नाम सुनकर फ्लावर समझे क्या? फ्लावर नहीं, फायर है मैं!", केवल एक पंक्ति नहीं रहा, बल्कि उसने पात्र की मानसिकता, तेवर और विद्रोही स्वभाव को जनस्मृति में स्थायी रूप से स्थापित कर दिया. वहीं 'K.G.F: Chapter 1' में रॉकी का संवाद और उसका विशिष्ट लहजा दर्शकों के भीतर उस पात्र की एक अलग छवि निर्मित करता है, जो अगले भाग तक बनी रहती है.

वास्तव में प्रभावी संवाद पात्रों को केवल दृश्य रूप में नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी स्थापित करते हैं. वे दर्शकों के भीतर स्मृति, रोमांच, संवेदना, प्रतीक्षा और पात्रों के प्रति जुड़ाव का निर्माण करते हैं और पटकथा लेखन में सही मायने में यही संवाद की दमदार भूमिका भी होती है.

5.4 प्रभावशाली संवाद के गुण

प्रभावशाली संवादों के गुणों पर विचार करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि फिल्म के संवाद अन्य कला-माध्यमों जैसे- कहानी, उपन्यास, नाटक, संस्मरण, रेखाचित्र अथवा वास्तविक जीवन में बोले जाने वाले सामान्य संवादों से भिन्न होते हैं. साहित्यिक संवाद मुख्यतः पढ़े जाने के लिए लिखे जाते हैं, जबकि फिल्मी संवाद सुनने और दृश्य के साथ अनुभव करने के लिए रचे जाते हैं. उपन्यासों में प्रायः एक पात्र बोलता है, फिर दूसरा पात्र अपनी बात कहता है; वहाँ पाठकीय रस प्रमुख होता है. इसके विपरीत फिल्म के संवादों में गति, लय, तात्कालिकता और दृश्यात्मकता का विशेष महत्त्व होता है. यदि उपन्यास को सुनने और फिल्म को पढ़ने का प्रयास किया जाए, तो संवादों का स्वाभाविक प्रभाव नष्ट हो जाएगा और रस की अनुभूति भी क्षीण पड़ जाएगी.

दरअसल प्रभावशाली फिल्मी संवाद केवल कथोपकथन नहीं होते, बल्कि वे पात्रों की पहचान, दृश्य की संवेदना और दर्शकों की स्मृति का स्थायी हिस्सा बन जाते हैं. उदाहरण के लिए, फिल्म दिलवाले दुल्हनिया ले जाएँगे का संवाद- "जा सिमरन जा, जी ले अपनी जिंदगी" केवल एक भावुक वाक्य नहीं है, बल्कि वह स्वतंत्रता, प्रेम और निर्णय लेने के साहस का प्रतीक बन चुका है. इसी प्रकार 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' का संवाद "तुमसे न हो पाएगा" इतना लोकप्रिय हुआ कि वह नई पीढ़ी की सामान्य बोलचाल का हिस्सा बन गया.

फिल्मी संवादों की प्रभावशीलता का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनकी संक्षिप्तता और मारकता भी है. वे कम शब्दों में गहरी संवेदना, व्यंग्य, हास्य, क्रोध या संघर्ष को अभिव्यक्त कर देते हैं. कई बार किसी पात्र का चेहरा समय के साथ धुंधला पड़ जाता है, किंतु उसका

संवाद और बोलने का अंदाज़ दर्शकों की स्मृति में लंबे समय तक जीवित रहता है. यही कारण है कि सफल पटकथा में संवाद केवल भाषा का प्रयोग नहीं होते, बल्कि वे कथा की आत्मा, पात्रों की जीवंत पहचान और दर्शकों से जुड़ने का सबसे सशक्त माध्यम बन जाते हैं. इसी प्रकार कई साधारण प्रतीत होने वाले संवाद भी अपने प्रसंग, दृश्यात्मकता और प्रस्तुति के कारण अत्यंत प्रभावशाली बन जाते हैं. उदाहरण के लिए, फिल्म 'Golmaal 3' का प्रसिद्ध संवाद - "अबे जल्दी बोल, कल सुबह पनवेल निकलना है" अपने आप में एक सामान्य वाक्य प्रतीत होता है, किंतु दृश्य में एक हकलाने वाला पात्र अपनी बात पूरी करने में अत्यधिक समय ले रहा होता है. उसकी हकलाहट, चेहरे के भाव और सामने वाले पात्र की अधीरता इस संवाद को अत्यंत हास्यपूर्ण बना देती है. यदि यही वाक्य दृश्य, अभिनय और परिस्थिति से अलग करके केवल पढ़ा जाए, तो उसका प्रभाव उतना नहीं रह जाएगा. यही फिल्मी संवाद की दृश्यात्मक शक्ति है.

आज यह संवाद लोगों के रोज़मर्रा के जीवन में भी शामिल हो चुका है. जब कोई व्यक्ति बात कहने में अनावश्यक देर करता है, बार-बार रुकता है या किसी छोटी-सी बात को लंबा खींचता है, तब लोग मज़ाकिया अंदाज़ में कह देते हैं- "अबे जल्दी बोल, कल सुबह पनवेल निकलना है" इस प्रकार प्रभावशाली फिल्मी संवाद केवल पर्दे तक सीमित नहीं रहते, बल्कि धीरे-धीरे जनभाषा और सामाजिक व्यवहार का हिस्सा बन जाते हैं.

- **बोध प्रश्न.**
- **बहुविकल्पीय प्रश्न.**

1. संवाद की भाषा मुख्यतः किसकी भाषा होती है ?
   (अ) लेखक की (ब) पात्रों की
   (क) निर्देशक की (ड) दर्शकों की
2. संवाद की प्रभावशीलता का प्रमुख आधार क्या है?
   (अ) कठिन शब्दावली (ब) लंबाई
   (क) संप्रेषणीयता (ड) तुकबंदी
3. संवादों में अनकहे अर्थों की उपस्थिति को क्या कहा जाता है?
   (अ) कथानक (ब) दृश्यांकन
   (क) सबटेक्स्ट (ड) संपादन
4. पात्रानुकूल भाषा का संबंध किससे है?
   (अ) पात्र के व्यक्तित्व से (ब) केवल शिक्षा से
   (क) केवल आयु से (ड) केवल व्यवसाय से
5. संवाद-लेखन का प्रमुख उद्देश्य क्या है?
   (अ) केवल मनोरंजन (ब) केवल सूचना देना
   (क) कथा और पात्रों का विकास (ड) दृश्य परिवर्तन

उत्तर :- १. (ब), २. (क), ३. (क), ४. (अ), ५. (क)

5.5 संवाद और मौन का संतुलन

संवाद की प्रकृति, स्वरूप और भूमिका पर विचार करने के बाद यह समझना आवश्यक है कि पटकथा लेखन केवल बोले गए शब्दों की कला नहीं है. निस्संदेह संवाद पटकथा की जान होते हैं; वे कथानक को गति प्रदान करते हैं, पात्रों के चरित्र को उद्घाटित करते हैं तथा उनके विचारों और भावनाओं को अभिव्यक्ति देते हैं. किंतु प्रभावी पटकथा की शक्ति केवल संवादों तक सीमित नहीं रहती. अनेक बार मौन भी एक सशक्त संवाद और अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है. जो भाव, तनाव, प्रेम, पीड़ा अथवा आंतरिक द्वंद्व शब्दों के माध्यम से पूर्णतः व्यक्त नहीं हो पाते, उन्हें मौन अधिक गहराई और प्रभाव के साथ संप्रेषित कर देता है. इस प्रकार पटकथा में संवाद और मौन परस्पर पूरक तत्व हैं, जिनके संतुलित प्रयोग से दृश्य अधिक जीवंत, संवेदनशील और प्रभावशाली बनते हैं. उदाहरणतः फिल्म 'शोले' में जय के निधन के बाद का दृश्य अत्यंत मार्मिक है. इस प्रसंग में पात्रों के बीच बहुत कम संवाद हैं, किंतु उनके चेहरे के भाव, आँखों की नमी, शोकपूर्ण वातावरण और कुछ क्षणों का मौन दर्शकों तक गहरे दुःख की अनुभूति पहुँचा देता है. यदि उसी भाव को लंबे संवादों के माध्यम से व्यक्त करने का प्रयास किया जाता, तो संभवतः उसका प्रभाव उतना तीव्र नहीं होता. यह दृश्य दर्शाता है कि पटकथा में मौन केवल संवादों की अनुपस्थिति नहीं है, बल्कि वह स्वयं एक अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति है जो पात्रों की मनःस्थिति को प्रभावशाली ढंग से संप्रेषित करती है.

इसी प्रकार फिल्म 'नदिया के पार' में प्रेम और पारिवारिक संबंधों से जुड़े अनेक प्रसंगों में पात्रों की झिझक, दृष्टि और मौन उनके मनोभावों को शब्दों से अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करते हैं. वहीं 'लगान' जैसी फिल्मों में तनावपूर्ण परिस्थितियों के दौरान पात्रों की चुप्पी, प्रतीक्षा और चेहरे के भाव कथा के भावनात्मक प्रभाव को कई गुना बढ़ा देते हैं. इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि सफल पटकथा में संवाद और मौन दोनों का समान महत्त्व है. जहाँ संवाद कथा को शब्द प्रदान करते हैं, वहीं मौन उसे संवेदना, गहराई और दृश्यात्मक प्रभाव प्रदान करता है. अतः एक कुशल पटकथा लेखक परिस्थितियों के अनुरूप दोनों का संतुलित प्रयोग करता है, जिससे कथा अधिक स्वाभाविक, प्रभावशाली और संप्रेषणीय बनती है.

5.6 सबटेक्स्ट का प्रयोग

पटकथा में पात्र अक्सर अपनी भावनाओं और मनोभावों को सीधे शब्दों में व्यक्त नहीं करते. उनके संवादों, व्यवहार, हाव-भाव और मौन में भी अनेक अर्थ निहित होते हैं. संवादों के पीछे छिपे इसी अप्रकट अर्थ, भाव या आशय को सबटेक्स्ट कहा जाता है. दूसरे शब्दों में, जो बात पात्र स्पष्ट रुप से नहीं कहते, किंतु जिसे दर्शक परिस्थिति, संदर्भ और पात्रों के व्यवहार के आधार पर समझ लेता है, वही सबटेक्स्ट है.

सबटेक्स्ट संवादों को अधिक स्वाभाविक और प्रभावशाली बनाता है. वास्तविक जीवन में भी लोग प्रायः अपनी भावनाओं को सीधे शब्दों में व्यक्त नहीं करते. वे संकेतों, व्यंग्य, झिझक, चुप्पी, भौंहों के उतार-चढ़ाव या व्यवहार के माध्यम से अपने मन की बात प्रकट करते हैं. यही कारण है कि पटकथा में सबटेक्स्ट का प्रयोग पात्रों को अधिक यथार्थपरक और विश्वसनीय बनाता है. इस संदर्भ में बिहारी की प्रसिद्ध पंक्ति- “कहत, नटत, रीझत,

खिझत, मिलत, खिलत, लजियात; भरे भौन में करत हैं नैनन ही सौं बात." विशेष उल्लेखनीय है. यहाँ पात्र प्रत्यक्ष रूप से कुछ नहीं कहते, किंतु उनकी आँखें ही प्रेम, आकर्षण और मनोभावों का संपूर्ण संवाद व्यक्त कर देती हैं. यह सबटेक्स्ट की शक्ति का उत्कृष्ट उदाहरण है, जहाँ अनकहा ही सबसे अधिक अर्थपूर्ण बन जाता है. उदाहरण के लिए, यदि कोई पात्र सीधे कहे कि "मैं तुमसे नाराज़ हूँ", तो दर्शक को केवल सूचना प्राप्त होती है. किंतु यदि वही पात्र कहे, "तुम्हें मेरी चिंता करने की कोई आवश्यकता नहीं है," तो उसके शब्दों के पीछे छिपी नाराज़गी और उपेक्षा का भाव दर्शक स्वयं समझ लेता है. यही सबटेक्स्ट की शक्ति है. इसमें दर्शक केवल सुनता ही नहीं, बल्कि संवादों के पीछे छिपे अर्थ को भी ग्रहण करता है.

हिंदी सिनेमा में सबटेक्स्ट के प्रभावी प्रयोग के अनेक उदाहरण मिलते हैं. फिल्म 'नदिया के पार' में चंदन और गुंजा के बीच होने वाले संवादों में प्रेम का भाव प्रत्यक्ष रूप से व्यक्त नहीं किया जाता, बल्कि वह संवादों के पीछे छिपा रहता है. उदाहरण के लिए, एक प्रसंग में गुंजा चंदन से कुएँ से बाल्टी निकालने के लिए कहती है. इस पर चंदन झुँझलाते हुए कहता है कि क्या वह रोज-रोज कुएँ में गिरी बाल्टियाँ ही निकालता फिरे, उसे और कोई काम नहीं है? पहली दृष्टि में यह संवाद नाराज़गी या शिकायत प्रतीत होता है, किंतु उसके पीछे गुंजा के प्रति अपनापन और आकर्षण का भाव भी निहित है. दर्शक समझ जाता है कि चंदन की झुँझलाहट वास्तविक क्रोध नहीं, बल्कि आत्मीयता का एक रूप है. यही संवाद का सबटेक्स्ट है, जहाँ शब्द एक अर्थ व्यक्त करते हैं, जबकि उनके पीछे छिपा भाव दूसरा अर्थ संप्रेषित करता है. इसी प्रकार 'शोले' में वीरू और बसंती के बीच होने वाले अनेक संवादों में हास्य के साथ-साथ आत्मीयता और आकर्षण का भाव भी निहित रहता है. दर्शक इन भावों को केवल शब्दों से नहीं, बल्कि संवादों के पीछे छिपे अर्थों से समझता है.

इस प्रकार सबटेक्स्ट संवादों को बहुस्तरीय अर्थ प्रदान करता है. यह पात्रों की भावनाओं को अधिक गहराई से व्यक्त करने में सहायता करता है तथा दर्शकों को कथा के साथ सक्रिय रूप से जोड़ता है. इसलिए प्रभावी पटकथा लेखन में सबटेक्स्ट का प्रयोग संवादों को अधिक सजीव, विश्वसनीय और प्रभावशाली बनाने का एक महत्त्वपूर्ण साधन माना जाता है.

5.7 पात्रानुकूल भाषा और शैली

पात्रानुकूल भाषा और शैली किसी भी नाट्य, फिल्म, धारावाहिक अथवा कथा-कृति का प्राणतत्व होता है. इसके माध्यम से न केवल कथा का विकास होता है, बल्कि पात्रों के व्यक्तित्व, उनकी मनःस्थितियों, पारस्परिक संबंधों तथा सामाजिक परिवेश का भी उद्घाटन होता है. इसलिए संवाद की भाषा और शैली का चयन अत्यंत सावधानी तथा कलात्मक दक्षता के साथ किया जाना चाहिए. संवाद की भाषा सामान्य साहित्यिक भाषा से भिन्न होती है, क्योंकि वह सीधे पात्रों की वाणी के रूप में अभिव्यक्त होती है. वह लेखक की नहीं, बल्कि पात्रों की भाषा होती है.

संवाद की भाषा का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण उसकी संप्रेषणीयता है. भाषा ऐसी होनी चाहिए जो दर्शकों अथवा पाठकों के लिए सहज, स्पष्ट और बोधगम्य हो. अत्यधिक जटिल अथवा कृत्रिम भाषा संवादों की प्रभावशीलता को कम कर देती है. साथ ही संवादों में स्वाभाविकता भी आवश्यक है. वास्तविक जीवन की भाँति उनमें बोलचाल की लय, विराम, भाव और परिस्थितियों के अनुरूप अभिव्यक्ति होनी चाहिए. जब संवाद जीवन के निकट प्रतीत होते

हैं, तभी वे दर्शकों के मन पर स्थायी प्रभाव छोड़ते हैं. इस सन्दर्भ में सुप्रसिद्ध पटकथा लेखक कालरा सिंह उर्फ़ गुलजार कहते हैं- "सामाजिक फ़िल्मों में पता लगना नहीं चाहिए कि डायलॉग बोला जा रहा है. सहज लगना चाहिए." इसलिए मैं ऐसे लिखता हूँ जैसे आप लोग बोलते हैं. वाक्यों में कंस्ट्रक्शन बदल देता हूँ. स्वाभाविक विराम (पॉज) डालता हूँ. आम बोलचाल की जबान रखता हूँ तब डायलॉग पता नहीं चलता. और, कभी ज्यादा नहीं कहता. ज्यादा लफ्फाजी असर कम कर देती है. हमारी ज़िन्दगी में कुछ ही मोड़ या पल ऐसे होते हैं जिनमें सचमुच नाटकीयता घटित होती है. उन पलों जितना ड्रामा ज़रूरी है, बाकी तो गैऱजरूरी ही है.

पात्रों की भाषा और शैली उनके उद्देश्य तथा प्रसंग के अनुसार परिवर्तित होती रहती है. सामान्य सूचना देने वाले संवाद अपेक्षाकृत सरल और सीधे होते हैं, जबकि वैचारिक संवादों में स्पष्टता तथा बौद्धिक संतुलन अपेक्षित होता है. इसी प्रकार भावप्रधान संवादों में लाक्षणिकता, व्यंजना, प्रतीक, मुहावरे तथा अन्य भाषिक उपकरणों का प्रयोग उन्हें अधिक प्रभावशाली बना देता है. संवाद लेखक का कौशल इसी में निहित है कि वह कम शब्दों में अधिक अर्थ और गहन भावाभिव्यक्ति प्रस्तुत कर सके. उदाहरण के लिए, "दीवारों के भी कान होते हैं" वाक्य का अभिधात्मक अर्थ असंगत प्रतीत होता है, किंतु लाक्षणिक अर्थ में इसका आशय यह है कि कही जा रही बात को कोई सुन सकता है, जबकि व्यंजनात्मक स्तर पर यह सावधानी, भय अथवा गोपनीयता की भावना को व्यक्त करता है. इसी प्रकार उसके सिर पर ताज है वाक्य का अभिधात्मक अर्थ किसी व्यक्ति के सिर पर मुकुट का होना है, लाक्षणिक अर्थ में वह सत्ता या उच्च पद का संकेत करता है, जबकि व्यंजनात्मक अर्थ में उससे गौरव, प्रतिष्ठा, उत्तरदायित्व अथवा सामाजिक प्रभुत्व का बोध होता है. ऐसे प्रयोग संवादों को बहुस्तरीय अर्थवत्ता प्रदान करते हैं और दर्शक को केवल शब्दों से नहीं, बल्कि उनके निहितार्थों से भी जोड़ते हैं. संवाद की प्रभावशीलता का एक उत्कृष्ट उदाहरण फिल्म 'नमक हराम' में देखने को मिलता है. जब विक्की (अमिताभ बच्चन) कहता है- "रुपया पेड़ों पर नहीं उगता कि जितना माँगो मिल जाएगा," तो सोमू (राजेश खन्ना) कहता है- "और हाथ भी पेड़ों पर नहीं उगते सेठजी कि एक कट जाए तो दूसरा लग जाए." यह संवाद केवल प्रत्युत्तर नहीं है, बल्कि पात्र के मानवीय संवेदना, श्रम के मूल्य तथा आर्थिक दृष्टिकोण के बीच का टकराव भी अभिव्यक्त होता है. संवाद की भाषा सरल और बोलचाल की है, किन्तु उसके भीतर निहित अर्थ अत्यंत गहरा है. यही कारण है कि यह संवाद दर्शकों के मन में गहरी छाप छोड़ता है.

वस्तुतः संवाद की भाषा और शैली केवल भाषिक अभिव्यक्ति का प्रश्न नहीं है, बल्कि यह पात्र, परिस्थिति, भाव और कथ्य के समन्वय की कला है. प्रभावी संवाद वही है जो स्वाभाविक, पात्रानुकूल, अर्थगर्भित तथा संप्रेषणीय हो. ऐसा संवाद न केवल कथा को गति देता है, बल्कि दर्शकों और पाठकों के मन में दीर्घकाल तक अपनी उपस्थिति बनाए रखता है. यही सफल पात्रानुकूल भाषा और शैली लेखन की सबसे बड़ी पहचान है.

5.8 संवाद में यथार्थ और नाटकीयता

संवाद-लेखन में यथार्थ और नाटकीयता दो ऐसे तत्त्व हैं जिनके संतुलित समन्वय से किसी दृश्य की प्रभावशीलता निर्मित होती है. यथार्थ संवादों को जीवन के निकट लाता है, जबकि नाटकीयता उन्हें कलात्मक ऊँचाई और भावात्मक तीव्रता प्रदान करती है. यदि संवाद केवल दैनिक जीवन की साधारण बातचीत का अनुकरण बनकर रह जाएँ, तो वे नीरस और प्रभावहीन

हो सकते हैं; वहीं यदि उनमें अत्यधिक नाटकीयता, कृत्रिमता या अतिशयोक्ति आ जाए, तो उनकी विश्वसनीयता समाप्त होने लगती है. इसलिए सफल संवाद-लेखन का आधार इन दोनों तत्त्वों के बीच संतुलन स्थापित करना है.

पटकथा लेखन में यथार्थ का अर्थ केवल वास्तविक जीवन की घटनाओं को प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि उन घटनाओं के पीछे छिपे मानवीय संबंधों, परिस्थितियों और भावनात्मक स्थितियों को भी विश्वसनीय ढंग से चित्रित करना है. किसी कथा में केवल सूचना दे देना पर्याप्त नहीं होता. उदाहरण के लिए, यदि यह कहा जाए कि कोई व्यक्ति बाज़ार गया, सब्जियाँ खरीदीं और वहाँ उसकी किसी परिचित से भेंट हो गई, तो यह मात्र सूचना होगी. किंतु पटकथा में यह दिखाना आवश्यक होता है कि वह व्यक्ति वहाँ कैसे पहुँचा, किस परिस्थिति में उसकी मुलाकात हुई, दोनों के बीच कैसा संबंध था और उस मुलाकात का कथा-विकास में क्या महत्त्व है. इस प्रकार दृश्य केवल घटना का वर्णन नहीं करता, बल्कि पात्रों और परिस्थितियों के बीच अंतर्संबंधों को भी उद्घाटित करता है. यही यथार्थ का रचनात्मक रूप है.

दूसरी ओर, नाटकीयता का अर्थ केवल ऊँचे स्वर, तीखे संवाद या भावुक कथनों तक सीमित नहीं है. अनेक बार एक छोटा-सा संकेत, एक मौन प्रतिक्रिया, किसी वस्तु का प्रतीकात्मक प्रयोग अथवा किसी पात्र के बाह्य रूप में किया गया सूक्ष्म परिवर्तन भी गहरा नाटकीय प्रभाव उत्पन्न कर सकता है. उदाहरण के लिए, जिन अभिनेताओं को दर्शक प्रायः क्लीन शेव रूप में देखने के अभ्यस्त होते हैं, उन्हें किसी फिल्म में मूँछों या भिन्न वेश-भूषा के साथ प्रस्तुत करने से पात्र के व्यक्तित्व, छवि और दृश्य की प्रभाववत्ता में उल्लेखनीय परिवर्तन आ जाता है. यह परिवर्तन केवल बाह्य रूप का नहीं होता, बल्कि दर्शकों की पात्र के प्रति धारणा को भी प्रभावित करता है.

श्रेष्ठ पटकथा-लेखन में नाटकीयता प्रायः प्रत्यक्ष कथनों के बजाय परिस्थितियों और संकेतों के माध्यम से निर्मित होती है. यही कारण है कि प्रभावशाली दृश्य दर्शकों को केवल दिखाई नहीं देते, बल्कि उनके भीतर भावात्मक अनुभव भी उत्पन्न करते हैं. इस संदर्भ में फिल्म आँधी का एक दृश्य उल्लेखनीय है. वर्षों बाद पति और पत्नी का आमना-सामना होता है. दोनों के बीच संबंधों का लंबा इतिहास है, किंतु परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि वे अपने भावों को खुलकर व्यक्त नहीं कर सकते. इस दृश्य की शक्ति किसी बड़े भाषण या भावुक संवाद में नहीं, बल्कि सूक्ष्म संकेतों में निहित है. पात्रों की गतिविधियाँ, उनके व्यवहार का संयम, परस्पर उपस्थित झिझक और वर्षों पुराने संबंधों की अनकही स्मृतियाँ मिलकर एक ऐसी भावभूमि निर्मित करती हैं, जो दर्शकों को गहराई से स्पर्श करती है. यहाँ नाटकीयता शब्दों से अधिक दृश्यात्मक संकेतों और मौन की भाषा में व्यक्त होती है. यही कारण है कि दृश्य अत्यंत यथार्थपरक होने के बावजूद गहन भावात्मक प्रभाव उत्पन्न करता है.

वास्तव में, जीवन के अधिकांश महत्त्वपूर्ण क्षणों में मनुष्य बहुत कम बोलता है, किंतु उसकी चुप्पी, उसकी दृष्टि, उसकी मुद्राएँ और उसके व्यवहार बहुत कुछ कह जाते हैं. संवाद-लेखन की सफलता इसी क्षमता में निहित है कि वह शब्दों के साथ-साथ अनकहे को भी अभिव्यक्ति दे सके. जब संवाद पात्रों की वास्तविक मानसिक स्थिति, सामाजिक संदर्भ और भावनात्मक संघर्षों को स्वाभाविक रूप से व्यक्त करते हैं तथा साथ ही दर्शकों में उत्सुकता, संवेदना और भावात्मक सहभागिता उत्पन्न करते हैं, तब यथार्थ और नाटकीयता का आदर्श संतुलन स्थापित होता है.

अतः कहा जा सकता है कि संवाद में यथार्थ और नाटकीयता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक तत्त्व हैं. यथार्थ संवादों को विश्वसनीयता प्रदान करता है और नाटकीयता उन्हें कलात्मक प्रभाव देती है. दोनों के संतुलित समन्वय से ही ऐसे संवाद जन्म लेते हैं जो कथा को गति देने के साथ-साथ दर्शकों के मन में दीर्घकाल तक अपनी स्मृति बनाए रखते हैं.

- **बोध प्रश्न.**
- **बहुविकल्पी प्रश्न.**

1. अभिधा शब्द-शक्ति में शब्द किस अर्थ में प्रयुक्त होता है?

    (अ) व्यंग्यार्थ में (ब) प्रचलित अर्थ मे

    (क) ध्वन्यार्थ मे (ड) सांकेतिक अर्थ में

2. लक्षणा शब्द-शक्ति का संबंध किससे है?

    (अ) मुख्य अथ (ब) लक्ष्य अर्थ

    (क) शाब्दिक अर्थ (ड) व्याकरणिक अर्थ

3. व्यंजना शब्द-शक्ति में क्या प्रमुख होता है?

    (अ) प्रत्यक्ष अर्थ (ब) शब्दकोशीय अर्थ

    (क) निहित या ध्वनित अर्थ (ड) व्याकरणिक अर्थ

4. "दीवारों के भी कान होते हैं" किस प्रकार की अभिव्यक्ति है?

    (अ) अभिधात्मक (ब) लाक्षणिक

    (क) वैज्ञानिक (ड) तकनीकी

5. संवादों में मुहावरों का प्रयोग क्यों किया जाता है?

    (अ) भाषा को कठिन बनाने के लिए

    (ब) भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए

    (क) कथा को छोटा करने के लिए

    (ड) पात्रों को हटाने के लिए

उत्तर :- १. (ब), २. (ब), ३. (क), ४. (ब), ५. (ब)

5.9 सारबिंदु

प्रिय विद्यार्थी मित्रो! आशा है कि आपने इस पाठ का गंभीरतापूर्वक अध्ययन किया होगा और इसके प्रमुख बिंदुओं को भली-भाँति समझ लिया होगा. अब समय है कि पाठ के विभिन्न उपशीर्षकों के अंतर्गत निहित महत्त्वपूर्ण तथ्यों और अवधारणाओं को संक्षेप में एक स्थान पर संकलित कर लिया जाए. ऐसा करने से न केवल पूरे पाठ का सार आपके समक्ष स्पष्ट रूप में उपस्थित होगा, बल्कि पुनरावृत्ति और स्मरण में भी सुविधा होगी. इसी उद्देश्य से यहाँ पाठ के प्रमुख बिंदुओं का संक्षिप्त सार प्रस्तुत किया जा रहा है. अपनी तैयार की हुई सूची का इससे मिलान करके आप यह जाँच सकते हैं कि कहीं कोई महत्त्वपूर्ण बिंदु छूट तो नहीं गया है. साथ ही, यह भी परख सकते हैं कि आपकी समझ में कौन-से अतिरिक्त

या विशिष्ट पक्ष सम्मिलित हुए हैं. इस प्रकार यह प्रक्रिया आपके अध्ययन को अधिक व्यवस्थित, आत्मविश्वासपूर्ण और प्रभावी बनाने में सहायक सिद्ध होगी.

- कहानी हमारे यहाँ श्रुति परंपरा से चली आ रही है और उसके साथ संवाद की परंपरा भी जुड़ी हुई है.
- कहानी का इतिहास जहाँ हजारों वर्षों पुराना है, वहीं सिनेमा का इतिहास अपेक्षाकृत नवीन है.
- पटकथा में संवाद केवल सामान्य वार्तालाप नहीं होते, बल्कि वे पात्रों के स्वभाव, मनोभाव, अंतर्द्वंद्व, संघर्ष तथा कथा-विकास को अभिव्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होते हैं.
- हालीवुड में संवाद लेखन का अलग से कोई क्रेडिट नहीं दिया जाता, लेकिन भारत में पटकथा और संवाद दोनों को बराबर महत्त्व दिया गया है. इसकी वजह से ही 'मधर इंडिया', 'प्यासा', 'मुगल-ए-आज़म', 'शोले', 'दीवार', 'सत्या', 'लगान', 'गैंग्स ऑफ वासेपुर' तथा 'मसान' जैसी फिल्मों को संवादों की गुणवत्ता, प्रभावशीलता, साहित्यिकता तथा जनस्मृति में उनकी गहरी उपस्थिति के कारण भारतीय सिनेमा की श्रेष्ठ संवादप्रधान फिल्मों में स्थान दिया जाता है.
- पटकथा लेखन में विचार, कहानी, किरदार और दृश्य के बाद संवाद और उसकी भूमिका आती है.
- संवाद, जिसे हम आम बोल चाल की भाषा में डायलॉग (Diaglogue) कहते हैं.
- वास्तव में प्रभावी संवाद पात्रों को केवल दृश्य रुप में नहीं, बल्कि मानसिक और भावनात्मक स्तर पर भी स्थापित करते हैं. वे दर्शकों के भीतर स्मृति, रोमांच, संवेदना, प्रतीक्षा और पात्रों के प्रति जुड़ाव का निर्माण करते हैं और पटकथा लेखन में सही मायने में यही संवाद की दमदार भूमिका भी होती है.
- फिल्मी संवादों की प्रभावशीलता का एक महत्त्वपूर्ण कारण उनकी संक्षिप्तता और मारकता भी है. वे कम शब्दों में गहरी संवेदना, व्यंग्य, हास्य, क्रोध या संघर्ष को अभिव्यक्त कर देते हैं.
- संवाद की प्रकृति, स्वरूप और भूमिका पर विचार करने के बाद यह समझना आवश्यक है कि पटकथा लेखन केवल बोले गए शब्दों की कला नहीं है. अनेक बार मौन भी एक सशक्त संवाद और अर्थपूर्ण अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाता है. जो भाव, तनाव, प्रेम, पीड़ा अथवा आंतरिक द्वंद्व शब्दों के माध्यम से पूर्णतः व्यक्त नहीं हो पाते, उन्हें मौन अधिक गहराई और प्रभाव के साथ संप्रेषित कर देता है.
- पटकथा में पात्र अक्सर अपनी भावनाओं और मनोभावों को सीधे शब्दों में व्यक्त नहीं करते. उनके संवादों, व्यवहार, हाव-भाव और मौन में भी अनेक अर्थ निहित होते हैं. संवादों के पीछे छिपे इसी अप्रकट अर्थ, भाव या आशय को सबटेक्स्ट (subtext) कहा जाता है.
- पात्रानुकूल भाषा और शैली किसी भी नाट्य, फिल्म, धारावाहिक अथवा कथा-कृति का प्राणतत्व होता है.

- संवाद की भाषा का सबसे महत्त्वपूर्ण गुण उसकी संप्रेषणीयता है.
- भाषा ऐसी होनी चाहिए जो दर्शकों अथवा पाठकों के लिए सहज, स्पष्ट और बोधगम्य हो.
- संवाद-लेखन में यथार्थ और नाटकीयता दो ऐसे तत्त्व हैं जिनके संतुलित समन्वय से किसी दृश्य की प्रभावशीलता निर्मित होती है.
- यथार्थ संवादों को जीवन के निकट लाता है, जबकि नाटकीयता उन्हें कलात्मक ऊँचाई और भावात्मक तीव्रता प्रदान करती है.
- संवाद में यथार्थ और नाटकीयता परस्पर विरोधी नहीं, बल्कि एक-दूसरे के पूरक तत्त्व हैं.

5.10 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न**

(क) विस्तृत उत्तरीय प्रश्न.

1. संवाद-लेखन की अवधारणा स्पष्ट करते हुए उसके प्रमुख तत्त्वों का विवेचन कीजिए।
2. संवाद की भाषा और शैली से आप क्या समझते हैं? संवाद की सम्प्रेषणीयता, स्वाभाविकता तथा भावाभिव्यंजकता के संदर्भ में चर्चा कीजिए.
3. संवाद-लेखन में पात्रानुकूल भाषा और शैली का महत्त्व स्पष्ट कीजिए। उपयुक्त उदाहरणों सहित विवेचन कीजिए.
4. संवाद में यथार्थ और नाटकीयता के संबंध का विश्लेषण कीजिए। प्रभावी संवाद-निर्माण में इन दोनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए.
5. संवाद-लेखन में शब्द-शक्ति, प्रतीक, मुहावरों तथा लोकोक्तियों के योगदान का मूल्यांकन कीजिए.

(ख) टिप्पणी लिखिए.

1. संवाद की संप्रेषणीयता
2. सबटेक्स्ट
3. पात्रानुकूल भाषा
4. संवाद की स्वाभाविकता
5. संवाद में मौन का महत्त्व
6. संवाद और चरित्र-चित्रण
7. संवाद में प्रतीकों की भूमिका
8. संवाद की भावप्रधान भाषा
9. मुहावरे और संवाद-लेखन
10. यथार्थ और नाटकीयता का संतुलन

(ग) बहुविकल्पी प्रश्न.

1. संवाद में यथार्थ का संबंध किससे है?

   (अ) स्वाभाविकता से   (ब) अतिशयोक्ति से

   (क) कल्पना से   (ड) चमत्कार से

2. संवाद में नाटकीयता का एक प्रमुख साधन क्या है?

(अ) केवल ऊँची आवाज़ (ब) केवल लंबे संवाद

(क) संघर्ष और भावात्मक तनाव (ड) केवल हास्य

3. भावप्रधान संवादों में किसका विशेष महत्त्व होता है?

(अ) तकनीकी शब्दावली (ब) अलंकार और शब्द-शक्ति

(क) प्रशासनिक भाषा (ड) वैज्ञानिक शब्द

4. "कहत, नटत, रीझत, खिझत...सबटेक्स्ट" का उदाहरण क्यों माना जाता है?

(अ) इसमें हास्य है (ब) इसमें कथा है

(क) इसमें अनकहे भाव व्यक्त होते हैं (ड) इसमें वर्णन है

5. प्रभावी संवाद की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता क्या है?

(अ) कृत्रिमता (ब) जटिलता

(क) स्वाभाविकता और अर्थगर्भिता (ड) लंबाई

उत्तर :- १. (अ), २. (क), ३. (ब), ४. (क), ५. (क)

5.11 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- आइडिया से परदे तक : कैसे सोचता है फिलम का लेखक ? राजकुमार सिंह और सत्यांशु सिंह, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- मीरा, गुल़जार, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
- पटकथा लेखन (व्यवहारिक निर्देशिका), अस़गर वजाहत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
- कथा-पटकथा, मन्नू भण्डारी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- साहित्य का स्वरुप, नगेन्द्र, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली
- हिंदी साहित्य का इतिहास, रामचन्द्र शुक्ल, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
- कहानी : नई कहानी, नामवर सिंह, लोकभारती प्रकाशन, प्रयागराज
- आधुनिक हिंदी आलोचना के बीज शब्द, बच्चन सिंह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
- अषाढ़ का एक दिन, मोहन राकेश, राजपाल एन्ड सन्स, नई दिल्ली
- हानूश, भीष्म साहनी, राजकमल प्काशन, नई दिल्ली
- हिन्दी नाट्य साहित्य, सत्यदेव चौधरी, आत्माराम एन्ड सन्स, दिल्ली
- http://egyankosh.ac.in//handle/123456789/102128
- http://egyankosh.ac.in//handle/123456789/97346
- http://egyankosh.ac.in//handle/123456789/97350
- https://srfti.ac.in/hi

इकाई 6 माध्यम और पटकथा

रुपरेखा

6.1 उद्देश्य

6.2 प्रस्तावना

6.3 शॉर्ट फिल्म की पटकथा

6.3.1 शॉर्ट फिल्म क्या है.

6.3.2 शॉर्ट फिल्म की पटकथा कैसे लिखें?

6.3.3 शॉर्ट फिल्म की पटकथा की विशेषताएँ

6.4 टेलीविज़न/वेब के लिए लेखन

6.4.1 टेलीविज़न/वेब लेखन की विशेषताएँ

6.5 माध्यम अनुसार अंतर

6.6 सारबिंदु

6.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

6.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

6.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! आप बी. ए. ऑनर्स हिंदी पाठ्यक्रम के द्वितीय सेमेस्टर के प्रथम प्रश्नपत्र की छठवीं इकाई 'माध्यम और पटकथा' का अध्ययन करने जा रहे हैं. इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :-

- फिल्म, टेलीविज़न, वेब/ओटीटी जैसे विभिन्न दृश्य-श्रव्य माध्यमों की प्रकृति, विशेषताओं और कार्यप्रणाली को समझ सकेंगे.
- माध्यम और पटकथा के अंतर्संबंध को जान पायेंगे कि अलग-अलग माध्यमों के अनुसार पटकथा की शैली, संरचना और प्रस्तुति कैसे बदलती है.
- शॉर्ट फिल्म की विशेषताओं, संरचना और लेखन शैली को समझकर संक्षिप्त और प्रभावशाली लेखन करना सीख सकेंगे.
- वेब माध्यमों की स्वतंत्रता, यथार्थवाद और बहुस्तरीय कथानक को समझकर आधुनिक शैली में लेखन करने की समझ को विकसित कर सकेंगे.

शॉर्ट फिल्म, टेलीविज़न और वेब माध्यमों के बीच के अंतर को स्पष्ट रुप से पहचान और विश्लेषित कर सकेंगे.

6.2 प्रस्तावना

वर्तमान समय दृश्य-श्रव्य संचार का युग है. जहाँ फिल्म, टेलीविज़न, वेब संचार आदि मनोरंजन के प्रमुख साधन बन चुके हैं. इन सभी माध्यमों का मूल आधार पटकथा है. अलग-अलग माध्यमों के अनुसार पटकथा का स्वरुप, शैली और प्रस्तुति बदल जाती है. इसलिए 'माध्यम और पटकथा' का अध्ययन अत्यंत आवश्यक है. पटकथा वह लिखित रुप है जिसमें कहानी को दृश्य, संवाद, क्रिया और ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत करने की योजना बनाई

जाती है. यह निर्देशक, अभिनेता और तकनीकी टीम के लिए एक मार्गदर्शक का कार्य करती है. इसमें केवल घटनाओं का वर्णन ही नहीं, बल्कि यह भी बताया जाता है कि दृश्य कहाँ घटित होगा, पात्र कैसे बोलेंगे, कैमरा कैसे चलेगा और भाव कैसे व्यक्त होंगे. इसलिए यह समझना आवश्यक है कि अलग-अलग माध्यमों के लिए पटकथा कैसे लिखी जाती है और उनमें क्या अंतर होता है.

6.3 शॉर्ट फिल्म की पटकथा

फिल्म अथवा चलचित्र दृश्य-श्रव्य कला का एक महत्त्वपूर्ण माध्यम है, जिसके द्वारा कहानी, विचार, भावना, घटना या संदेश को चलती हुई तस्वीरों और ध्वनि के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है. यह अभिनय, संवाद, संगीत, कैमरा, प्रकाश, संपादन और तकनीक का समन्वय है, जिसका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ समाज को जागरुक करना है. सरल शब्दों में कहे तो शॉर्ट फिल्म की पटकथा एक ऐसी लिखित रुपरेखा है, जिसमें कम समय में एक प्रभावशाली कहानी को दृश्य और संवाद के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है. लेकिन किसी भी फिल्म की सफलता उसकी कहानी, पटकथा, अभिनय और निर्देशन पर निर्भर करती है. फिल्में समाज का दर्पण मानी जाती हैं क्योंकि वे समाज की संस्कृति, परंपराओं, समस्याओं और मानवीय भावनाओं को दर्शाती हैं. फिल्मों के माध्यम से प्रेम, संघर्ष, देशभक्ति, सामाजिक कुरीतियाँ, इतिहास, विज्ञान और मानवीय संबंधों को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है. अपने विषय, शैली, उद्देश्य और प्रस्तुति के आधार पर प्रत्येक फिल्म का अपना अलग स्वरुप और उद्देश्य होता है. जैसे- फीचर फिल्म, शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री फिल्म, एनिमेशन फिल्म, मूक फिल्म, हास्य फिल्म, हॉरर फिल्म इत्यादि. यहाँ हम शॉर्ट फिल्म की विस्तार से चर्चा करेंगे :-

6.3.1 शॉर्ट फिल्म क्या है?

शॉर्ट फिल्म की पटकथा की विशेषताओं अथवा यह कैसी लिखी जानी चाहिए, इस विषय में जानने से पहले हमें यह जान लेना चाहिए कि शॉर्ट फिल्म क्या है? शॉर्ट फिल्म एक ऐसी लघु चलचित्र (फिल्म) होती है जिसकी अवधि सामान्य फिल्मों की तुलना में कम होती है. सामान्यतः इसकी लंबाई 5 मिनट से 30 या 40 मिनट तक मानी जाती है. कम समय में किसी कहानी, विचार, भावना, सामाजिक समस्या या संदेश को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करना ही शॉर्ट फिल्म का मुख्य उद्देश्य होता है. शॉर्ट फिल्म मनोरंजन के साथ-साथ जागरुकता और संवेदनशील विषयों को दर्शकों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम है. इसमें सीमित पात्र, कम स्थान और संक्षिप्त घटनाओं के माध्यम से कहानी प्रस्तुत की जाती है. समय कम होने के कारण इसकी कथा तेज गति से आगे बढ़ती है और प्रत्येक दृश्य का विशेष महत्त्व होता है. आज के डिजिटल युग में शॉर्ट फिल्मों का महत्त्व बहुत बढ़ गया है. यूट्यूब, ओटीटी प्लेटफ़ॉर्म और सोशल मीडिया के माध्यम से इन्हें आसानी से देखा और साझा किया जा सकता है.

6.3.2 शॉर्ट फिल्म की पटकथा कैसे लिखें?

हर पटकथा का संक्षिप्त रुप उसका आइडिया यानी केंद्रीय विचार होता है. इसी तरह उसकी प्रीमाइज यानी आधारिका यह बता देती है कि पटकथा की थीम क्या होगी? फिल्म देखने वाले को नसीहत क्या मिलेगी? तो आइडिया से विषयवस्तु का पता चल जाता है और प्रीमाइज से थीम का. इसके बाद बारी आती है दो मिनट में सुने या पढ़े जा सकने वाले पटकथा-सार की. इसके लिए सबसे पहले एक स्पष्ट और प्रभावशाली विचार चुनना आवश्यक होता है, क्योंकि शॉर्ट फिल्म कम समय में पूरी होती है और उसमें केवल एक

ही मुख्य विषय या संदेश पर ध्यान दिया जाता है. इसके बाद उस विचार को एक सरल और केंद्रित कहानी में विकसित किया जाता है, जिसमें अनावश्यक घटनाओं और पात्रों से बचा जाता है. शॉर्ट फिल्म जितनी छोटी और चुस्त होगी, उतनी ही बेहतर और प्रभावोत्पादक होगी. इसकी रचना सरल, स्पष्ट और दृश्यात्मक होनी चाहिए. इसके लिए सबसे पहले यह सोचना होगा कि कहानी के ख़ास-ख़ास दृश्य कौन-से हैं? उनमें क्या-क्या होता है. और उनसे क्या-क्या सूचनाएँ मिलती हैं. फिर उन दृश्यों को तीन अंक वाले ढाँचे में लिखना होगा अर्थात् आरम्भ, मध्य और अंत में बाँटा जाता है, ताकि कथा का प्रवाह स्पष्ट और रोचक बना रहे. इन सभी को ध्यान में रखते हुए शॉर्ट फिल्म की पटकथा को लिखते समय लेखक को इन बातों का ध्यान रखना चाहिए.

पहले अंक में आपको बताना पड़ता है कि मुख्य पात्र कौन है? और मामला क्या है? दूसरे अंक में पैदा होती उलझने व समस्याएँ सामने आने लगती है. तीसरे अंक में कहानी को निष्कर्ष तक पहुँचाया जाता है. इसके अतिरिक्त भी शॉर्ट फिल्म की पटकथा लिखते समय लेखक को कई बातों का ध्यान रखना चाहिए जो इस प्रकार है:-

- एक सशक्त और स्पष्ट विषय का चुनाव किया जाना चाहिए. यह किसी समकालीन समस्या से संबंधित हो सकता है.
- शॉर्ट फिल्म में समय कम होता है, इसलिए कहानी सीधी और केंद्रित होनी चाहिए. केवल मुख्य घटना पर ध्यान दिया जाता है. कहानी का आरंभ, मध्य और अंत स्पष्ट होना चाहिए.
- दृश्यात्मक लेखन इसकी आवश्यक शर्त है क्योंकि पटकथा केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि देखने के लिए लिकी जाती है. इसलिए लेखक को ऐसे दृश्य लिखने चाहिए जिन्हें कैमरे द्वारा आसानी से दिखाया जा सके.
- संवाद छोटे, स्वाभाविक और प्रभावशाली होने चाहिए. शॉर्ट फिल्म में लंबे भाषण या अनावश्यक बातचीत से बचना चाहिए. संवाद ऐसे होने चाहिए जो कहानी को आगे बढ़ाए.
- कम समय में अधिक पात्र दर्शकों को भ्रमित कर सकते हैं. इसलिए शॉर्ट फिल्म में सामान्यतः कम पात्र रखे जाते हैं ताकि प्रत्येक पात्र स्पष्ट रुप से दर्शकों को समझ में आ सके.
- शॉर्ट फिल्म का अंत दर्शकों पर गहरा प्रभाव छोड़ने वाला होना चाहिए.

पटकथा लिखते समय दृश्य का शीर्षक, स्थान, समय और क्रियाओं का स्पष्ट उल्लेख किया जाना चाहिए.

6.3.3 शॉर्ट फिल्म की पटकथा की विशेषताएँ

शॉर्ट फिल्म की पटकथा एक ऐसी सृजनात्मक लेखन प्रक्रिया है जिसमें सीमित समय के भीतर प्रभावशाली कहानी प्रस्तुत की जाती है. इसमें संक्षिप्तता, स्पष्टता, दृश्यात्मकता और भावनात्मक प्रभाव का विशेष महत्त्व होता है. एक अच्छी शॉर्ट फिल्म की पटकथा वही मानी जाती है जो कम शब्दों और सीमित दृश्यों के माध्यम से दर्शकों के मन पर गहरा प्रभाव छोड़ सके. शॉर्ट फिल्म की सबसे बड़ी विशेषता उसकी संक्षिप्तता है. इसमें सामान्यतः एक ही मुख्य विषय या समस्या पर ध्यान केंद्रित किया जाता है. शॉर्ट फिल्म की पटकथा में दृश्य और भावनाएँ अधिक महत्त्वपूर्ण होती हैं. शब्दों से अधिक चित्रों और क्रियाओं के माध्यम से कहानी कही जाती है. कम पात्र और कम स्थानों का प्रयोग किया जाता है, जिससे कहानी

स्पष्ट और प्रभावी बनती है. शॉर्ट फिल्म में कहानी तेजी से आगे बढ़ती है इसलिए इसमें अनावश्यक घटनाओं के लिए स्थान नहीं होता. साथ ही इसका दर्शकों पर तुरंत प्रभाव पड़ता है इसलिए इसकी पटकथा भावनात्मक रुप से सशक्त होती है. शॉर्ट फिल्म की पटकथा में नए प्रयोग, प्रतीक, मौन दृश्य और रचनात्मक प्रस्तुति का विशेष महत्त्व होता है क्योंकि अनेक शॉर्ट फिल्मों की पटकथाएँ समाज की समस्याओं, जागरुकता और मानवीय मूल्यों को प्रस्तुत करती हैं.

6.4 टेलीविज़न/वेब के लिए लेखन

आधुनिक युग में टेलीविजन और वेब अर्थात् डिजिटल माध्यम जनसंचार के अत्यंत प्रभावशाली माध्यम बन चुके हैं. इन माध्यमों के द्वारा समाचार, मनोरंजन, शिक्षा, विज्ञापन, वेब सीरीज़, शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री तथा विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम दर्शकों तक पहुँचाए जाते हैं. इन सभी कार्यक्रमों की सफलता का आधार उनका प्रभावशाली लेखन होता है. टेलीविजन और वेब के लिए लेखन एक विशेष प्रकार का रचनात्मक लेखन है जिसमें दृश्य, संवाद, ध्वनि और तकनीकी प्रस्तुति का ध्यान रखा जाता है. एक प्रकार से टेलीविजन के लिए लेखन वह प्रक्रिया है जिसमें टीवी कार्यक्रमों, धारावाहिकों, समाचारों, विज्ञापनों, रियलिटी शो, शैक्षिक कार्यक्रमों आदि के लिए पटकथा और संवाद लिखे जाते हैं. टेलीविज़न अथवा वेब लेखन मुख्य रुप से दृश्य-श्रव्य माध्यम के अनुसार किया जाता है इसलिए लेखक को यह ध्यान रखना पड़ता है कि जो लिखा जाए वह स्क्रीन पर प्रभावी ढंग से दिखाई दे.

6.4.1 टेलीविज़न/वेब लेखन की विशेषताएँ

- वर्तमान समय में टेलीविजन और वेब जनसंचार के सबसे प्रभावशाली माध्यम बन चुके हैं. इन माध्यमों के द्वारा समाचार, मनोरंजन, शिक्षा, विज्ञापन, वेब सीरीज, शॉर्ट फिल्म, डॉक्यूमेंट्री आदि व्यापक रुप से लोगों तक पहुँचते हैं. इन सभी कार्यक्रमों का आधार प्रभावशाली लेखन होता है. यहाँ हम इसकी कुछ विशेषताओं की चर्चा करेंगे:-
- टेलीविजन और वेब लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता इसकी दृश्यात्मकता है. इसमें केवल शब्दों पर नहीं, बल्कि दृश्य प्रस्तुति पर अधिक ध्यान दिया जाता है. लेखक को ऐसे दृश्य लिखने होते हैं जिन्हें स्क्रीन पर प्रभावशाली ढंग से दिखाया जा सके.
- टेलीविजन और वेब के दर्शक विभिन्न आयु और वर्गों के होते हैं. इसलिए भाषा सरल, स्पष्ट और समझने में आसान होनी चाहिए. कठिन और अत्यधिक साहित्यिक भाषा से बचा जाता है.
- दर्शकों का ध्यान सीमित समय तक रहता है, इसलिए लेखन संक्षिप्त और केंद्रित होना चाहिए. अनावश्यक विवरण, लंबे संवाद और अतिरिक्त घटनाओं से बचा जाता है.
- टेलीविजन और वेब लेखन में संवादों का विशेष महत्त्व होता है. संवाद छोटे, स्वाभाविक, प्रभावशाली और पात्रों के अनुकूल होने चाहिए.
- लेखन ऐसा होना चाहिए जो दर्शकों की रुचि बनाए रखे. हास्य, भावनाएँ, रोमांच और नाटकीयता का संतुलित प्रयोग किया जाता है.
- टेलीविजन और वेब सामग्री में घटनाओं का क्रम तेज और रोचक होना चाहिए ताकि दर्शकों की रुचि बनी रहे.
- इस लेखन में कैमरा, ध्वनि, प्रकाश, संपादन और दृश्य प्रभावों का ध्यान रखा जाता है. लेखक को तकनीकी पक्ष की भी समझ होनी चाहिए.

- विशेष रुप से वेब लेखन में नए विषयों, प्रयोगों और प्रस्तुति की स्वतंत्रता होती है. इसलिए इसमें रचनात्मकता का विशेष महत्त्व है.
- प्रत्येक कार्यक्रम की निश्चित अवधि होती है. इसलिए लेखन को निर्धारित समय के अनुसार व्यवस्थित किया जाता है.

6.5 माध्यम अनुसार अंतर

पटकथा का क्षेत्र अत्यंत व्यापक है. यह दृश्य-श्रव्य माध्यमों का आधार होता है. किसी भी कार्यक्रम, फिल्म या प्रस्तुति को प्रभावशाली बनाने के लिए पहले उसकी पटकथा तैयार की जाती है. अलग-अलग माध्यमों की प्रकृति अलग-अलग होने के कारण उनकी पटकथा भी अलग शैली में लिखी जाती है. जैसे- फिल्म, टेलीविज़न, रेडियो, नाटक, वेब सीरीज़ आदि की प्रकृति व प्रस्तुति शैली अलग-अलग होती है, इसी कारण इनके लेखन और पटकथा में भी अंतर दिखाई देता है. प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेष आवश्यकताओं के अनुसार भी उसकी पटकथा तैयार की जाती है. यहाँ उपर्युक्त विशेषताओं को ध्यान में रखकर इसके कुछ मूलभूत अंतर को प्रस्तुत किया गया है जो इस प्रकार हैं :-

शॉर्ट फिल्म	**फिल्म**	**टेलीविजन**	**वेब सीरीज़**	**रेडियो**	**नाटक**
लघु चलचित्र प्रस्तुति	बड़े पर्दे पर दृश्य प्रस्तुति	छोटे पर्दे पर एपिसोड आधारित प्रस्तुति	डिजिटल प्लेटफार्म पर प्रस्तुति	केवल ध्वनि आधारित	मंच पर जीवंत अभिनय
दृश्यात्मक अभिव्यक्ति	दृश्य, कैमरा, संगीत	संवाद और पारिवारिक दृश्य है	तेज गति और यथार्थवाद	आवाज़ और ध्वनि प्रभाव	अभिनय और संवाद
युवा दर्शक	व्यापक दर्शक	घरेलू दर्शक	युवा एवं डिजिटल दर्शक	श्रोता वर्ग	प्रत्यक्ष दर्शक
केंद्रित या संक्षिप्त	विस्तृत और सिनेमाई	सरल एवं धारावाहिक	आधुनिक और तेज	वर्णनात्मक व संवादप्रथान	मंचीय निर्देशन सहित
५-४० मिनट	२-३ घंटे	छोटे एपिसोड	एपिसोडिक लचीला समय	निश्चित अवधि	मंच प्रस्तुति के अनुसार
डिजिटल या कैमरा	कैमरा	मल्टी-कैमरा तकनीक	डिजिटल तकनीक	ध्वनि तकनीक	प्रकाश और मंच सज्जा
सरल एवं प्रभावशाली संवाद	प्रभावशाली और कलात्मक	सरल और सामान्य	आधुनिक एवं बोलचाल की भाषा	स्पष्ट और श्राव्य	भावपूर्ण और नाटकीय

6.6 सारबिंदु

इस प्रकार हम देख सकते हैं कि उपर्युक्त इकाई–माध्यम और पटकथा दृश्य-श्रव्य संचार का एक महत्त्वपूर्ण अंग है, जिसमें शॉर्ट फिल्म, टेलीविजन, वेब सीरीज़, डिजिटल मंच तथा जनसंचार के अन्य माध्यमों के लिए पटकथा लेखन के विभिन्न पहलुओं का अध्ययन किया गया है. इन माध्यमों के लिए प्रभावशाली पटकथा लेखन करते समय दृश्यात्मकता, सरल भाषा, संक्षिप्तता, रोचकता और तकनीकी प्रस्तुति का ध्यान रखना विशेष आवश्यक होता है. साथ ही यहाँ शॉर्ट फिल्म, टेलीविजन, वेब सीरीज़, रेडियो, नाटक आदि के बीच के अंतर को भी स्पष्ट किया गया है. अंतः माध्यम के अनुसार पटकथा का स्वरुप बदलता है. एक सफल पटकथा लेखक के लिए यह आवश्यक है कि वह विभिन्न माध्यमों की प्रकृति, तकनीकी आवश्यकताओं और दर्शकों की रुचियों को समझकर उसी के अनुरुप प्रभावशाली लेखन किया जाये.

6.7 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न.**

(A) निम्नलिखित प्रश्नों के विस्तृत उत्तर लिखिए.

1. ‘माध्यम और पटकथा’ के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए विभिन्न दृश्य-श्रव्य माध्यमों के अनुसार पटकथा के स्वरुप और शैली का विवेचन कीजिए.
2. शॉर्ट फिल्म क्या है. शॉर्ट फिल्म की पटकथा की विशेषताओं का विस्तारपूर्वक वर्णन कीजिए.
3. शॉर्ट फिल्म की पटकथा कैसे लिखी जाती है. इसके प्रमुख तत्त्वों और लेखन प्रक्रिया पर प्रकाश डालिए.
7. टेलीविजन और वेब लेखन की विशेषताओं का वर्णन करते हुए दोनों माध्यमों के लेखन में अंतर को स्पष्ट कीजिए.

(ख) **टिप्पणी लिखिए.**

1. शॉर्ट फिल्म की संक्षिप्तता
2. दृश्यात्मक लेखन
3. वेब लेखन की रचनात्मक स्वतंत्रता
4. पटकथा में संवादों का महत्त्व
5. माध्यम अनुसार पटकथा शैली
6. टेलीविज़न लेखन की विशेषताएँ

(ग) वस्तुनिष्ठ प्रश्न.

1. शॉर्ट फिल्म की सामान्य अवधि कितनी मानी जाती है?

   (A) 1-2 घंटे (B) 5-40 मिनट

   (C) 3-4 घंटे (D) 50-60 मिनट

   उत्तरः (म) 5-40 मिनट

2. पटकथा का मुख्य उद्देश्य क्या है?

   (A) केवल मनोरंजन (B) दृश्य और संवाद की योजना बनाना

   (C) संगीत तैयार करना (D) अभिनय करना

   उत्तरः (B) दृश्य और संवाद की योजना बनाना

3. रेडियो किस प्रकार का माध्यम है.

(A) दृश्य माध्यम (B) दृश्य-श्रव्य माध्यम

(C) श्रव्य माध्यम (D) डिजिटल माध्यम

उत्तर: (C) श्रव्य माध्यम

4. वेब लेखन की प्रमुख विशेषता क्या है.

(A) धीमी गति (B) रचनात्मक स्वतंत्रता

(C) केवल पारिवारिक विषय (D) मंचीय अभिनय

उत्तर: (B) रचनात्मक स्वतंत्रता

5. शॉर्ट फिल्म में किसका विशेष महत्त्व होता है?

(A) लंबे संवाद (B) अनावश्यक घटनाएँ

(C) संक्षिप्त और प्रभावशाली प्रस्तुति (D) अधिक पात्र

उत्तर: (C) संक्षिप्त और प्रभावशाली प्रस्तुति

6. टेलीविजन लेखन में किस प्रकार की भाषा का प्रयोग किया जाता है.

(A) अत्यंत कठिन (B) साहित्यिक

(C) सरल और स्पष्ट (D) केवल संस्कृतनिष्ठ

उत्तर: (C) सरल और स्पष्ट

7. पटकथा का कौन-सा भाग कहानी को निष्कर्ष तक पहुँचाता है?

(A) आरंभ (B) मध्य

(C) अंत (D) संवाद

उत्तर: (C) अंत

8. नाटक का मुख्य आधार क्या है?

(A) कैमरा (B) मंचीय अभिनय

(C) डिजिटल प्रभाव (D) संपादन

उत्तर: (B) मंचीय अभिनय

9. शॉर्ट फिल्म की पटकथा में सामान्यतः कितने मुख्य विषय होते हैं.

(A) अनेक (B) दो

(C) एक (D) कोई नहीं

उत्तर: (C) एक

10. टेलीविजन और वेब लेखन की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता क्या है?

(A) दृश्यात्मकता (B) लंबा वर्णन

(C) कठिन भाषा (D) धीमी प्रस्तुति

उत्तर: (A) दृश्यात्मकता

6.8 उपयोगी पाठ्यसामग्री

- नीचे कुछ ऐसी पुस्तकों के नाम और कुछ वेबसाइट लिंक है जिनका उपयोगी इकाई की सामग्री तैयार करने के लिए किया गया और आपके अध्ययन के लिए भी उपयोगी हो सकते हैं :-
- पटकथा लेखन एक परिचय : लेखक - मनोहर श्याम जोशी ; प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- आइडिया से पर्दे तक : कैसे सोचता है फिल्म का लेखक; राजकुमार सिंह, सत्यांशु सिंह ; प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- व्यावहारिक निर्देशिका : पटकथा लेखन ; लेखक - असग़र वजाहत ; प्रकाशक - राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
- https://en.wikipedia.org/wiki/Screenplay(book)
- https://henrybondstoryanalyst.wordpress.com/2013/09/28/book-review-story-by-robert-mckee/

इकाई 7 व्यावहारिक अभ्यास और प्रस्तुति

रुपरेखा

7.1 उद्देश्य

7.2 प्रस्तावना

7.3 लघु पटकथा लेखन

7.4 फॉर्मेटिंग की आधारभूत जानकारी

7.5 पटकथा का लिखित प्रस्तुतीकरण

7.6 पटकथा का मौखिक प्रस्तुतीकरण

7.7 सारबिंदु

7.8 पारिभाषिक शब्दावली

7.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

7.10 उपयोगी पाठ्यसामग्री

7.1 उद्देश्य

विद्यार्थी मित्रो! अब आप पटकथा लेखन पाठ्यक्रम के अंतिम चरण में पहुँच गये हैं. इस पाठ्यक्रम का उद्देश्य ही यह है कि इसको सफलतापूर्वक पूर्ण करने के बाद आप स्वयं पटकथा लिखने में सक्षम हो सकें और अपनी व्यावसायिक प्रगति के लिए उसका सकारात्मक उपयोग कर सकें. अतः इस पाठ्यक्रम की अंतिम इकाई पटकथा लेखन के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए सुनियोजित की गयी है. इस इकाई के अध्ययन के पश्चात् आप :-

– लघु पटकथा लिखने की प्रक्रिया को समझ सकेंगे.

– पटकथा की आधारभूत फॉर्मेटिंग का प्रयोग कर सकेंगे.

– पटकथा को मानक प्रारूप में प्रस्तुत कर सकेंगे.

– मौखिक एवं लिखित प्रस्तुतीकरण की तकनीकों को समझ सकेंगे.

– अपनी रचनात्मक अभिव्यक्ति को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करने में सक्षम होंगे.

7.2 प्रस्तावना

विद्यार्थी मित्रो! पटकथा लेखन केवल सैद्धांतिक ज्ञान का विषय नहीं है, बल्कि यह एक व्यावहारिक कला है. किसी विचार को दृश्यात्मक रूप देकर उसे व्यवस्थित पटकथा में परिवर्तित करना तथा उसे प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करना एक पटकथा लेखक के लिए आवश्यक कौशल है. इस इकाई में लघु पटकथा लेखन, पटकथा की आधारभूत फॉर्मेटिंग तथा पटकथा के मौखिक और लिखित प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया का अध्ययन आपको वास्तविक पटकथा लेखक बनने की दिशा में अग्रसर करेगा.

7.3 लघु पटकथा लेखन

विद्यार्थी मित्रो! व्यावहारिक लेखन की शुरुआत हम एक लघु पटकथा के लेखन से करेंगे. आइये! लिखना शुरू करने से पहले इसके विषय में हम कुछ जरुरी बातें जान लें.

7.3.1 लघु पटकथा का अर्थ

लघु पटकथा (Short Script) ऐसी पटकथा होती है जिसकी अवधि सामान्यतः 5 से 20 मिनट तक होती है. इसमें सीमित पात्र, कम दृश्य तथा एक स्पष्ट कथानक होता है. लघु पटकथा किसी एक घटना, विचार, समस्या या अनुभव पर केन्द्रित होती है.

7.3.2 लघु पटकथा की विशेषताएँ

- कथानक संक्षिप्त और स्पष्ट होता है.
- पात्रों की संख्या सीमित होती है.
- घटनाएँ एक केंद्रीय विचार के इर्द-गिर्द विकसित होती हैं.
- संवाद संक्षिप्त और सार्थक होते हैं.
- कथा का आरम्भ, मध्य और अंत स्पष्ट होता है.
- दृश्यात्मकता पर विशेष ध्यान दिया जाता है.

7.3.3 लघु पटकथा लेखन की प्रक्रिया

1. **विषय का चयन** : सबसे पहले किसी उपयुक्त विषय या विचार का चयन किया जाता है. विषय सामाजिक, शैक्षिक, पारिवारिक, प्रेरणात्मक या मनोरंजनात्मक हो सकता है.
2. **कथानक का निर्माण** : विषय के आधार पर घटनाओं का क्रम निर्धारित किया जाता है. कथानक में संघर्ष और समाधान का समावेश आवश्यक होता है.
3. **पात्र निर्धारण** : कहानी के लिए आवश्यक पात्रों का चयन किया जाता है. प्रत्येक पात्र की भूमिका स्पष्ट होनी चाहिए.
4. **दृश्य विभाजन** : पूरी कहानी को विभिन्न दृश्यों में विभाजित किया जाता है. प्रत्येक दृश्य कथा को आगे बढ़ाने का कार्य करता है.
5. **संवाद लेखन** : संवाद पात्रों के व्यक्तित्व और परिस्थितियों के अनुरुप होने चाहित. संवादों में अनावश्यक विस्तार से बचना चाहित.
6. **संशोधन** : प्रारुप तैयार होने के बाद पटकथा का पुनर्पाठ कर आवश्यक सुधार किए जाते हैं.

7.3.4 लघु पटकथा का उदाहरण (संक्षिप्त)

शीर्षक : समय का मूल्य

दृश्य 1 : विद्यालय का प्रांगण दिन

राहुल तेजी से विद्यालय की ओर दौड़ रहा है. प्रार्थना सभा शुरु हो चुकी है.

शिक्षक

(चिंता और क्षोभ के मिले जुले भाव के साथ)

राहुल, तुम फिर देर से आए?

राहुल

(क्षमा भाव से हाथ जोड़कर)

सर, आज के बाद ऐसा नहीं होगा.

दृश्य 2 : राहुल का घर-सुबह

राहुल अलार्म लगाकर समय पर उठता है और तैयारी करता है.

दृश्य 3 : विद्यालय–दिन

राहुल समय पर पहुँचता है.

शिक्षक

(प्रसन्नतापूर्वक)

बहुत अच्छा राहुल, समय का सम्मान सफलता की पहली सीढ़ी है.

समाप्त

लघु पटकथा लेखन के लिए कुछ जरूरी सुझाव (Quick Tips)

- **इसे संक्षिप्त रखें**: कहानी को बहुत जटिल न बनाएँ, एक समय पर एक ही मुख्य भाव या संदेश पर फोकस करें.
- **दृश्य (Visuals) पर जोर दें** : फिल्में दृश्य माध्यम हैं, इसलिए केवल संवादों पर निर्भर न रहें. पात्रों के हाव-भाव और एक्शन से कहानी को आगे बढ़ाएँ.
- **लाइमेक्स (Ending)** : आपकी लघु फिल्म का अंत चौकाने वाला, या एक गहरी सीख देने वाला होना चाहिए.

आइये! अब कुछ अभ्यास करें. नीचे दो छोटी कहानियाँ दी जा रही हैं. उनके आधार पर लघु पटकथा तैयार करें.

1. आख़रि पौधा

एक छोटे से गाँव में दस वर्षीय राहुल रहता था. गाँव में पानी की कमी के कारण अधिकांश पेड़ सूख चुके थे. विद्यालय में पर्यावरण दिवस पर बच्चों को एक-एक पौधा लगाने के लिए कहा गया.

राहुल ने अपने घर के सामने एक नीम का पौधा लगाया. गर्मियों में पानी की भारी कमी हो गई. घर में पीने के लिए भी मुश्किल से पानी बचता था. राहुल की माँ ने कहा कि अब पौधे को पानी देना संभव नहीं है.

राहुल ऱोज अपने हिस्से के पीने के पानी में से थोड़ा-सा पानी बचाकर पौधे को देने लगा. गाँव के लोग उसे देखकर हँसते थे. कुछ महीनों बाद वर्षा आई और पौधा बड़ा होने लगा.

पाँच वर्ष बाद वही नीम का पेड़ पूरे रास्ते को छाया देने लगा. एक दिन गाँव के बुज़ुर्गों ने पंचायत में घोषणा की कि गाँव का सबसे उपयोगी पेड़ राहुल ने लगाया था. राहुल मुस्कुराया और पेड़ के नीचे खेलते बच्चों को देखने लगा.

2. खोया हुआ बटुआ

शहर के एक बस स्टॉप पर कॉलेज छात्रा नेहा को एक बटुआ मिला. बटुए में पाँच हजार रुपये, कुछ कार्ड और एक वृद्ध व्यक्ति की तस्वीर थी.

नेहा आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रही थी. उसकी परीक्षा फीस जमा करने की आखिरी तारीख़ भी निकट थी. कुछ क्षणों के लिए उसके मन में पैसे रखने का विचार आया, लेकिन उसने बटुए में मिले पहचान पत्र के आधार पर मालिक को खोजने का निर्णय लिया.

काफी प्रयास के बाद वह एक वृद्ध व्यक्ति के घर पहुँची. बटुआ देखकर वृद्ध व्यक्ति की आँखों में आँसू आ गए. उन्होंने बताया कि वे अस्पताल से लौटते समय बटुआ खो बैठे थे और उसमें दवाइयों के लिए रखे पैसे थे.

नेहा ने बटुआ लौटा दिया. अगले दिन कॉलेज पहुँचने पर उसे पता चला कि उसकी परीक्षा फीस किसी अज्ञात व्यक्ति ने जमा कर दी है. बाद में उसे ज्ञात हुआ कि वह वृद्ध व्यक्ति स्थानीय ट्रस्ट के सदस्य थे और उन्होंने नेहा की ईमानदारी से प्रभावित होकर उसकी सहायता की थी.

7.4 फॉर्मेटिंग की आधारभूत जानकारी

विद्यार्थी मित्रो! आपने लघु पटकथा लेखन का अभ्यास कर लिया है. इस अभ्यास के बाद आप किसी भी आइडिया या कहानी को दृश्यों में रूपांतरित कर उसे पटकथा के रूप में विकसित कर सकने में समर्थ हैं और फिल्म के लिए पटकथा लिखने के लिए उत्सुक होंगे. तो आइये! पटकथा लिखना शुरु करने से पहले एक बार पुनः उसकी फॉर्मेटिंग की अपनी जानकारी को ताजा कर लें.

7.4.1 फॉर्मेटिंग का अर्थ

पटकथा फॉर्मेटिंग से आशय पटकथा को एक निर्धारित तवं मानक प्रारूप में प्रस्तुत करने से है. फॉर्मेटिंग पटकथा को पढ़ने, समझने और निर्माण प्रक्रिया में उपयोग करने को सरल बनाती है.

7.4.2 फॉर्मेटिंग का महत्व

फॉर्मेटिंग पटकथा को पेशेवर स्वरूप प्रदान करती है, जो निर्देशक, अभिनेता और तकनीकी दल के लिए उपयोगी होती है. इसमें दृश्य, पात्र और संवाद स्पष्ट रूप से अलग दिखाई देते हैं. यह फिल्म निर्माण प्रक्रिया को व्यवस्थित बनाती है.

7.4.3 पटकथा के प्रमुम फॉर्मेटिंग तत्व

पटकथा के फॉर्मेटिंग तत्व वस्तुतः दृश्य के फॉर्मेटिंग तत्व ही हैं, जिनके विषय में आप इकाई 4 में जान ही चुके हैं. लेकिन यहाँ एकबार पुनः इन तत्वों को बताने का उद्देश्य इनका पुनः स्मरण कराना और साथ ही यदि कोई बिंदु पीछे छूट गया हो, तो उसे समाहित कर लेना है.

1. **दृश्य शीर्षक (Scene Heading)**

   यह नीचे दिये गये प्रारूप के अनुसार दृश्य के स्थान और समय को दर्शाता है.

   INT. कक्षा दिन; EXT. पार्क शाम इत्यादि.

2. क्रिया विवरण **(Action Description)**

   दृश्य में घटित होने वाली गतिविधियों का वर्णन. जैसे, कक्षा में विद्यार्थी बैठे हैं.; शिक्षक पाठ पढ़ा रहे हैं. इत्यादि.

3. **पात्र का नाम (Character Name)**

   संवाद से पहले जो वह संवाद बोलने वाला है, उस पात्र का नाम लिखा जाता है. जैसे, विजय; तारा; आवाज़ (ऐसी परिस्थिति में जब परदे पर कोई निश्चित पात्र नहीं बल्कि अनजाने स्रोत से आ रही आवाज ही संवाद कर रही हो.) इत्यादि.

4. संवाद (Dialogue)

पात्र द्वारा बोले जाने वाला संवाद लिखा जाता है. उदहारण "तुम देर से क्यों आये?; अब देर नहीं होगी." इत्यादि.

5. निर्देश (Parenthetical)

संवाद के साथ पात्र द्वारा प्रदर्शित की जाने वाले भाव या क्रिया संबंधी निर्देश को पात्र के नाम और संवाद के बीच कोष्ठक में लिखा जाता है. उदाहरण के लिए (ठंडी साँस भरते हुए); (बर्तन धोते हुए) आदि.

7.4.5 फॉर्मेटिंग के सामान्य नियम

- दृश्य शीर्षक स्पष्ट और पृथक लिखा जाए.
- संवाद पात्र के नाम के नीचे लिखा जाए.
- भाषा सरल और स्पष्ट हो.
- प्रत्येक दृश्य का उद्देश्य स्पष्ट हो.

अनावश्यक विवरण से बचा जाए.

उपर्युक्त निर्देशों के आधार पर पटकथा लेखन का अभ्यास कीजिए. अभ्यास के लिए आप उन कहानियों में से किसी तक को चुन सकते हैं, जो इकाई 4 में दी गयीं हैं. यदि आपके मन में कोई और विचार हो तो आप उसे भी पटकथा के रूप में उतार सकते हैं.

7.5 पटकथा का लिखित प्रस्तुतीकरण

विद्यार्थी मित्रो! आपने पटकथा लिख ली है. अब अवसर है फिल्म बनाने वाले लोगों के सामने उसे प्रस्तुत करने का. आपको यह प्रस्तुति लिखित और मौखिक दोनों रूप में करनी पड़ सकती है. आइये! पहले लिखित प्रस्तुतीकरण के लिए आवश्यक बिंदुओं को समझें :

7.5.1 लिखित प्रस्तुतीकरण का अर्थ

पटकथा को निर्धारित प्रारूप में लिखित रूप से प्रस्तुत करना लिखित प्रस्तुतीकरण कहलाता है.

7.5.2 लिखित प्रस्तुतीकरण के प्रमुख घटक

- शीर्षक पृष्ठ (Title Page), जिसमें निम्नलिखित सूचनाएँ होनी चाहिए :

  पटकथा का शीर्षक (यह आमतौर पर वही होना चाहिए, जिस नाम से आप फिल्म चाहते हैं.)
- लेखक का नाम
- संपर्क विवरण
- लॉगलाइन (Logline)
- संक्षिप्त कथा-सार (Synopsis)
- पूर्ण पटकथा

7.5.3 लिखित प्रस्तुतीकरण के लिए सावधानियाँ

- वर्तनी और भाषा संबंधी त्रुटियों से बचें.
- मानक फॉर्मेटिंग का पालन करें.
- दृश्य और संवाद स्पष्ट रखें.
- पृष्ठ क्रमांक दें.
- अंतिम प्रस्तुति से पूर्व प्रूफरीडिंग करें.

7.6 पटकथा का मौखिक प्रस्तुतीकरण

विद्यार्थी मित्रो! आपकी पटकथा लिखकर पूरी तरह तैयार हो चुकी है, आपने उसे किसी फिल्म कंपनी को भेज भी दिया है. अब वहाँ से बुलावा आया है कि निर्माता, निर्देशक और मुख्य अभिनेता को पटकथा सुनानी है. इसके लिए आपको जो तैयारी करनी है, आइये! उसके विषय में भी कुछ बातें कर ली जाँए.

7.6.1 मौखिक प्रस्तुतीकरण का अर्थ

जब लेखक अपनी पटकथा को श्रोताओं, निर्माता, निर्देशक या मूल्यांकनकर्ताओं के समक्ष बोलकर प्रस्तुत करता है, तो उसे मौखिक प्रस्तुतीकरण कहा जाता है.

7.6.2 मौखिक प्रस्तुतीकरण का महत्व

मौखिक प्रस्तुतीकरण के माध्यम से पटकथा के विचार को प्रभावी ढंग से संप्रेषित किया जा सकता है. आप जब मौखिक रूप से पटकथा प्रस्तुत करते हैं, तो उसमें अपनी आवाज के माध्यम से इच्छित ध्वनि प्रभाव डाल सकते हैं, जिन्हें अन्यथा संप्रेषित कर पाना असंभव है. ये ध्वनि प्रभाव आपकी पटकथा को श्रोताओं के सामने सजीव कर देंगे और उनके कहीं अधिक गहरे प्रभावित हो सकने की संभावना बढ़ जायेगी. आपको तत्काल श्रोताओं की प्रतिक्रिया प्राप्त हो जायेगी, जो आपकी अगली परियोजना के लिए उत्तम फीडबैक साबित होगी. यदि निर्माता निर्देशक को पटकथा थोड़ी भी जमी, तो निर्माण की संभावनाओं पर तत्काल चर्चा हो सकती है और आप अपने काम में एक कदम आगे बढ़ जाएँगे. और अंततः आपकी प्रस्तुति क्षमता विकसित होगी. एक सफल प्रस्तुतिकरण आपके मनोबल को बूस्ट करने का काम करेगा, आपकी नेटवर्किंग बढ़ेगी और कुल मिलकर आप अपने काम में सफलता की और तक सीढ़ी चढ़ जाएँगे.

7.6.3 प्रभावी मौखिक प्रस्तुतीकरण के उपाय

- कहानी का संक्षिप्त परिचय दें.
- मुख्य पात्रों का परिचय कराएँ.
- कथानक का सार प्रस्तुत करें.
- पटकथा की विशेषताओं को स्पष्ट करें.
- आत्मविश्वास और स्पष्ट उच्चारण बनाए रखें.
- समय का ध्यान रखें.
- प्रश्नों के उत्तर देने के लिए तैयार रहें.

7.6.4 पिचिंग (**Pitching**) की अवधारणा

फिल्म और टेलीविजन उद्योग में किसी पटकथा के विचार को संक्षेप में निर्माता या निर्देशक के सामने प्रस्तुत करने की प्रक्रिया को पिचिंग कहा जाता है.

एक प्रभावी पिच में निम्नलिखित तत्व होते हैं

- शीर्षक
- विषय
- मुख्य पात्र
- केंद्रीय संघर्ष
- कहानी का सार
- विशिष्टता या नवीनता

7.7 सारबिंदु

आइये, अंत में हम पूरी इकाई का सार तक बार सबिंदुओं के रूप में समझ लें!

- लघु पटकथा सीमित समय और पात्रों वाली संक्षिप्त पटकथा होती है.
- लघु पटकथा लेखन में विषय चयन, कथानक निर्माण, पात्र निर्धारण, दृश्य विभाजन और संवाद लेखन प्रमुख चरण हैं.
- फॉर्मेटिंग पटकथा को पेशेवर और व्यवस्थित स्वरूप प्रदान करती है.
- दृश्य शीर्षक, क्रिया विवरण, पात्र नाम और संवाद पटकथा फॉर्मेटिंग के मुख्य घटक हैं.
- लिखित प्रस्तुतीकरण में शीर्षक पृष्ठ, लॉगलाइन, कथा-सार और पूर्ण पटकथा का समावेश किया जाता है.
- मौखिक प्रस्तुतीकरण में लेखक अपनी पटकथा को श्रोताओं के समक्ष प्रभावी ढंग से प्रस्तुत करता है.
- पिचिंग पटकथा के विचार को संक्षिप्त और आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है.
- प्रभावी प्रस्तुतीकरण पटकथा की स्वीकृति और सफलता की संभावनाओं को बढ़ाता है.

7.8 पारिभाषिक शब्दावली

लघु पटकथा	कम अवधि की संक्षिप्त पटकथा
फॉर्मेटिंग	पटकथा को मानक प्रारुप में व्यवस्थित करना
दृश्य शीर्षक	दृश्य के स्थान और समय का संकेत
क्रिया विवरण	दृश्य में घटित गतिविधियों का वर्णन
संवाद	पात्रों द्वारा बोले गए कथन

मौखिक प्रस्तुतीकरण	बोलकर पटकथा प्रस्तुत करना
लिखित प्रस्तुतीकरण	लिखित रूप में पटकथा प्रस्तुत करना
पिचिंग	पटकथा विचार का संक्षिप्त व्यावसायिक प्रस्तुतीकरण
लॉगलाइन	कहानी का एक या दो वाक्यों में सार
सिनॉप्सिस	कहानी का संक्षिप्त विवरण

7.9 परीक्षोपयोगी प्रश्नावली

- **बोध प्रश्न.**
- **निम्नांकित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए.**

1. लघु पटकथा की संकल्पना, विशेषताओं तथा लेखन-प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन कीजिए.
2. पटकथा फॉर्मेटिंग का अर्थ, महत्व तथा प्रमुख फॉर्मेटिंग तत्वों की व्याख्या कीजिए.
3. पटकथा के लिखित तवं मौखिक प्रस्तुतीकरण की प्रक्रिया का तुलनात्मक विवेचन कीजित.

- **निम्नलिखित पर टिप्पणियाँ लिखिए.**

1. लघु पटकथा की विशेषताएँ
2. लघु पटकथा लेखन में दृश्य विभाजन का महत्व
3. पटकथा फॉर्मेटिंग का महत्व
4. लिखित प्रस्तुतीकरण के प्रमुम घटक
5. प्रभावी मौखिक प्रस्तुतीकरण के उपाय
6. पिचिंग (Pitching) की अवधारणा एवं उपयोगिता

निर्देशानुसार निम्नलिखित के उत्तर लिखिए :

(क) सही विकल्प का चयन करते हुए उत्तर दें.

1. पटकथा की सामान्य अवधि कितनी होती है?
   (अ) 1-2 मिनट (ब) 5-20 मिनट
   (क) 30-60 मिनट (ड) 90 मिनट
2. निम्न में से कौन-सा लघु पटकथा की विशेषता नहीं है?
   (अ) सीमित पात्र (ब) स्पष्ट कथानक
   (क) अनेक उपकथाएँ (ड) संक्षिप्त संवाद
3. पटकथा लेखन की प्रक्रिया में विषय चयन के बाद कौन-सा चरण आता है?
   (अ) संशोधन (ब) कथानक निर्माण
   (क) संवाद लेखन (ड) प्रस्तुतीकरण

(ख) रिक्त स्थानों की पूर्ति करें.

1. पटकथा को मानक प्रारूप में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को ——— कहते हैं.
2. कहानी का एक या दो वाक्यों में सार ——— कहलाता है.

3. पटकथा में पात्र के भाव या क्रिया संबंधी निर्देश को ——— कहते हैं.

(ग) **सत्य/असत्य.**

1. मौखिक प्रस्तुतीकरण में लेखक अपनी पटकथा को बोलकर प्रस्तुत करता है.
2. पिचिंग में केवल कहानी का अंत बताया जाता है.
3. लिखित प्रस्तुतिकरण में भाषा और वर्तनी का ध्यान रखना अनिवार्य होता है.

(घ) **मिलान कीजिए.**

निम्नलिखित का सही मिलान कीजिए :–

स्तम्भ क	**स्तम्भ म**
(i) दृश्य शीर्षक	(च) कहानी का संक्षिप्त विवरण
(ii) सिनॉप्सिस	(म) बोलकर पटकथा प्रस्तुत करना
(iii) संवाद	(ब) स्थान और समय का संकेत
(iv) मौखिक प्रस्तुतीकरण	(ग) पात्र द्वारा बोले गत कथन

7.10 उपयोगी पाठ्यसामग्री

1. ‘आइडिया से परदे तक : कैसे सोचता है फ़िल्म का लेखक?’, राजकुमार सिंह और सत्यांशु सिंह, राजकमल प्रकाशन
2. ‘पटकथा लेखन : एक परिचय’, मनोहर श्याम जोशी, राजकमल प्रकाशन
3. ‘पटकथा लेखन : व्यावहारिक निर्देशिका’, असग़र वजाहत, राजकमल प्रकाशन
4. https://www.futurelearn.com/courses/screenwriting
5. https://nofilmschool.com/how-to-write-a-screenplay

Dr. Babasaheb Ambedkar Open University
(Established by Government of Gujarat)
"Jyotirmay" Parisar,
Dr. BAOU Marg, Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi Ahmedabad - 382481
Email : hindi@baou.edu.in | Website : www.baou.edu.in

बी. ए. (ऑनर्स)

स्किल एन्हासमेंट कोर्स

HNDSEC-201

पटकथा लेखन

कृपया यह प्रतिपुष्टि (Feedback) फॉर्म भरकर उपर्युक्त पते पर 'हिंदी विभाग, स्कूल ऑफ ह्यूमैनिटीज़ एंड सोशल साइंसेज़' के नाम अवश्य भेज दें. आपकी अमूल्य राय आपको दी जाने वाली स्वाध्याय सामग्री की गुणवत्ता बढ़ाने में सहायक होगी. यदि आप चाहें तो अपनी पहचान गुप्त रख सकते हैं, यानी नीचे 'नाम' और 'एनरोलमेंट नंबर' देना आवश्यक नहीं है. अन्य सभी कॉलम अवश्य भरें.

नाम : ______________________ **एनरोलमेंट नंबर :** ______________

लिंग : स्त्री ☐ **पुरुष** ☐ **ट्रांसजेंडर** ☐ **आयु वर्ग : 18-30** ☐ **31-40** ☐ **41-50** ☐ **50 से ऊपर** ☐

नागरिकता : प्रदेश ______________________ **देश** ______________

प्रवेश वर्ष : ______________ **आजीविका के लिए कार्यरत : हाँ** ☐ **नहीं** ☐

कृपया अपनी राय नीचे दिए गए बिंदुओं के सामने सही खाने में सही (✓) का निशान लगाकर दें. {अ–अच्छा, सा–सामान्य, ख–खराब}

	इकाई 1			इकाई 2			इकाई 3			इकाई 4		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है.												
भाषा सरल है.												
विषय अच्छी तरह समझाती है.												
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.												
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.												
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.												
परीक्षोपयोगी प्रश्न पर्याप्त हैं.												
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.												

	इकाई 5			इकाई 6			इकाई 7		
	अ	सा	ख	अ	सा	ख	अ	सा	ख
अध्ययन सामग्री पर्याप्त है.									
भाषा सरल है.									
विषय अच्छी तरह समझाती है.									
आपके ज्ञान और कौशल को बढ़ाती है.									
इकाई के अंत में सारबिंदु अध्ययन दुहराने के लिए उपयोगी सिद्ध हुए हैं.									
स्वमूल्यांकन के लिए पर्याप्त प्रश्नों का समावेश है.									
परीक्षोपयोगी प्रश्न पर्याप्त हैं.									
अध्ययन सामग्री उपयोगी सिद्ध हुई है.									

आपकी सलाह या सूचना (यदि कोई हो तो) ______________________________

યુનિવર્સિટી ગીત

સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ
સ્વાધ્યાયઃ પરમં તપઃ

શિક્ષણ, સંસ્કૃતિ, સદ્ભાવ, દિવ્યબોધનું ધામ
ડૉ. બાબાસાહેબ આંબેડકર ઓપન યુનિવર્સિટી નામ;
સૌને સૌની પાંખ મળે, ને સૌને સૌનું આભ,
દશે દિશામાં સ્મિત વહે હો દશે દિશે શુભ-લાભ.

અભણ રહી અજ્ઞાનના શાને, અંધકારને પીવો ?
કહે બુદ્ધ આંબેડકર કહે, તું થા તારો દીવો;
શારદીય અજવાળા પહોંચ્યાં ગુર્જર ગામે ગામ
ધ્રુવ તારકની જેમ ઝળહળે એકલવ્યની શાન.

સરસ્વતીના મયૂર તમારે ફળિયે આવી ગહેકે
અંધકારને હડસેલીને ઉજાસના ફૂલ મહેંકે;
બંધન નહીં કો સ્થાન સમયના જવું ન ઘરથી દૂર
ઘર આવી મા હરે શારદા દૈન્ય તિમિરના પૂર.

સંસ્કારોની સુગંધ મહેંકે, મન મંદિરને ધામે
સુખની ટપાલ પહોંચે સૌને પોતાને સરનામે;
સમાજ કેરે દરિયે હાંકી શિક્ષણ કેરું વહાણ,
આવો કરીયે આપણ સૌ
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
દિવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ...
ભવ્ય રાષ્ટ્ર નિર્માણ

•

DR. BABASAHEB AMBEDKAR OPEN UNIVERSITY
(Established by Government of Gujarat)
'Jyotirmay' Parisar,
Sarkhej-Gandhinagar Highway, Chharodi, Ahmedabad-382 481
Website : www.baou.edu.in | Email : office.scs@baou.edu.in

978-93-5598-486-9